वल्लभ संग्रह

प्रथम भाग

जिसको

जयपुर राज्यान्तर्गत डुंडलोद ठाकुर साहब

हरनाथ सिंहजीके पूर्व व राजकुमार खंडेला

छोटा पाना, के वर्तमान अध्यापक

हरिवल्लभ शर्म्मा

ने

पं० व्रजवल्लभ मिश्र के

"वल्लभ प्रेस," अलीगढ़ में

छपवाकर प्रकाशित किया

प्रथमावृत्ति १००० } दिसम्बर, सन् १९१३ ईस्वी { मूल्य ।।)

…सोइ ।
…सरज्या सब कोइ ॥

भूमिका

सर्व सज्जन महाशयों से विनय पूर्वक निवेदन है कि मुझको
स्था से ही मनोरंजक कविताओं के पढ़ने तथा सुनने की रुचि होत
अतएव उसही समय से जो कोई चित्ताकर्षक कविता पढ़ने तथा
करने में आई मैं उसही को संग्रह करता रहा, यहां तक कि महान् स
गया और यह इच्छा उत्पन्न हुई कि इस संग्रह को प्रकाशित कर
साधारण को भी लाभ पहुंचाया जावै।

इस संग्रह में जिन २ महत्पुरुषों के उपदेश पूर्ण वाक्य लिखे
उनको मेरा हार्दिक धन्यवाद है।

यदि पाठकगण इसका आद्योपान्त पठन कर लाभ उठावैंग
अपने तईं सफल मनोरथ समझूंगा और इसके अतिरिक्त मेरे पास जो
और इंग्रेजी का संग्रह मौजूद है उसके प्रकाशित करादेने का उत्साहित
उद्योग करूंगा। यदि कोई भूल रहगई हो तो क्षमा का प्रार्थी हूं।

जयपुर, ता० २५ दिसंबर १९१३

सर्व सज्जनोंका कृपाभि
हरि वल्लभ श

वल्लभ संग्रह

मिलने के पतेः—

१— श्रीमान् पं० रामप्रतापजी शर्मा, मास्टर, महाराजा कालेज, जयपु

२— श्रीयुत पं० रामप्रतापजी हरिवल्लभजी शर्म्मा, पुरानी बस्त
बहरा का रास्ता, जयपुर शहर, राजपूताना।

जोधपुर और अजमेर के पुस्तक विक्रेतागण।

ओ३म्

ब्रह्म संग्रह।

ईश्वर लक्षण

कवित्त।

वैष्णव कहत विष्णु बसत वैकुंठ धाम, शैव कहत शिवजू कैलाश सुख भरे हैं
कहैं राधावल्लभी विहारी वृन्दावनही में, रामानन्दी कहत राम अवध से न टरे हैं ॥
एतो सब देव एक देसिक अनन्य भनै, हम तुम सब आप ठौरन ज्यों धरे हैं।
चेतन अखण्ड जासे कोटिन ब्रह्मण्ड उड़ें, ऐसो परब्रह्म कहां पुरीन में पड़े हैं ॥

सवैया—मूरख को प्रतिमा परमेश्वर बालक रीति प्रतीति भई है।
मध्यम को अवतार कथा वृत तीरथ राह सुराह लई है ॥
उत्तम ज्योतिस्वरूप विचारहु आतम ध्यानमें बुद्धि दई है।
पूरण ज्ञान अनन्य भनै सरवज्ञनके शिव शक्ति मई है ॥

कवित्त।

बीजहू में वृक्ष जैसे तंतहू में पट जैसे मृत्तिका में घट जैसे काया में रमाया है।
फूलहूमें वासजैसे रविमें प्रकाश जैसे काठहूमें आग ज्यों अकाश बीच छायाहै ॥
पानीहूमें बल जैसे दीपमें प्रकाश जैसे चकमक आग जैसे पयमें घृत पाया है।
आपही को जाप जामें पुन्यहू न पाप अरु आपहीमें आप जिन खोजा तिन पाया है ॥

शेर—वह ज़ाहिर में हरचन्द ज़ाहिर नहीं, पर ज़ाहिर उससे कोई बाहिर नहीं।

दोहा—बात बहत रवि तपत घन बरसत तरु फल देत।
इच्छा तें जेहि ईश की करहु ताहि तें हेत ॥

दोहा—उठै न बैठै एक रस, जागै सोवै नाहिं।
मरै न जीवै जगत गुर, रहै सदा सब ठाहिं ॥
ना वह जामें ना मरै, होय गर्भ नहिं वास।
ऊंधे मुख नहीं, नर्ककुंड दस मास ॥
सब लालों सिर लाल है, सब खूबों सिर खूब।
सब पाकों सिर पाक है, दादू का महबूब ॥
(दादू) जिन मुझको पैदा किया, मेरा साहिब सोइ।
मैं बंदा उस रामका, जिन सिरज्या सब कोइ ॥

दादू देखि दयालु को, सम्मुख सांई सार।
जिधरहि देखो नैन भरि, तिधरहि सिरजनहार॥
सूरज नहिं तहँ सूरज देखै, चंद नहीं तहँ चंदा।
तारे नहिं तहँ झिलमिल देख्या, दादू अति आनन्दा॥
बादल नहिं तहँ बरखत देख्या, सब्द नहीं गरजंदा।
बीज नहीं तहँ चमकत देख्या, दादू परमानन्दा॥
आतम के अस्थान हैं, ज्ञान ध्यान विश्वास।
सहज शील संतोष सत, भाव भगति निधि पास॥
हस्त पांव नहिं सीस मुख, श्रवण नेत्र कहु कैस।
दादू सब देखै सुणैं, कहै गहै है ऐस॥
चार पताका ब्रह्म के, सत आनन्द अनन्त।
चौथा ज्ञान स्वरूप हैं, कहैं वेद अरु सन्त॥
वह उपजै विनसे नहीं, अज अविनासी सोय।
बिन इच्छा थिरही रहै, चरणदास नित जोय॥
वाकूं जाग्रत है नहीं, वाकूं स्वप्न न कोय।
सोवन सुपना है नहीं, जाग्रत कैसे होय॥
जा धन को ठग ना लगे, धारि सकै नहि लूट।
चोर चुराय सकै नहीं, गांठ गिरै नहिं खूट॥
निरंजन निराकार है, ओंकार आकार।
दादू सब रंग रूप सब, सब विधि सब विस्तार॥
ज्यूं दर्पन मुख देखिये, पानी में प्रतिबिंब।
ऐसे आतम राम है, दादू सबही संग॥
स्वर्ग भवन पाताल मधि, आदि अंत सब सिष्ट।
सिरजि सबन को देत है, सोइ हमारा इष्ट॥
हां कहूं तो है नहीं, नांही कह्या न जाय।
हां अरु ना के बीच में, आशिक रह्या समाय॥

कवित्त।

ईशनके ईश महाराजनके महाराज देवनके देव प्राणहूके प्राण हो।
कालहूके काल महाभूतनके भूत कर्महूके कर्म निदानहूके निदान हो॥

निगमको अगम सुगम तुलसीहूसे को येते मान शील सिंधु करुणा निधान हो।
महिमा अपार काहू बोल को न पारावार बड़ी साहबीमें नाथ बड़े सावधान हो॥

शान्तरस, मंगलाचरण।

अखंडं चिदानन्द देवाधिदेवं, मुनिन्द्रादि रुद्रादि इन्द्रादि सेवम्।
मुनिन्द्रादि इन्द्रादि चन्द्रादि मित्रं, नमस्ते नमस्ते २ पवित्रम्॥
धरात्वं जलाग्नी मरुत्वं नभस्त्वं, घटस्त्वं पटस्त्वं अणुत्वं महत्त्वम्।
मनस्त्वं वचस्त्वं दपस्त्वं श्रुतस्त्वं, नमस्ते नमस्ते २ समस्तत्वम्॥
अडोलं अतोलं अमोलं अमानं, अदेहं अछेहं अनेहं निदानम्।
अजायं अथायं अपायं अतायं, नमस्ते नमस्ते २ अमायम्॥
न ग्राम्यं न धाम्यं न शीतं न ऊष्णं, न रक्तं न पीतं न श्वेतं न कृष्णम्।
न शेषं अशेषं न रेशं न रूपं, नमस्ते नमस्ते २ अनूपम्॥
न छाया न माया न देशो न कालो, न जाग्रन्न स्वप्नो न वृद्धो न बालो।
न ह्रस्वं न दीर्घं न रम्यं अरम्यं, नमस्ते नमस्ते २ अगम्यम्॥
न बद्धं न मुक्तं न मौनं न वक्तं, धूम्रं न तेजो न यामी न नक्तम्।
न युक्तं अयुक्तं न रक्तं विरक्तं, नमस्ते नमस्ते २ अशक्तम्॥
न रुष्टं न मुष्टं न इष्टं अनिष्टं, न ज्येष्टं कनिष्टं न मिष्टं अमिष्टम्।
न अग्रं न पृष्टं न तुल्यं न गृष्टं, नमस्ते नमस्ते २ अधिष्टम्॥
न वक्रं न घ्राणं न कर्णं न अक्षं, न हस्तं न पादं न शीशं न लक्षम्।
कथं सुंदरं सुंदरं नाम धेयं, नमस्ते नमस्ते २ अमेयम्॥

सवैया—हाथी न साथी न घोरे न चेरे न गांव न ठांव को नाम विलै है।
तात न मात न पुत्र न मित्र न वित्त न अंग के संग रहै है॥
केशव काम को नाम बिसारत और निकाम न काम न ऐ है।
चेत रे चेत अजौं चित अंतर अंतक लोक अकेलो हि जैहै॥

दोहा—हमरे देखत जग गया, जग देखत हम जांय।
आप खड़े हैं राह में, औरों को पछितांय॥
दादू देही पावनी, हंस बटाऊ मांहिं।
ना जानै कब जायगा, मोय भरोसो नाहिं॥
तुलसी विलंब न कीजिये, भजलीजे रघुवीर।
तन तर्कस तैं जात हैं, स्वास सार के तीर॥

कवित्त

धूल जैसो धन जाके सूल सो संसार सुख, भूल जैसो भाग देखे अंत जैसी यारी है।
पाप जैसी प्रभुताई श्राप जैसो सनमान, बड़ाई हू बीछनीसी नागिनी सी नारी है॥
अग्नि जैसो इन्द्रलोक विघ्न जैसो विधि लोक कीरती कलंक जैसी सिद्धसी ठगारीहै।
वासना न कोई वाकी ऐसी मति सदा जाकी, सुंदर कहत ताहि वंदना हमारी है॥

दोहा—रन वन व्याधि विपत्ति में, वृथा डरे जनि कोय।
जो रक्षक जननी जठर, सो हरि गया न सोय॥

कवित्त

काया है न तेरी ये माया है न तेरी वित्त जाया है न तेरी झूंठे धंधे जे दिखायरे। जाति है न तेरी कोउ पांति है न तेरी बहु भांति है न तेरी जामें भूल मत जायरे॥ कहैं दयानिधि मेरी २ सोई बेड़ी पड़ी ताहि काटि डार बैठ सत्संग मांयरे। मान ले रे मेरी कही मेरी सूं मेरे मन मेरी २ कहै सो तेरी कछु नायरे॥ १॥ भानजी भतैज भैया भाभी नानी नाना सांई मामा मौसी मौसा न भरोसो पित माऊ को। सारी सरिहज साढ़ सारो न सुसर सास्रू फूफी अरु फूफा न बहनि बहनाऊको॥ दासी दास परौसी परौसिन मिलापी मित्र दादी दादा चाची चाचा ताई को न ताऊ को। कहत गुपाल बेटी बेटा काकी काका यह कुटुम्ब कबीलौ झूंठो है कोऊ नहिं काऊको॥

दोहा—इन्द्र भये धनपति भये, भये शत्रु के साल।
कल्प जिये तोऊ गये, अन्त काल के गाल॥
ब्रह्म अखंडानन्द पद, सुमिरत क्यों न निसंक।
जाके छिन संसर्ग तैं, लगत लोकपति रंक॥

कवित्त। (प्रास्ताविक शिक्षा)॥

साहिबीकों पायकें निगाह भी तो राखो सही काहूकी न आहि परिजाय डरिबो करो। राखी काहिं रहै रे जहांकी तहां जैहै ज़र जोड़ २ केतऊ करोड़ धरिबो करो॥ दाया राख चित्त में पराया उपकार कर पाय नर काया ना अदाया भरिबो करो। जोपै तोहि कीनों भागमान भगवान तो गरीब गुन-मानन पै ग़ौर करिबो करो॥

कवित्त

धूंआं की धोर जैसे मकड़ी को जाल जैसे घास को फांसा है। थोड़े से जीने को इतनो कहा गुमान तेरे तेरो जीनो एक रत्ती अरु मासो है॥

खावैंगो पीवैंगो लेवैंगो देवैंगो न, रहैगो नेरे छप्पर फूस अरु धयारो है। कहत रुस्तम उस्ताद मन चित्त में विचार यार पानी पतासो जैसे खलक को तमासो है॥ आवत गलान ज्यों बखान अब ज्यादा करूं मादा यह मल मूत सज्जा की सलीती है। कहै पद्माकर त्यों जरा जब भीजी आन छीजी दिन रैन जैसे रेणुका की भीती है॥ सीतापति राम के सनेहवस बीती जो पै तो २ दिव्य देह जम जालना तें जीती है। रीती राम नाम तें रही न यह काहू काम खारिज खराब हाल खाल की खलीती है॥

राग कीन्हे रंग कीन्हे तरुणी प्रसंग कीन्हे हाथ कीन्हे चीकने सुगन्ध लाय चोली में। देह रचि गेह रचि सुकृति सनेह रचि बासर व्यतीत कीन्हे नाहक ठठोली में॥ वेणी कवि कहैं कछु कहत न बने दसा दिना चार स्वांग से दिखाय चले होली में। बोलत न डोलत न खोलत पलक हाय काठ से पड़े हैं आज काठ की खटोली में॥

घोड़ा फील पालकी खवास खिदमत गार जाके रण में प्रवीण औ जितैया बड़ी रारके। हीरा अरु जवाहर तोसाखाने में धरे ही रहे ऐसे छोड़ चले जैसे बचुका बेगार के॥ वेणी कवि कहै पर स्वारथ न कीन्हे मूढ़ कीन्हे काज केवल सुत घरही पितु नारके। काल सर सांधे मत मायामें आंधे कछु गांठ न बांधे जब कांधे चले चारके॥

सवैया—कोई रह्यो रुच भांग तमाखू में, कोई रह्यो रुच बास सुगन्धन।
कोई रह्यो रुच वाक विलास में, कोई रह्यो रुच मान गुमानन।
कोई रह्यो रुच कामिन अंग में, कोई रह्यो रुच ख्याल के बन्धन।
दास हरी हरिको जो बिसारि कै, लाग रहे नर गोरखधन्धन।
कै दिन जात है पुत्र खिलावत, कै दिन जात है वात बनाये।
कै दिन जात है खात औ सोवत, कै दिन जात है क्रोध बढ़ाये।
कै दिन जात है काम अनीति में, कै दिन जात है द्रोह पराये।
यों हरि दास कहै नर देह सों, रत्न मिले पर देत गमाये॥
जा डर मारुत मंद चलै अरु, जा डर पावक अन्न पचावै।
जा डर सागर सेत न छांड़त, जा डर सेस भूभार उठावै।
जा डर काल डरै अरु देवता, जा डर सूरज चन्द्र भ्रमावै।
एते सबै डरपै हरि दास पै, जीव अज्ञानी डरै न डरावै।

चोकरी बीते इकोतर ही तव इन्द्र की आयु सो होत पुरारी ।
इन्द्र चतुर्दश जो चलि जात तो ब्रह्महु को दिन एक भयारी ।
ऐसिन को डर काल को लागत तू हरि दास न सोवै सुखारी ।
तुच्छसी आयु सो पाय चढ्यो मद जीव नहीं डर पावै अनारी ॥

घनाक्षरी

लोभतें लवार अरु क्रोध तें अचेत चित, कामही तें कायर कुबुधि तें कंगाल है ।
तृष्णा तें तपत अरु आशा तें अधीन होत, मोह तें कठिन दुख ममताके वाल है ।
द्रोह तैं मरत अरु वासना तें जनम लेत, अहं तें वंधात अरु मान तें विहाल है ।
एते गुण गहे यह जीव कहै हरिदास, एते गुण छांडि दिये ब्रह्म ही विशाल है ।

कवित्त

धन धाम राज सुख सखा साथ जै हैं नहीं, माटी मिलि जायगी नकाया कहो किनकी । कोऊ इतरै है नहिं मेदिनी को स्वामी वनि, काल सबै खेहै यह वाणी है मुनिन की ॥ यौवन सिरै है दन्त पंक्ती गिरि जैहै केस सेत तेरे ह्वै हैं है जवानी एक छिनकी । भूली क्यों दिवानी राम करति नदानी कहुँ, का पै ववरानी जिन्दगानी चार दिनकी ॥

दोहा–संतन के यह वणिज है, निसि दिन ज्ञान विचार ।
ग्राहक आवै लेन को, ताही के दातार ॥
सुन्दर मानुष देह की, महिमा कहिये काहि ।
जाको वंछै देवता, तू क्यौं खोवै ताहि ॥
मेरे मन्दिर माल धन, मेरो सकल कुटम्ब ।
सुन्दर ज्यों को त्यों रह्यौ, सप्त लोक आडंब ॥
सुन्दर देह मलीन अति, बुरी वस्तु को भौन ।
हाड मांस को कोथरा, भली कहै तिहिं कौन ॥

सवैया

जो अति दुर्लभ देवनको तन मानुष सो निज पुण्य न पावै ।
इन्द्रिनके सुखमें लय होय जु ईश्वर ओर न नेक लखावै ॥
चन्द्रकला धिक है तिहि जीवन नारि सुतादिक में मन लावै ।
है मतिहीन मवीन वन्यो वह कांचके लालच लाल गमावै ॥
आस तो काहूकी नाहिं मिटी जगमें भए रावण से वड़ जोधा ।
सांवत सूर सुयोधन से वल सैं नल से रत वाद विरोधा ॥

केते भए नहीं जाय बखानत झूझ मुए सबही कर क्रोधा।
ख्याल मिटे परताप कहै हरि नाम जपे रु विचारत बोधा॥

घनाक्षरी।

ध्यानकी कमान बुद्धिमान तरकश तीर, ज्ञानके तुरंग चढ़ि ब्रह्म लोक धायो है।
धीरज लगाम क्षमा पाखरी ललाम जीन, संयमके पाइरे में पग ठहरायो है॥
कवच विचार प्रेम चाबुक विवेक हाथ, टोप सन्तोष ढाल सीलपर लगायो है।
कहै हरिदास हरिनाम को खड्ग लिये, ऐसो असवार देख कालहू डरायो है॥

दोहा—कामण खोड़ो कीलसुत, पैरहात परिवार।
रज्जब सतसंग ना बनें, मोह के जड़े किंवार॥

सवैया—कोई समै बुधमान से दीखत कोई समै जैसे बावरो डोले।
कोई समै चरचा न चलावत कोई समै प्रतिशब्दहि बोलै॥
कोई समै दस पांच में वैठत कोई समै रह जात अकेलै।
दास हरी कोउ ओरै न पावत ज्ञानी अनेक कला कर खेलै॥

दोहा—सुन्दर पंजर हाड़को, चाम लपेट्यौ ताहि।
तामें वैठ्यौ फूलि के, मो सयान को आहि॥
सुन्दर न्हावै वहुतही, वहुत करै आचार।
देह मांहि देखै नहीं, भर्‌यो नर्क भंडार॥
जो जन्मत सो मरत हैं, या में नहिं संदेह।
चहै आज चहै सौ वरस, पीछे फिर क्या नेह॥

चौपाई—क्यों तू व्यर्थ रोवत है प्रानी, सब अनित्य तनकी गति जानी।
कहुँ जगमें को जनमि न मरई, को ताके हित संसै करई।
जल बुदबुद जस होइ विलाहीं, सोइ शरीर गति लख मन मांहीं।
जगमें जन्मत मरत अनेका, देखत हू नर गह न विवेका।
जीव फिरत मायाके प्रेरे, कर्म सुभाव काल गुण घेरे।
जिहि दिन गर्भ पर्‌यो यह प्रानी, मौतहू ता दिन तें लपटानी।
तामें प्रबल दैव गति जानी, मोहत जाहि निरखि मुनि ज्ञानी।
गर्भ मांह कोउ बालकपनमें, कोउ जवान कोउ वृद्धापनमें।
होत कालवश निश्चय एही, बचे न जगत जनमि कोउ देही।
क्षिति जल पाँवक गगन समीरा, पंच रचित यह अधम शरीरा।

सो शरीर तब आगे सोवा, जीव नित्य काहे लगि रोवा।
हाड़ मांस मज्जा सृक चामा, मल अरु मूत्र आदि कर धामा।
निकसे जस शरीर मल जानहु, ता सम कन्या सुत पहिचानहु।
जो उपाय कीने कोउ वचते, ज्ञानवान नर कहु कब चुकते
सुत कुटुम्ब नारी अरु वित्ता, होउ न अति तेही बीच असक्ता।
दोहा-प्रथमे जगत असक्ति तजि, दारा सुत गृह वित्त।
विषवत विषय बिसारि जग, राग रु द्वेष अनित्त।

द्रव्य निंदा।

तज कल्दारं तज कल्दारं२ तज मूढ़ मते। जब कल्दार होय या नर के, ज्ञान विराग तभी सब कर के। काम क्रोध अरु लोभ मोह का पूरा बढ़ता है परिवारं। तज ॥ १ ॥ जब कल्दार होय मन माना, सब से बड़ा आपको जाना। बात करें टेढ़ी भोंहैं कर, भूल जाय प्रिय बंधू यारं। तज ॥ २ ॥ जब कल्दार रचै हैं माया, आंखों बीच अँधेरा छाया। देखत नांहि गरीब दीन कों निर्दय हो देता ललकारं। तज ॥ ३ ॥ जब कल्दार अचल हो पैठै सब तैं बढ़ कर ऊंचा बैठै। हाथी पर चढ़ गर्दन ऐंठै, भूल जाय सब सार असारं। तज ॥ ४ ॥ जब कल्दार मचावै रोरा, आकिल भी हो जावै बोरा असमंजस बोलै सबही को, खुर्द कलां का त्याग विचारं। तज ॥ ५ ॥ जब कल्दार बढ़ावै शेखी, समता फिर किस के किन देखी। इज्जत बढ़ने की आशा में, भार उठाता अपरं पारं। तज ॥ ६ ॥ जब कल्दार बढ़ावै धंधा निश्चय कर देता है अंधा। शुभ कर्मों की बात न सूझै, पाप कर्म करने को त्यारं। तज ॥ ७ ॥ जब कल्दार बनावै गूंगा. बन जावै नर पूरा भूंगा। पर उपकार कराने में फिर, करता है नहिं तनक उचारं। तज ॥ ८ ॥ जब कल्दार बढ़ावै तृष्णा, छोड़ै सब से रामा कृष्णा। मांगि न उठै कोउ कुछ मुझ से, यह सोचत हैं बारम् २। तज ॥ ९ ॥ जब कल्दार घमंड बढ़ावै, नाहक भृकुटी नाक चढ़ावै। तुनक मिजाज होय पल २ में, लाल २ मुख करत अंगारं। तज ॥ १० ॥ जब कल्दार बढ़ै इक संगा, बिन मतलब करवावै दंगा। कहै न फिर उस को कोइ चंगा, ईश्वर को जब देय विसारम्। तज ॥ ११ ॥ बाढ़ै जब कल्दार घनेरा, फिर नहिं सूझत सांझ सवेरा। धन की तृष्णा से दुख पावै, फिरै विदेश छोड़ घरवारम्। तज ॥ १२ ॥ जब

जब कल्दार बनावैं कामी, होजावैं नर रौरव गामी। खूबसूरत चमड़े को परखें फिर पूरा हो जाय चमारम्। तज ॥ १३ ॥ कल्दारों से भरे खजाना, निश्चय नर होजाय दिवाना। मुर्शिद पीर गुरू नहिं जाना, विषय वासना में सरसारम्। तज ॥ १४ ॥ जब कल्दार बनावैं क्रोधी, नास होय मन की सब सोधी। मात पिता भगनी को मारैं, जस कीरत कर देवै ख्वारम्। तज ॥ १५ ॥ जब कल्दार किरोड़ों आवें मुक्ती मारग को भुलवावें खुश होवें कहलाकर सबसे, आप युधिष्ठिर का अवतारम्। तज ॥ १६ ॥ अंधा होय कल्दार इकट्ठा, बना देय उल्लू का पट्ठा, बदन बनावै हट्टाकट्टा। भुनगा सा देखै फिर सब को दुखिया की नहिं सुनत पुकारम्। तज ॥ १७ ॥ तज कल्दारं तज कल्दारं २ तज मूढ़ मते ॥

दोहा—पान झरन्ते इमि कहैं, सुनु तरवर वन राय।
अबके बिछुरे कब मिलें, दूर परेंगे जाय ॥

दोहा—बार बार यह तन नहीं, नर नारायण देह।
दादू बहुरि न पाइये, जनम अमोलक येह ॥
फूटी काया जाजरी, नव ठाहर काणी।
तामें दादू क्यों रहै, जीव सरीखा पाणी ॥
बाव भरी इस खाल का, झूँठा गर्व गुमान।
दादू विनसे देखतां, तिसका क्या अभिमान ॥
काल गिरासे जीव को, पल पल सांसे सांस।
पग २ मांहे दिन घड़ी, दादू लखै न तास ॥
पग पलक की सुध नहीं, सांस सबद क्या होय।
कर मुख माहे मेलतां, दादू लखै न कोय ॥
दादू काया कारवीं, कदे न चालै संग।
कोटि बरस जे जीवणा, तऊ होइला भंग ॥
कहतां सुणतां देखतां, लेतां देतां प्राण।
दादू सो कत हूं गया, माटी धरी मसाण ॥
दादू जियरा जायगा, यह तन मांटी होइ।
जे उपज्या सो विनसि है, अमर नहीं कलि कोइ ॥
सब जग छेली काल कसाई करद लिए कंठ काटै।

पंच तत्वकी पंच पंखरी खंड २ करि बांटे ॥
दादू प्राण पयान करि गया, माटि धरी मसाण।
जालण हारे देखकर, चेतैं नांहि अजाण ॥
केते मरि माटि भए, बहुत बड़े बलवन्त।
दादू केते व्है गये, दाना देव अनन्त ॥
धरती करते एक डग, दरिया करते फाल।
हाको परबत फाड़ते, सो भी खाये काल ॥
पवना पानी धरती अंबर, बिनसे रवि ससि तारा।
पंच तत्व सब माया बिनसे, मानुष कहा बिचारा ॥
राव रंक सब मरहिंगे, जीवै नाहीं कोइ।
सोई कहिये जीवता, जे मरि जीवा होइ ॥
सुपने सब कुछ देखिये, जागे तो कछु नाहिं।
ऐसा यह संसार है, समझि देखि मन माहिं ॥
हस्ती हय धन देखिकर, फूल्यो अंग न माइ।
भेरि दमामा एक दिन, सबही छांड़े जाइ ॥
मुक्ति विषै बैराग जो, बंधन विषै सनेह।
यह सब ग्रन्थन को मतो, मन मानो सु करेह ॥
विषयानन्द संसार है, भजनानन्द हरि दास।
ब्रह्मानन्द जीवन मुक्त, भई बासना नास ॥

शेर—वे कहां जीते रहे जो बेवफाई कर गये।
मर गये आखिर न किसीसे आश्नाई कर गये ॥
उम्र वे पायां पै इस कदर नाज़ा न हो।
मर्ग ने उनको न छोड़ा जो खुदाई कर गये ॥
कासये सर रहजदों के ठोकरों में आयगे।
सब कमाल इक रोज़ आखिर खाक में मिल जायगे ॥

दोहा—जो नर जात विदेश को, सामां करत अनन्त।
ना जानूं परलोक को, कैसे नर निश्चिन्त ॥
प्रानी झटपट सुकृत कर, सटपट दिन मत खोय।
काल झपट गटपट करै, फिर अटपट नहीं होय ॥

संग किसी के ना चलें, माया धन अरु माल।
संग चलें हाथों दिया, यही जगत् की चाल॥

सवैया,

गर्भ चढ़े पुनि सूप चढ़े पलना पै चढ़े चढ़े गोद घना के।
हाथी चढ़े फिर अश्व चढ़े सुखपाल चढ़े चढ़े जोम धना के॥
वैरी औ मित्र के चित्त चढ़े कवि ब्रह्म भनै दिन वीते पना के।
ईश कृपालुको जान्यो नहीं अव कांधे चढ़े चलि चारि जना के॥
मान तजो हर नाम भजो उदराम सुधा विष चित्त को पागो।
कामको मारि कै द्वेष को जारिके दीन दया भक्ती अनुरागो॥
लोभ रु मोह की फौज के ऊपर ज्ञान की तोप निरंतर दागो।
निर्भय राम पुकारि कहैं सतसंग करो अब नींद से जागो॥
संपति देखि न भूल मना सुत बंधु की भीड़ भरोसे न मोहो।
यार को प्यार कछु न करै मति पागल होय के बोझको ढोओ॥
कोटि उपाय करै न बचै सतसंग करो मत जीने को रोओ॥
संग बचै फिर रंग मचै क्यों न मानत है घर बैठे हि गंगा।
बातकि बात में काम बनै तजि के कुटिलाई करो मन चंगा॥
शुद्ध करो व्यवहार सभी दिल से बिलकुल त्यागि कै दंगा।
निर्भयराम विचारि कहैं टुक छोड़ प्रमाद करो सतसंगा॥

शेर—मशहूर तबीब वैद्य हुए या पढ़कर इल्म तिबावत का।
दालान क़िताबों से रोका और नुसखों से संदूक भरा॥
जब मौत मर्जने आन लिया सब भूले नब्ज और कारूरा।
गो नुसखे लाख मुजर्रिबथे पर काम न आया इक नुसखा॥
कोई लड़ताहै कोइ मरताहै कोई झगड़े हक और नाहकको।
जब देखा खूब तो आखिरको कुछ लेना एक न देना दो॥

शेर—यह अशरतो ऐश व कामरानी कबतक।
अशरत सही तो फेर जवानी कबतक॥
गो यहभी हो कयाम दौलत है महाल।
दौलत भी हुई तो ज़िन्दगानी कबतक॥

शेर—लेके एक क़लमदां और रख क़लमको सिर पर।
जोड़े हिसाब लाखों चहरे लिखे बराबर ॥
जब उम्र की कचहरी झांकी क़ज़ा ने आकर।
फिर आप न क़लमदां काग़ज रहा न दफ़्तर ॥
मुन्शी वकील दीवां मरमर हुए तो क्या।
न कोई तालिब हुआ हमारा, न हमने दिलसे किसीको चाहा ॥
न हमने देखी ख़ुशीकी लहरें न दर्दों ग़मसे कभी कराहा।
न हमने बोया न हमने जोता, न हमने काटा न हमने गाहा ॥
उठा जो दिलसे भरमका पड़दा, तो उसके उठते ही फिर अहाहा।
न बाप बेटा न दोस्त दुश्मन, न आशको ये सनम किसी के ॥
अजब तरह की हुई फरागत, कोई हमारा न हम किसी के।
जब छैल छबीले सुन्दरकी, छवि नैनन अंदर छायगई ॥
एक मूर्छासी झट आयगई, अरु जोत में जोत समाय गई।
हैफ़ अय्याम जवानी के चले जाते हैं ॥
हर घड़ी दिन की तरह हमभी ढले जाते हैं।

दोहा—टुक टिकवे के कारणें केती ठक ठक होय।
केते ठक ठक कर गये, टुक टिक रहा न कोय ॥
नव द्वारे का पींजरा, तामें पंथी पौन।
रहबे को अचरज महा, गये अचम्भा कौन ॥
तन की तनक सराय में नेक न पायो चैन।
सांस नकारा कूंच का, बाजत है दिन रैन ॥
रैन बसेरा हो चुका, अब दिन निकस्यौ आय।
चलो बटाऊ देशकों, खाली करो सराय ॥
विषय भोग संसार के, हैं सब दुख के मूल।
इन में फंसकर ईश को, मत मूरख तू भूल ॥
मनको अपने मारले, करके योगाभ्यास।
जिससे सारी इन्द्रियां, बनी रहैं नित दास ॥
सदा धर्म करते रहो, जब तक घट में प्रान।
धर्म शास्त्र में दस लिखे, उसके खास निशान।

तुलसी काया खेत है, मनसा भये किसान।
पाप पुण्य दोउ बीज हैं, बुवै सो लुनै निदान॥
जो सांचो मन होइ तो, तीरथ मनही मांहि।
कपट कतरनी पेट में, कहा होत है न्हाहिं॥

कवित्त।

पाय प्रभुताई कुछ कीजिये भलाई इहां, नांहि थिरताई बैन मानिये कविनके।
जस अपजस रहिजात बीच भूमिहीके, मुलक खजाना ये न साथ गए किनके॥
और महीपालनकी गिनती गिनावै कौन, रावणमे व्हैगये त्रिलोकी वश जिनके।
चोपदार चाकर चमूपति चँवर दार, मंदिर मतंग ये तमाशे चार दिन के॥

सवैया।

मातु पिता युवती सुत बन्धव लागत है सबको अति प्यारो।
लोक कुटुम्ब खरो हित राखत होइ नहीं हमतें कहुं न्यारो॥
देह सनेह तहां लग जानहु बोलत हैं मुख शब्द उचारो।
सुन्दर चेतन शक्ति गई तब बेगि कहै घर बार निकारो॥
देह सनेह न छांड़त है नर जानत है थिर है यह देहा।
छीजत जात घटै दिनही दिन दीसत है घटको नित छेहा॥
काल अचानक आइ गहै कर ढाह गिराइ करै तनु खेहा।
सुन्दर जानि यहै निहचै धरि एक निरंजन सूं करि नेहा॥
शेर—फूल तो दो दिन बहारे जां फिजां दिखला गये।
वाय उन गुंचों पै है ज्यो बिन खिले मुर्झा गये॥

कवित्त

रहा है न कोई यहां रही है न कोई यह, जानै सब कोई पै न मानै मोहपरिगे।
हाथी औ घोड़े जोड़े छोड़े सब ठौर २, भौनन में गाड़े भूरि भांड़े ते बिसरिगे।
कहै छविनाथ रघुनाथ के भजन बिन, ऐसे ही बिचारे जनम कोटिन निसरिगे।
जग वाले जोर वाले जाहिर जरब वाले, जोश वाले जालिम चिताकी आग जरिगे।
शेर—यह चमन यों ही रहैगा बागवां और जानवर।
अपनी अपनी बोलियां सब बोलकर उड़ जांयगे।
दोहा—तेरा मेरा क्यों करै, तेरा है नहिं कोय।
वासा है क्षण एकको, कौन भरोसा होय॥

सुत दारा धन सर्वही, छोड़ चलेगा धाम ।
देव देव जगदीश बिन, कोइ न आवै काम ॥
शेर——अजब सरा है यह दुनियां कि जिसकी शामो सहर ।
किसी की कूंच किसी का मुकाम होता है ।
दोहा——मन निश्चल मन चंचला, मन सुजान मन कुर ।
मन वैरी मन सज्जना, मन कायर मन सूर ।
मन मैला मन निर्मळा, मन दाता मन सूम ।
मन ज्ञानीं अज्ञान मन, मनहि मचाई धूम ।
बधै न ऊमर कायरां, घटै न झूझारांह ।
मरसी कोठै लोहके, ऊबरसी वैजारांह ।
पर धन तजबो सहज है, पर तिरिया को नेह ।
मान बड़ाई ईरपा, तुळसी दुर्ळभ येह ।

सवैया

झूंठो है झूंठो है झूंठो सदा जग सन्त कहन्त जे अन्त लहा है ।
ताहि सहै शठ संकट कोटिक काढ़त दंत करंत हहा है ।
जान पनी को गुमान बड़ो तुळसी के बिचार गंवार महा है ।
जानकी जीवन जान न जान्यो तो जान कहावत जान कहा है ।

कवित्त

निकळ गया हाकिम हुकम का करने वाळा, हालीं औ मुहालीं सव द्वार ही खड़े रहे ॥
सोनेके तख्त पर जरी औ बक्तरके बिछोना आछे २ पलंगों पर तकिया से धरे रहे ।
चढ़ने को गज औ तुरंग सोहन लागे अंग माया के खजाने में लालनसे भरे रहे ।
अंबरसे जीव सो दिगम्बर से होत चले जात वासन बभूत से आसन परे रहे ।

बुरा जो देखन मैं चला बुरा न देखा कोय
जो घट देखूं आपना मुझसा बुरा न कोय ।
शेर——जहां के इश्कबाजों से हमारा इश्क न्यारा है ।
हमारा इश्क उससे है जिसकाकि खल्क सारा है ।
दोहा–कुछ खातां कुछ खेलतां, कुछ सोवत दिन जाइ ।
कुछ विषयारस बिळसतां, दादू गए बिलाइ ॥
कर्म कुहाड़ा अंग वन, काटत वारंवार ।
अपने हाथों आपको, काटत है संसार ॥

कवित्त

दादू झूंठा संसार झूंठा परिवार झूंठा घरबार झूंठा नर नारि तहां मन मानै
झूंठा कुल जात झूंठा पित मात झूंठा बंध भ्रात झूंठा तन गात सति कर जानै
झूंठा सब धंध झूंठा सब फंद झूंठा सब अंध झूंठा जा चंद कहा मधु छानै
दादू भागि झूंठ सब त्यागि जागि रे जाग देखि दीवानै

दोहा— सांचा हरि का नाम है, झूंठा यह संसार।
झूंठे जग को छोड़ि के, सुमिरण करो विचार॥
जिनको मन विरकत सदा, रहो जहां चित होय।
घर बाहर दोउ एक सा, डारी दुविधा खोय॥

कवित्त

भरोसो विहानो जात ढरैगी दुपहरीसी, समझिकै विचारि देख चली आवै रात है
भंवतहै सचान काल तेरे पर तकि रहो, छिन पलकी खबर नाहि करै आय घातहै
दारा सुत सम्पति सब सपनेको सुख भयो,जानोगे जभी जब छूटि जाय गात है
कहैं चरण दास अब तजै क्यों न विषयावास,पानीमें नाव जैसे आयू चली जातहै
कुमारगसों भाजि और लाज खोटे कर्मनसूं, चौरासीके त्रासनसूं मूढ़ क्यों न लजरे
साधुनके संग बैठि धर्म हूं की नाव लेटि, गुरूहूको ज्ञान राखि प्रेम भक्ति सजरे
छूटै जब नारी यम देवें दुख भारी डारे नरक मंझारी आवागमन क्यों न तजरे
कहैं चरणदास अब तजै क्यों न विषयाचास रामके संवारे तू राम २ भजरे

सवैया—भूलि रहो जगमें जड़ता वस दारा सुता सुत प्रीति वढ़ावै।
इनसूं मन बांटि रहो गृह बीच सो अन्त समै कोइ पास न जावै॥
आनि गहै यमराज जबै सबही मिल प्रीतम राम बतावै।
'चरणदास' कहैं नर चेतरे मूरख राम विना कोइ काम न आवै॥
भक्षत हैं नहि भक्षत भोजन पीवत हैं नहिं पीवत पानी।
डोलत हैं नहि डोलत पर सूं बोलत हैं नहिं बोलत वानी॥
नानारूप व्योहारमें देखत निश्चय मध्य कछू नहीं आनी।
'चरणदास' बतायदियो शुकदेवने ऐसे रहै ताहि जानिये ज्ञानी॥
सोवत हैं नहिं सोवत नींद सु जागत हैं नहिं जाग दिखानी।
योग करैं न करैं कछु साधन ध्यान करै न करै कछु ध्यानी॥
बैन विशाल करैं चरचा न करैं चरचा नहिं होय विनानी।
चरणदास बताय दियो अब ऐसे रहैं ताहि जानिये ज्ञानी॥

चौपाई—रहिये तन मन वचन दयाला, सबही सों निर्वैर कृपाला ।

दोहा— शांतिहिं माता जानलै, संतोष पिता कर धार ।
बुद्धिहिं बहन बनाय कर, भ्राता मान विचार ।
सत्य वचनका पूत कर, क्षमा रूप कर नार ।
इस कुटुम्ब को धारकर, 'हेमा' ब्रह्म विचार ।
सिर पर टोपी दया की, पगरी शांति सरूप ।
अंगा आतम ज्ञान का, करता धरम अनूप ।
'हेमराज' इस देह में, लै परलोक संवार ।
फिर पछतावा ना मिटै, जो चूक्यौ इहिं वार ।

कुंडलिया— सोइ गृही त्यागी गनो, जामें राग न दोष ।
निर्मम निरअभिमान मन, निर्मल जीवन मोश ।
निर्मल जीवन मोश न, राखै बहुत पसारो ।
सुध व्यवहार चलाय करै, छादन आहारो ।
कहै 'हेमा' स्वाराज, विचारै ब्रह्मा तमजो ।
यद्यपि दीसै गृही परन्तु, नर त्यागी है सो ।

सवैया—सोच कहा सुत सम्पति कोअरु सोच कहा परिवार मरे को ।
सोच कहा अपमान भए अरु सोच कहा रिपु हाथ परे को ।
धाम गिरे कर सोच कहा अरु सोच कहा नृप दण्ड भरे को ।
भोजन को नहिं सोच करो नित सोच करो नर देह धरे को ।
सोच करो मरने पर है अरु सोच करो पर नारि हरे को ।
सोच करो पर द्रव्य हरी अरु सोच करो द्विज द्रोह करे को ।
सोच करो बहु पाप करें अरु सोच करो पर जीव जरे को ।
सोचन सैं यह सोच बड़ो तुम सोच करो भव सिन्धु परे को ।
जोंलग मैं अरु मोर कहै अरु तैं अरु तोर विचारत है रे ।
जानत है रिपु मित्रन को अरु नेह विषाद विवाद करै रे ।
उत्तम मध्यम जानत है अरु जों लग मोह मदादि गहै रे ।
जों लग एक न ब्रह्म विचारहिं तों लग ना भव सिन्ध तरै रे ।
होत कहा बहु योग करें अरु होत कहा उपवास करें रे ।
होत कहा लख दान किए अरु होत कहा बहु नेम करें रे ।

होत कहा मुनि संत भएं अरु होत कहा सुर लोक गएं रे।
जों लग एक न बूझ विचारहिं तों लग ना भव सिन्धु तरे रे।

दोहा—सुमिर राम भजु राम पद, देख राम सुनु राम।
तुलसी समुझहु राम कहँ, अह निस इव तव काम।
नदी किनारे देखिये, सम्मन सब संसार।
के उतरे केऊ तरे, बुगचा बांधि तयार॥
सम्मन रोवै कौन को, हंसै सु कौन विचार।
गए सु आवन के नहीं, रहे सु जावन हार॥

सवैया

कौन कुबुद्धि भई घट भीतर तू अपने प्रभु तैं मुख चोरै।
भूलि गयो विषयासुख में शठ! लालच लागि रह्यो अति थोरै॥
ज्यौं कोउ कञ्चन छार मिलावत लेकर पत्थरसे नग फोरै।
सुन्दर या नर देह अमोलक तीर चढ़ी नौका कित बोरै॥१
एक अनेकन तें जु लरैं झटका वहुतैं बटका करवा हैं।
मेरको फेर उठाय धरैं कर शेर को जेर अथाह को थाहैं॥
ऐसे धने नरनाह वली विकराल से काल को ख्याल खिलाहैं।
नाथ कोउ विरलो जगमें यह देह जितै नित नेह निवाहैं॥२

कवित्त।

कभी भूमि आसन सिंहासनपै वास कभी, कभी भिक्षा ग्रास कभी व्यंजन अहारहै।
कभी शत खंडवती गूदरी कों ओढ़ें यती, कंवरको कवहूं दिगंवर को धार है॥
कभी भानकर तपै कभी सीस छात्र दियै, कहूं सत्कार होत कहूं तिरस्कारहै।
तदपि न संत जन सुखी दुखी होत मन, आत्मा असंग लखैं देहको विहार है॥

दोहा—तुलसी या चल जगत में, चलवे को कह शोक।
रहवे को अचरज घणो, दुखी वृथा जड़ लोक॥
'व्यास' कनक अरु कामिनी, ये लांबी तरवार।
निकसेथे हरि भजन कों, वीचहि लीन्है मार॥

सवैया।

पांव छतें करि गौन हरी दिस फेर ये पांव चलैं न चलै।
जीभ छते करि गान हरी फिर "दासस्वरूप" हलै न हलै॥

नैन छतें लखि रूप विराटको फेर यह नैन खिलैं न खिलैं।
सौन छतें हरि कीरति को सुनि फेर ये सौन मिलै न मिलै॥
मूंड़ मुड़ाय रखाय जटा शिर खाक लगाय भये ब्रह्मचारी।
बैठ रहे पट दे मठ भीतर साध कै मौन लगाय कैं तारी॥
धर्म्म अधर्म्म की घूंट पिवै ममता मद लोभ मया न विसारी।
ऐसे भए तो कहा तुलसी जोपै आसन मारि कै आस न मारी॥

दोहा—राजस सों तामस बढ़ै, तामस सों बुधि नास।
रजगुण तमगुण छांड़िके, करो सतो गुण बास॥
सतगुण में मन थिर करो, करि आतम सों नेह।
आतम निर्गुण जानिये, गुण इन्द्री संग देह॥

सवैया।

देह मिली नरकी घरकी सम कोटन जन्म दयो जब भारो।
एक घरी न सुकर्म करो तुम भांति अनेक अधर्म विचारो॥
खोय दये तुमने इतने दिन है अब कौन विचार तुह्मारो।
जे विधितैं भव पार लगो अब ते विधितैं निज काज सुधारो॥ १
सो तिहितैं समझाय कहों मन राम भजो सुधरै गति तेरी।
या जग में जिहि हेत लयो तन सो सुध भूल गई तिहि केरी॥
भूल गये जगकी ममता मँह सो यह जानहु रैन अँधेरी।
राम कहो मन राम कहो फिर एक दिना परि है जम फेरी॥ २
जो यह बात विचारतहो हम बालक हैं नहीं वृद्ध भये हैं।
खेलनकूदन के दिन हैं सुख लूटनदे मद नैन छये हैं॥
सो यह आस न जीवन की कितने दिन को जग आय गये हैं।
जानहु काल कराल महा नर कोटिन होतहि खाय लये हैं॥ ३
जो तुम पुत्र त्रिया निज जानत पाप करो जिनके हित भारी।
वृद्ध भए सुत लात बतावहि नारि हजारन देवहिं गारी॥
पुत्र बधू जल देय नहीं पुरके नर नारि कहैं यह रारी।
अंत समै गति होहै कहा जब जीवत या गति होत तुह्मारी॥ ४
को किन को सुत बन्धु पिता अरु को किनको है यह परिवारा।
जो जगमें यह जीव चराचर कौन भयो तुमरो इक बारा॥

जीवत हां सब मोह करै फिर अंत समै नहीं कोउ तुह्मारा।
जो करणी जग मांझ करो तुम ते करनी सन लागहु पारा ॥ ५
दूलह संग बरात चले गज वाजि चलै नृप की असवारी।
सूरन के संग सस्त्र चलैं पति के संग जाहि विदेसही नारी॥
छांह चलै तन संग सदा लघु वालक के सँग में महतारी।
आखिर संग कछु न चलै इक संग चलै करतूत तुह्मारी॥ ६
गर्भ मँझार सहाय करी जिहि ईश्वर ने सब अंग बनायो।
वाहर काढ़ि दियो जिहि ने मुख दंत नहीं तब दूध पिआयो॥
दंत दिए तब सोच कहा सब सोच उन्हैं जिह्नि उपजायो।
जो सब जीव चराचर पालत ता हरि को तुमने विसरायो॥ ७
ठाम कहां तुमरो वह है जिहिं को तजि कै यहि ठामहि आये।
सोच हतो जिनको तुमकों सब लोग कुटुम्ब कहां विसराये॥
जो तज ठाम कहां बसिहो किहिनैं तुमको किहिं लोक बसाये।
या नहिं वात बिचारत हो किहि कारण कोटिन जन्म गमाये॥ ८

कवित्त

आपकों विचारो आपको हौ कहां आये आप, कहां फिर जैहो आप कहां घर ठौर है। यह तो शरीर पंच भौतिक प्रपंच जान, तासों आप मानै यहै माया भूल जो रच है॥ आपको सम्हार कै समझि ज्ञान जाग जीव, कहा मोह नींद में उदर भर सोरहै। आपन को बूझो यों अनुभव अनन्य भवै, आप रूप सूझै तब आपै आप हो रहै॥ शब्द स्पर्श रूप रस गन्ध पौन जान क्षिति जल पावक गगन कृत करे है। मन चित्त बुद्धि अहंकार काम क्रोध लोभ मोह मद मत्सर समस्त रस भरे है॥ आस पास नींद भूख आलस हर्ष शोक, इंद्रिय गुण कर्म यही माया विस्तरे है। आतमा अधार सर्व व्यापक अनन्य भनै सबही को धरे आप आपही से परे है॥ मन अनुरक्त होत, मनहिं विरक्त होत मन निज भक्त होत मन खल पीन है। मन जग जीव होत मन उठ ब्रह्म होत मन सुख इन्द्र होत मन सुख दीन है॥ मन भ्रम भूत होत मन अवधूत होत, मन ही के भाव सवै छन भंग छीन है। अक्षर अनन्य मेट मन के स्वभाव सवै ध्वनि ही की ध्यान मन कीजे लवलीन है॥

सवैया—राग न द्वेष न हर्ष न शोक न वन्धन मोक्ष की आस रही है।

वैर न प्रीति न हार न जीति न गारि न गीति सुरीत गही है ॥
रक्त विरक्त न मान कबू शिव शक्ति विषै सब सृष्टि लही है ।
निर्गुण ज्ञान अनन्य भनै अवधूत अतीत की रीति यही है ॥
हरि में हरि सों हरि में हरि सों सुर में सुरसों सुख दायक है ।
नर में नर सो तर में तरसो घर में घरसो घर घाइक है ॥
वढ़ में वढ़सो सु अनन्य भनै घट में घटसो घट घायक है ।
हम में हमसो तुम में तुमसो सब में सबसो सब लायक है ॥
जल में जलसो थलमें थलसो नल में नलसो जल जात छई है ।
वन में वनसो घन में घनसो तन में तनसो मन मान दई है ॥
सब में सबसो सु अनन्य भनै यह भेद लहै सरवज्ञ सुई है ।
घर एक अनेक स्वभाव वही जित देख तितै शिव शक्ति मई है ॥
कोउ राम कहै परनाम कहै कोउ कान्ह गुपाल जुआनत है ।
अरि हंत कोऊ भगवन्त कहै कोउ द्वैत अलेख वखानत है ॥
वह ईश्वर एक अनेक मतौ अपनो अपनो अनुमानत है ।
जग अन्धन गाथ अनन्य भनै यह भेद सुजान सुजानत है ॥
धर्म बिना सत संग नहीं सत संग बिना हरि भक्ति न रासै ।
भक्ति बिना उर शुद्धि नहीं उर शुद्धि बिना नहिं बुद्धि बिलासै ॥
बुद्धि बिना अनुमान नहीं अनुमान बिना नहीं ज्ञान प्रकासै ।
ज्ञान बिना जु अनन्य भनै शिव शक्ति अखंड स्वरूप न भासै ॥

सवैया—हाटक के वहु भूषण हैं तिहि भूषणमें नहिं हाटक हानी ।
सागर में लहरैं लहिये लहरीन विषैं वह सागर पानी ॥
यों ततरूप अनन्य भनै न बिना तत आन यहै उर आनी ।
एकतें रूप अनेक लहैं सु अनेकमें एक लहै सोइ ज्ञानी ॥
छावै सुगन्ध कुरंगकी नाभी कुरंग न सो समझै मन माहीं ।
दूध सुधाय धरै सुरभी. सुरभी न सवाद लहैं तिहिं ठाहीं ॥
जान कुसार असार अजान कुजाने बिना सब बात वृथाही ।
ईश्वर आप अनन्य भनै इम है सबमें सब जानत नाहीं ॥

कवित्त

ज्ञानी अज्ञानी संसार में भुलाय रह्यौ आठों याम कुटुम्ब धाम सम्पति की

आशा है। क्षण में बनावत अरु क्षण में बिगाड़ देत दुनियाका खेल मानों करताकौ तमाशा है॥ पानी का बुलबुला जैसे पानी में समाय जात, तुलसी जल सागर में मानी की आशा है। निकल गई श्वासा तब टूट गई आशा मनुष्य का शरीर जैसे जल बिच बताशा है॥ तीरथ गयो तो न गयो तो भयो कहा जाके, दया दान शुचि हिय तीर्थ अभंगा है। हरि पद पायवे को सुख सरसायवे को पाप के जरायवे को अग्नि को पतंगा है॥ सुकवि गुपाल भाव भक्ति हिय में धारि सांचों श्री ईशजू के रंग में जो रंगा है। करि सतसंगा कबू परै ना कुसंगा सदा. जाको मन चंगा तो कठोती ही में गंगा है॥

सवैया

क्यों फिरो देस विदेशन में जो ललाट लिख्यो सो घटै न बढ़ै है।
काहेको हाउहि हाउ करो अख्त्यार करो घर बैठेहि पै है॥
धाम धरा सुख सम्पति साज समाज गुपाल कृपा करि ऐ है॥
जीव जिते जगके जिनको जिन जीव दियो सो न जीविका दे है।

दोहा—गोधन गजधन बाजिधन, और रतन धन खान।
जब आवत संतोषधन, सब धन धूलि समान॥

कवित्त

आसवस डोलत सो याको विश्वास कहा, स्वासवस बोलै मलमांस ही का गोला है। कहै पदमाकर छन भंगुर सरीर यह पानी कोसो फेन जैसे परत फुलेला है॥ करम करोरा पंचतत्व नवटोरा फिर, ठौर २ जोरा फिर ठौर ठौर पोला है। छोड़ हरि नाम नहीं पैहै विश्राम अरे, निपट निकाम तन चामही को चोला है॥ माखन में दाखन में सांठन के साखन में, मोदक निचाखनमें करत हंसी की है। पालन रसालन में पनस विसालनमें, भाउती के अधरान मीठी मिसरीकी है॥'जादव' कहत मधु माधुरीन आधुरी है, चाखि २ चीजें तजी सारधा सभीकी है। लगी जब रसना कथन रामजीकी तब, पटहू रसनकी अमीकी रस फीकी है॥

दोहा—स्वास २ में राम कह, वृथा स्वास मत खोय।
नाजानै इस स्वासका, यहीं छोर नहिं होय॥

सवैया

न रहे बलि विक्रम बेन दधी न रहे पारथ जिन भारत ठाना।

न रहे दुर्योधन जगत जुरे जिन चोसट कोस में छत्र जु ताना ।।
न रहे बलराम न बालि रहे जिहँ कांखहि में दस सीस लुखाना ।
धरनी को प्रमान येही विध है फरा सोई झरा बरा सोइ बुझाना ।।

कुंडलिया—काया कच्चा कुंभ है, छाड़ो गरब गुमान ।
आया ऐसा जायगा, नहिं समझै नादान ।।
नहि समझै नादान सान सुद्धि सब भूला ।
सुत दारा गुल तान दाम की खातर डूला ।।
कहते वल्लभ राम दूर कर ममता माया ।
नहिचै जासी जीव मिलै मिट्टी में काया ।।
मेरा मेरा क्या करै, तेरा नहिं तलभार ।
सभी छोड़िकै जायगा, पुत्र नारि परिवार ।।
पुत्र नारि परिवार चार दिनका है सपना ।
अर्थ और घर बार उसीमें कुछ नहिं अपना ।।
ममता माया मोह काल का फिरता फेरा ।
कहते वल्लभ राम करै मत मेरा मेरा ।।

कवित्त

संपति गड़ी ही छोड़ी रसोई चढ़ीही छोड़ी, सुन्दरी मेढ़ी ही छोड़ी सुपनो सो कै गयो । बूढ़े पितु मातु छोड़े भाई बिललात छोड़े, बेटा बिललात छोड़े आपनिउ पै गयो । ठाड़े दासी दास छोड़े घोड़े खात घास छोड़े यार आस पास छोड़े सबै दुख दैगयो । 'देवी दास' आपने लगै न कोऊ एको साथ देखो वह आपने की येही साथ लैगयो ।।

कुण्डलिया—करिये बेगि विवेक जू, शांति प्रिया को सोध ।
सकुल कृतारथ होउगे, उपजत पूत प्रबोध ।
उपजत पूत प्रबोध बजैगी अनँद बधाई ।।
धन्य कहैंगे धीर रहैगी कीरति छाई ।
बरनै 'दीन दयाल' जगत की जाल न परिये ।।
मिलि नियमादि सखान शान्ति सों नित हित करिये ।
मर जावैगा मूरखा, क्यों न भजै भगवान ।।
झूठी माया जगत की, मत करना अभिमान ।

मत करना अभिमान वेद सास्तर यूं कहवै ॥
तज ममता भज राम नाम सों अमर रहवै ।
कहै दीन दरवेश फेर अवसर कब पावै ॥
भज्या नहीं भगवान अरे मूरख मरजावै ।

कुण्डलिया—गड़े नकारे कूंच के, छिन भर छाना नाहिं ॥
कोइ आज को कालको, पाव पलक के मांहि ।
पाव पलक के मांहि समझ ले मनवा मेरा ॥
धरा रहैगा माल होयगा जंगल डेरा ।
कहै दीन दरवेश गर्व मत करै गंवारे ॥
छिन भर छाना नाहिं कूंच के गड़े नकारे ।

सवैया

दस मास रहो जब गर्भ महा तब ही प्रभु तैं तुम कोल किया ।
मैं बाहर ह्वै हरि भक्ति करूं तेहि कारन तोहि निकाल दिया ॥
इत आंय जगत में भूल गये तेहि कारन लोग भये दुखिया ।
कवि दीहल हे मन चेत करो भज ईश कृपाल जे जन्म दिया ॥

दोहा—दादू मन मृत्तक भया, इंद्रिय अपने हाथ ।
तो भी कदे न कीजिये, कनक कामिनी साथ ॥
मन ही मंजन कीजिये, दादू दर्पन देह ।
माहिं मूरती देखिये, इह औसर करिलेह ॥

सवैया—सील सुसील सुबुद्धि सुलच्छन धीर गंभीर मिले जग न्यारे ।
धर्म दया निरलोभ निरंतर निर्भय भक्ति अराधन हारे ॥
धर्म करै सो करै प्रभु अर्पन चाहत नांहि कुबुद्ध उजारे ।
सात्विक ज्ञान अनन्य कहै सोइ भक्त सदा भगवंतहि प्यारे ॥

कवित

दिया है ईशने तामें खुशी करो 'ग्वाल' कवि खाना पीना लेना देना येही रह जाना है । आद बादशाह ले अमीर उमराव केते वे हू चले गये कहूं लगा ना ठिकाना है । हिलो मिलो सब ही तैं निरंगी की रहा चलो जिन्दगी जरासी यामें दिल बहलाना है । आवै परवाना तब बनै ना बहाना नेकी कर जाना फेर आना है न जाना है ।

दोहा— सब बातनि की एक है, दुनियां तें दिल दूरि।
साईं सेती संग करि, सहज सुरति ले पूरि॥
जिन जैसी करणी करी, तैसे ही फल पाय।
भुगतत हैं वे जगत में, ताको बदला आय॥
रजगुण तमगुण ले किया, तजा सतोगुण अंग।
हरिगुण को दइ पीठ ही, करि विषयन को संग॥
काम क्रोध मद लोभ अरु, राखै ना अभिमान।
रहै दीनताई लिये लगै न माया बान॥
दूध पिया जिन कुचन सों, उन को मल सुख लेत।
जन्म खोय खाली चले, नारिन सों करि हेत॥

सवैया

ऊंच भयो अरु नीच भयो बहु बारहि रंक नरेस भयो है।
जो जग योनि सजी विधि ने सब योनिन में अवतार लयो है॥
नर्कनकी बहु त्रास सही कबहू करनी कर स्वर्ग गयो है।
आतम ब्रह्म नहीं समझो बिन कारण जन्म बिताय दयो है॥
जे सुख में कुल लाज गई विपरीत भई जम त्रास सही है।
दुःख सहे बहु वैतरनी में नर्क दशा नहिं जात कही है॥
योनि अनेक भ्रमे जग में अवके तुम या नर देह गही है।
ते सुखको फिरहू मन चाहत तो सम कोउ निलज्ज नहीं है॥
ध्यान धरो हरि को घट में गुरु ज्ञान की गूदरि डार हिये रे।
या तन की मृगछाल करो मन निर्मल माल गहो करमें रे॥
भस्म भली सत संगति की धर सुन्दर सील जटा सिर पै रे।
जो यहि भांति बनै घर में फिर काम कछू नहिं है बन में रे॥
बोलहु सत्य न नष्ट करो मति बैठहु नाहिं कुसंगति में रे।
जीव दया निसि वासर राखहु होवहु दूर कुकर्म्मन तें रे॥
भस्म भली सतसंगति की धर सुन्दर सील जटा शिर पै रे।
जो यहि भांति बनै घर में फिर काम कछू नहिं हैं वनमें रे॥
धर्म करो जस लेहु सदा नहिं क्रोध करो अजसी न बनै रे।
साहिब जान भजो हरि को न प्रसंग करो पर नारिन में रे॥

संग करो नित संतन को कब हूं न अनन्द विषाद करै रे।
जो यहि भांत बनै घर में फिर काम कछू नहिं है वन में रे॥

दोहा—सात्विक राजस तामसी, त्रैगुण तैं संसार।
तीन पांच को नास है, माया ब्रह्म विचार॥
जहां राम तहँ काम नहिं, जहां काम नहिं राम।
तुलसी कब हूं होत नहिं, रवि रजनी इक ठाम॥
नहिं सेवा नहिं बुद्धि बल, नहिं विद्या नहिं नाम।
तुलसी पतित पतंग की, तुम पति राखो राम॥
चल स्वरूप यौवन सु चल, चल वैभव चल देह।
चला चली के वखत में, भला भली कर लेह॥
सुखी सुखी हम सब कहैं, सुख मय जानत नांहिं।
सुख स्वरूप आतम अमर, जो जाने सुख पाहि॥
तुलसी ममता राम सों, समता सब संसार।
राग न रोप न दोष दुख, दास भये भव पार॥

दोहा—जब जागै जब राम जप, सोवत राम संभार।
ऊठत बैठत आतमा, चालत राम चितार॥
का करिये का जोरिये, थोड़े जीवन काज।
छांड़ि २ सब जात है, देह गेह धन राज॥
यह काया है ओस सम, पवन लगे कुम्हिलात।
इसका मत अभिमान कर, त्याग सभी उत्पात॥
आया था किस काम कों, तू अपने मन चेत।
तन सराय में ठग घने, तू नित करता हेत॥
आया था कुछ लेन कों, चला सभी कुछ खोय।
चेत मुसाफिर बावरे, पाछे फिर क्या होय॥
मात तात भ्राता सहित, पुत्र मित्र अरु नार।
स्वारथ के सब यार हैं, दगा दार परिवार॥
जे सूरज सों बढ़ि तपे, गरजे सिंह समान।
भुजबल विक्रम पाय निज, जीतो सकल जहान॥
तिन की आज समाधि पै, बैठ्यो पूछत काक।

को तुम का थे का भये, कहां गये करि साक ॥
सोई सुख सोई उदर, सोई कर पद दोय।
भयो आज कछु और ही, परसत जेहि नहिं कोय ॥
हाड़ मास लाला रकत, वसा त्वचा सब सोय।
छिन्न भिन्न दुर्गन्ध मय, मरे मनुस के होय ॥
कातर जेहि लखिके डरत, पंडित पावत लाज।
अहा व्यर्थ संसार को, विषय वासना साज ॥

दोहा—जागो लोगो मत सुओ, न करो नींद से प्यार।
जैसो सुपनो रैन को, तैसो यह संसार ॥
तीन दिनां को जीवनो, जैसो स्वप्न विलास।
ता पर बाग लगाय कै, फल चाखन की आस ॥
जनम मरणतैं ग्रसित अरु, विद्युच्चल तारुण्य।
लोभ ग्रसित संतोष अरु, क्रोध ग्रसित कारुण्य ॥

कवित्त

राग जारि लोभ हारि द्वेष मारि मार वारि, वार २ मृगवारि पार वार पेखिये।
ज्ञान भान आनि तम तम तारि भागि त्याग, जीव सीव भेद छेद वेदन सूं लेखिये ॥
वेद को विचार सार आप कूं संभार यार, टारि दास पास आस ईसकी न देखिये।
निश्चल तूं चलन अचल चल दल छल, नभ नील तल मल तासूं न विसेखिये ॥

दोहा— ना सुख विद्या के पढ़े, ना सुख वाद विवाद।
साधु सुखी तुलसी कहे, लागी जवहि समाध ॥
चतुराई चूलै पड़ो, भट्टि पड़ो आचार।
तुलसी हरिकी भक्ति बिन, चारों वरण चमार ॥
राम भरोसो छांड़ि कै, करै भरोसो और।
सुख संपतिकी क्या कहूं, नर्क न पावै ठौर ॥
सुन्दर ज्ञान प्रकाश तें, धोखा रहै न कोय।
भावै घर भीतर रहै, भावै वन में होय ॥
निन्दा स्तुति है देहकी, कर्म सुभासुभ देह।
सुन्दर ज्ञानी ज्ञानमय, कछु हु न जाने येह ॥
सुन्दर ब्रह्म विचार है, सब साधन को मूल।

याही में आये सकल, डाल पात फल फूल ॥
हेसुत मुक्ति जो चाहिये, तज विषवत विषयान ।
क्षमा दयार्जव तोष सत, अमृत ज्यूं भज मान ॥
अहंकार विष सर्प सम, अमृत अनहकार ।
निर्भय अमृत पीजिये, विषको देत विडार ॥
मुक्त जुदो अभिमानतैं, वंध्यौ वंध अभिमान ।
कहा कहूं यह सत्यहै, ज्यूं मति त्यूं गति जान ॥
आड़े टेढ़े सूत्रकों, वस्त्र कहै सव कोय ।
तैसे व्यापक ब्रह्मको, नाम विश्व जग होय ॥
जैसे सक्कर रूपके, रसतैं जुदी न जान ।
तैसे जुदो न मोहि तैं, विश्व व्याप्त मैं मान ॥
कहा किया हम आय करि, कहा कहैंगे जाय ।
इत ही रहे न उत रहे, चाले मूल गमाय ॥
झूंठे घर कूं घर कहैं, सच्चे घरको घोर ।
हम चाले घर आपने, खलक मचावै शोर ॥
चलना है रहना नहीं, चलना विसवा वीस ।
ऐसे तनिक सुहाग पै, कहा गुथावै सीस ॥
यह तो गति है अटपटी, झट पट लखे न कोय ।
जो मन की खटपट मिटै, चटपट दर्शन होय ॥
माया सगी न मन सगा, सगा न यह संसार ।
परशुराम या जीवका, सगा जो सिरजनहार ॥

इंद्वछंद—है निसचिन्त करै मत चिंतहि, चोंच दई सोइ चिन्त करैगो ।
पांव पसार परयो क्यों न सोवत पेट दियो सोइ पेट भरैगो ॥
जीव जिते जल के थल के पुनि पाहन में पहुंचाय धरैगो ।
भूखहि भूख पुकारत है नर सुन्दर तू कह भूख मरैगो ॥
भाजन आप गढ्यो जिन नें भरि हैं भरि हैं भरि हैं २ जू ।
गावत हैं जिनके गुण को ढरि हैं ढरि हैं ढरि हैं २ जू ॥
आदिहु अन्तहु मध्य सदा हरि हैं हरि हैं हरि हैं २ जू ।
सुन्दर दास सहाय सही करि हैं करि हैं करि हैं २ जू ॥

काहेको दौरत है दसहों दिसि तू नर देखि कियो हरिजूको ।
वैठि रहै दुरि कै मुख मूंदि उघारके दन्त खवाइ है टूको ॥
गर्भ थके प्रतिपाल करी जिन होय रह्यौ तव तू जड़ मूको ।
'सुन्दर'क्यों बिललात फिरै अब राख हृदय विश्वास प्रभूको ॥

सवैया-यद्यपि द्रव्य को सोच करै वहु गर्भ में केतोक गाठि तें खायो ।
जा दिन जन्म लयो जगमें जव केतिक कोटि लिये संग आयो ॥
वाको भरोसो क्यों छांड़े अरे मन जासों अहार अचेतमें पायो ।
'ब्रह्म' भनै जनि सोच करे वहि सोचहि जो विरला उलहायो ॥

दोहा—अजगर करै न चाकरी, पंछी करें न काम ।
दास मलूक कहि गये, सबके दाता राम ॥

कवित्त

एक हू न श्वास खाली खोइये खलक वीच कीचर कलंक अंक धोय ले तो धोयले ॥
उर अँधियार पाप पुंजसौं भरी है देह ज्ञानकी चिरागें चित्त जोयले तो जोयले ॥
मानुष जन्म ऐसो फेर न मिलैगो मूढ़ परम प्रभू से प्यारो होयले तो होयले ।
छिन भंग देह जामें जनम सुधरिवो है, वीज के झमके मोती पोयलेतो पोयले ॥

शेर— जरा टुक सोच ऐ ग़ाफिल कि क्या दमका ठिकाना है ।
निकल जब यह गया तनसे तो सब अपना विगाना है ॥
वना कर ऊंचे महलोंको क्यों दिल को रिझाना है ।
समझ नादां अरे इस में किसे वसना बसाना है ॥
मुसाफिर तू है और दुनिया सराय मत भूल ग़ाफिल ।
अवस दुनिया के धन्धों नें नाहक दिलको फंसाना है ॥
निकल जब यह गया तन से तो सब अपना विगाना है ।
सरा है दुनिया कि कूंच करजा हरे खौफे ये दम वदम है ॥
नसीम जागो कमरको बांधो उठाओ बिस्तर कि रात कम है ।
तन तकिया अरु मन विश्राम । जहां पड़ै नर वहीं अराम ॥

सोरठा—तप विद्या मनि मन्त्र, विविध रसायन औषधी
चलहि न एको तन्त्र, मृत्यु प्रकट जब होत है ॥
मरत एक कोउ आज, कोऊ परसों नरसों कोऊ ।
इहि विधि जगत समाज, रहत निरा चिरकाल तक ॥

यह अनित्य जग जाल, वीच कहां सुख देहको ।
प्रगट जहां नित काल, का सोचहु अज्ञानि तुम ॥

दोहा— तजि इन्द्रिय प्रिय विषयको, प्राण वृत्ति दृढ़ धार ।
क्षुधा विकलता से बचे, नहिं मन वढ़ै विकार ॥
जोजग खग सम फंसि रह्यो, धन कुटुम्ब निज मान ।
सुधी न की परलोक की, सो पीछे पछतान ॥

भुजंग प्रयात छन्द

कबू गेहवासी कबू वन्नवासी, कबू पूर्ण आशी कबू है निराशी ।
सबै करम के जोगसे सहैना, रखें ज्यों प्रभु त्यों खुसीमें रहैना ॥
कबू मिष्ट पाई कबू शुष्क खाई, कबू द्रव्य पाई कबू सो गुमाई ।
दिले हर्ष औ शोक काहू न लेना, रखें ज्यों प्रभू त्यों खुशीमें रहैना ॥
कबू प्याव प्यादे चलो पंथ जाना, कबू वाहनं स विमानं समानां ।
कबू दान देना कबू दान लेना, रखैं ज्यौं प्रभू त्यौं खुशी में रहैना ॥
कबू श्रेष्ठ भूपाल सन्मान देवै, कबू कोपि के सो गृहं लूटि लेवै ।
तऊ चित्तमें राखिये सूख चैना, रखें ज्यौं प्रभू त्यौं खुशी में रहैना ॥
कबू व्है संजोगी कबू व्हे वियोगी, कबू व्हे निरोगी कबू होइ रोगी ।
मुखे वोलिये ना वनी भीरु वैना, रखैं ज्यौं प्रभू त्यौं खुशीमें रहैना ॥
कबू व्याह उच्छाह को ग्रोस आवै, कबू शोक सिंधू विधाता वनावै ।
नहिं रोइ के डारिये नीर नैना, रखैं ज्यौं प्रभू त्यौं खुशीमें रहैना ॥
कबू आप राजा वनी काज कीजे, कबू नीच की नोकरी चाहलीजे ।
भली अरु बुरी है यों कबू ना कहैना, रखे ज्यौं प्रभू त्यों खुशीमें रहैना ॥

चौपाई-जग अनित्य जीवन अरु प्राना, यह जिय जानि भजो भगवाना ।
नहिं जग पर भरोस करु इक छिन, तो सम पालि हने अगनित इन ॥
जव यह प्राण शरीरहिं त्यागत, माटी तखत एक सम लागत ।

कवित्त

देत न दिलासा करैं लोग उपहासा देखि, मानै अपनासा जाहि वोहि तोहि पासा है । अमर भनंत यातें झूंठो यह रासा जानि, चेतै क्यौं न स्वासा ज्यौं लों भूलै नांहि तासा है । तू तो है जरासा तेरा ख्याल अजरासा भासा, जानै जिहिं खासा सो तो विष का मवासा है । तेरा है न वासा यहां चाहत सुपासा जो तू छोड़ै क्यौं न आसा यह तो जगत तमासा है ॥

खाया सोई ऊवरया, दीया सोई सत्थ ।
जसवँत धर पोढावतां, माल विराने हत्थ ॥
अतुल विभव सुख सम्पदा, अतुलित धन धर रास ।
छोड़ि चले सब ठाठ को, मरघट कीन निवास ॥

कवित्त

दाता को महीप मानधाता को दिलीप ऐसो जाको जस अजहूंलों द्वीप २ छायो है । वली ऐसो कौन भयो जहान बीच, रावण समान को प्रतापी जग जायो है । बाणन की कलान माहीं सुजान द्रोण पारथ से, जाके गुण दीन दयाल भारत में गायो है । कैसे २ शूर रचे चातुरी विरंचजू फेर चक चूर करि धूर में मिलायो है ॥

दोहा—जिन की आयुष जगत में, अब्द सहस्रहिं एक ।
ऐसे जन पुनि मर गये, वीते वर्ष अनेक ॥

सवैया-व्है थिर मंदिर में न रह्यो गिरि कंदर में न तप्यो तप जाई ।
राज रिझाये न कै कविता रघुराज कथा न जथा मति गाई ॥
यों पछितात कछू पदमाकर कासों कहों निज मूरखताई ।
स्वारथ हू न कियो परमारथ योंही अकारथ वयस विताई ॥
भोग में रोग विजोग संजोग में जोग से काय कलेश कमायो ।
त्यौं पदमाकर वेद पुराण पढ्यौ पढ़ि कै वहु वाद वढ़ायो ॥
दौर्‍यो दुरास में दास भयो पै कहूं विसराम को धाम न पायो ।
खायो गमायो सु ऐसे ही जीवन हाय में राम को नाम न गायो ॥

दोहा—सहज स्वभाव तीरथ वहै तहँ में जो कोइ न्हाय ।
पाप पुराय दोनों छुटैं, हरि पद पहुंचे जाय ॥
फटी गूदड़ी ओढ़ के, सूखी रोटी खान ।
श्रम करिकै दुख झेलवो, भलो न जग अहसान ॥

चौपाई

भाग भोग सम्पति अधिकार । इन्हैं सदा अति तुच्छ विचार ॥
चतुराई सों धन नहिं आवत । भाल लिख्यो सोही नर पावत ॥

कुण्डलिया-हरिया हरि सों हेत कर निसि दिन आठों याम ।
भव सागर के भंवर में यहै एक विश्राम ॥

यहै एक विश्राम काम जब यमसों परि है।
मात पिता सुत बंधु पीर कोऊ नहिं हरि है॥
'हरि वल्लभ' यह कहत देख रांहट की घरियां।
निसि दिन आठों याम हेतु हरि सों करु हरियां॥

दोहा—मन विश्वासी जीवड़ा, कायर किम दोड़ेह।
मरसी कोठे लोह के, ऊवरसी चोड़ेह॥
कहँ जाये कहँ ऊपने, कहां लड़ाये लाड़।
क्या जाणे किस खाड में, कहां पड़ेंगे हाड़॥
तप तीरथ तरुणी रमण, विद्या राग प्रसंग।
कहां कहां मन रुचि करै, पाये तन छिन भंग॥

दोहा—कोटि शत्रु सिर पर रहो, कोटि शत्रु रहो साथ।
तुलसी कछू न कर सकै, जो सहाय रघुनाथ॥
कहा करै वैरी प्रबल, जो सुदृष्टि रघुवीर।
दस हजार गज बल हट्यो, घट्यो न दस गंज चीर॥
अरब खरब अति द्रव्य है, उदय अस्त लों राज।
तुलसी हरि की भक्ति विन, सबहिं नरक के साज॥
मानुष देह प्रापत भयो, सब प्रापत को मूल।
तामें हरि प्रापत नहीं, सब प्रापत में धूल॥
सब धरती कागज करूं, लेखन सब वनराय।
सात सिंधु की मसि करूं, हरिगुण लिखा न जाय॥

सवैया—राम सुदृष्टि तो इष्ट सबै जग राम कुदृष्टि सो इष्ट न कोई।
राम भलो तो भलो सगरो जग राम बुरो तो भलो नहिं कोई॥
राम दयानिधि देगो दया करि राम न देय तो देय न कोई।
तुलसी यहि जान भजो हरि को हरि हेत विना तो हितू नहिं कोई॥
जय जग वन्दन नन्द के नन्दन पाण्डव स्यन्दन हांकन हारे।
चर्चित चन्दन कष्ट निकन्दन ग्राह गयन्दन ग्राह विदारे॥
इन्द फनिन्द कविन्द मुनिन्द रु छन्द गुनी गनु छन्द उचारे।
आनन्द कन्द मुकन्द गोविन्द करो दुख द्वन्द निकन्द हमारे॥

कवित्त

नगर नरेस रूसो खान सुलतान रूसो मीर उमराव रूसो सकल सवाई है।
भाई बन्धू बाप रूसो काकाहू कुटुम्ब रूसो मन में न लाइये ॥
जनम की जननी रूसो सुत सुता बाम रूसो औरहू पड़ोसी रूसो कुछ न
कवाइये। दीन के दयाल प्रभु दीन की अरज यही सब जग रूसो प्रभु आप
रूसे न चाहिये ॥

दोहा—लगै नेह जिमि जगत में, मिलत पुरुष अरु नारि।
तैसो जो हरि तें लगै, हरि हु मिलै हितकारि ॥

कुण्डलिया—जैसे स्वासा आपनी, सो अपने बस माहिं।
खैंचत सोवत जगत में, सो करता घट माहिं ॥
सो करता घट माहिं, ताहि जड़ जीवन जानत।
करत शुभाशुभ कर्म ताहि आपुन यहि मानत ॥
कहै 'अनन्य' परवान राख श्री ईश्वर आसा।
कीजे सुमिरण भजन रहै जों लों घट स्वासा ॥

दोहा—हरि चरनन सों जो विमुख, ऐसे सगे हजार।
चारों वा एक अन्य पै, हरि सों राखै प्यार ॥
सतगुरु माला मन दिया, पौन सुरत सों पोय।
बिन हाथों निसि दिन जपै, परम जाप यों होय ॥

सवैया-तिनतें खर सूकर स्वान भले जड़तावशतें न कहै कछु वै।
तुलसी जेहि राम सों नेह नहीं सो सही पशुपुच्छ विषाण[1] न द्वै ॥
जननी कत भार मुई दश मास भई किन बांझ गई किन च्वै।
जरि जाउ सो जीवन जानकीनाथ जिये जगमें तुम्हरो विन ह्वै ॥
गज बाजि घटा भले भूरि भटा वनिता सुत भौंह तकै सब कै।
धरणी धन धाम सरीर भलो सुर लोकहु चाहि इहै सुख स्वै ॥
सब फोकट साटक है तुलसी अपनो न कछू सपनो दिन द्वै।
जरि जाउ सो जीवन जानकीनाथ रहै जगमें तुम्हरो बिन ह्वै ॥
सुर राज सो राज समाज समृद्धि विरंचि धनाधिप सो धन भो।
पवमानसो पावक सो यम सोम सो पूषन सो भव भूपन भो ॥
करि योग समाधि समीरन साधि कै धीर बड़ो मन हू बस भो।

1–विषाण अर्थात् सींग

सब जाइ छुआइ कहै तुलसी जो न जानकी जीवन को जनयो ॥
काम से रूप प्रताप दिनेश से सोमसे सील गणेस से माने ।
'हरिचन्द्रसे सांचे बड़े विधिसे मघवासे महीप विषय सुख साने ॥
शुक से मुनि शारदसे वकता चिरजीवन लोमस ते अधिकाने ।
ऐसे भये तो कहा तुलसी जो पै राजिव लोचन राम न जाने ॥

—— o ——

भक्ति

सवैया-जानत ज्योतिष वेद पुराण बखानत हैं कविता कवि यातें ।
छलि कायन कूक कलारस में पट गावत राग मिला सुर सातें ॥
धनु बान चढ़ाय हने रिपु कों जुर जीत के जंग भये प्रभु तातें ।
एक रकार मकार बिना धिरकार सबै चतुराईकी बातें ॥

कवित्त

जानत जहाने वेद श्रुति हू बखाने तिन्हैं, निपट नदाने जे न जाने जग बंदे रे ।
भये बलवान जाके घूमत निसान बांके, रहे ना निसान ताके मान मसंदे रे ॥
कहै घनश्याम तंत अंत पछितैहै फेर, भक्ति भगवान बिनु जानि सब फंदे रे ।
एरे मति मंदे सब छोड़ फरि फन्दे अब आनन्दके कन्दे रामचन्दे क्यों न बन्दे रे ॥

पापी औ सुरापी हों सुथापी को न सेवक न, छापी द्वारका को हों न थापी देवतान को । पूज्यो ना रमापी ना खनायो कूप वापी, भयो मोह के महापी हौंन दापी जन तान को । मंत्र को न जापी हों न गायो गिरिजापी कहूं, भारी हिय दापी जन तापी मो समान को । असद अलापी हों तो कर को मिलापी राम, चापी शुक लापी राम करुणा निधान को ॥

दोहा—नहिं विद्या नहिं बाहुबल, नहिं खरचन कों दाम ।
तुलसी पतित पतंग की, तुम पति राखो राम ॥
बेर २ नहिं पाइये, सुन्दर मानुष देह ।
राम भजन सेवा सुकृत, यह सौदा करि लेह ॥
मन को साधन एक है, निसि दिन ब्रह्म विचार ।
सुन्दर ब्रह्म विचार तैं, ब्रह्म होत नहिं बार ॥

सोरठा—जो चाहसि कल्याण, सोच तरण भव भय हरण ।
कर जगदीश्वर ध्यान, शरण जाइ तज वासना ॥

दोहा—जो तो कों प्रभु चाहिये, प्रभु में चित्त लगाय।
और दृश्य सब दृष्टि तैं, अपने दूर बहाय॥
मंत्री अपने भूप सों जितनो रहत डराय।
इतनो जो प्रभु तैं डरै, प्रभु सेवक ह्वै जाय॥

कवित्त

आयो मन हाथ तब आयबो रह्यो न कछु, भायो गुरुज्ञान फिर भायबो कहा रह्यो।
कहै 'पदमाकर' सुगंध की तरंग जैसो, पायो सतसंग तब पायबो कहा रह्यो॥
दान बलवान बिविध बितान बल छायो, छायो जस पुंज फेर छायबो कहा रह्यो।
ध्यायो राम रूप तब ध्याइबो रह्यो न कछु, गायो राम नाम फेर गायबो कहा रह्यो॥

दोहा—हिय में हरि हेर्‌यो नहीं, हेरत फिर्‌यो जहान।
ज्यों निज में मृग भूलि मद, खोजत गहन अजान॥
प्रीति न कीजे देह धरि, काहू तैं बिन ईस।
जो कीजे दीजे इता, तन मन धन अरु सीस॥

दोहा—पर धन को पत्थर गिणैं, पर त्रिय मात समान।
एते में हरि ना मिलै, तुलसी दास जमान॥

सवैया-घूमत द्वार मतंग अनेक जँजीर जरे मद अम्बु चुआते।
तीखे तुरंग मनो गति चंचल पौनके गौनहु तैं बढ़ि जाते॥
भीतर चन्द्र मुखी अवलोकत बाहर भूप खड़े न समाते।
ऐसे भये तो कहा तुलसी जोपै जानकीनाथके रंग न राते॥

दोहा—तोड़ी सब संसार तैं, जोड़ी प्रभुमें प्रीति।
तापर भी मिलना नहीं, अजब तिहारी रीति॥

सवैया-व्याल कराल महा विष पावक मत्त गयंदन केर दतोरे।
शासति शंक चली डरपै हुतै किंकर तैं करनी मुख मोरे॥
नेक विषाद नहीं प्रहलाद हिं कारणके हरि के बल होरे॥
कौन की त्रास करै तुलसी जोपै राखि है राम तो मारि है कोरे।
जप योग विराग महामख साधन दान दया दम कोटि करैं॥
मुनि सिद्ध सुरेश गणेश महेशसे सेवत जन्म अनेक मरैं।
निगमागम ज्ञान पुराण पढ़ै तपसानल तैं युग पुंज जरैं॥
मन सों प्रण रोपि कहै तुलसी रघुनाथ बिना दुख कौन हरै।

कवित्त

गाल को भयो रे शत्रु सालको भयो रे कैंड, ख्याल को भयो रे कै कुटुम्ब प्रतिपाल को। छाल को भयो रे माया जाल को भयो रे याही, हालको भयो रे कै भयो रे भाग्य भालको। काल को भयो रे चित्त चाल को भयो रे, पारी याल को भयो रे कै भयो रे तान ताल को। खाल को भयो रे धन माल को भयो रे नर, वाल को भयो रे न भयो रे तू दयाल को ॥

सवैया-लाजत है हरिके गुण गावत तेरो हि काज सबै बिगरैगो।
लोग कुटुम्ब की प्रीति मसान लों आगे नहीं डग एक धरैगो ॥
दास हरी दुख कौन बटावत जाहि समैं यम देखि डरैगो ॥
राम भजै न सबैं तज मूरख लाजहिं लाज में नर्क परैगो।
लाभ सोई हरि नाम जपै अरु हानिं वही हरि नाम भुलावै ॥
स्वर्ग सोई हरि सीख गहै अरु नर्क सोई हरि भक्ति न पावै।
सिद्ध सोई हरि ध्यान धरै अरु बुद्धि सोई निहचै ठहरावै ॥
हार सोई हरि रूप न जानत दास सोई हरि के गुण गावै।
सूर सोई निज काम को जीतत वीर सोई मन बांध के लावै ॥
ज्ञान सोई सब में ब्रह्म देखत ध्यान सोई कछु और न ध्यावै।
राग सोई जिहिं रामजू रीझैं विराग सोई जो विषै विसरावै ॥
वास सोई जहँ भै नहिं लागत दास सोई हरि के गुण गावै।
ज्ञानी को मान गुमान गयो अहंकार टर्‌यो भयो देह तैं न्यारो ॥
नीच कहो कोउ ऊंच कहो जड़ मूढ़ कहो कोउ चोर ठगारो
निन्दहु वन्दहु चन्दन चर्चहु हर्ष न शोक सदा सुख कारो ॥
यों 'हरि दास' कहै हरि के रंग आठहु जाम फिरै मतवारो।

घनाक्षरी

श्वासको विश्वास कहा पल में निकास जात, सूत कैसो तार जैसे टूट जात काचो है, माथे धर कुम्भ कोउ निकसै वजार वीच, काहूको न धक्का लाग्यो तहां सोई सांचो है, कंठ प्राण आए कफ वात पित्त रोक लेत, पूंछत है कोई सो जवाब नहीं पाछो है, तातैं 'हरि दास' कहै हरिजू को नाम हम, आजहू तैं लेत हैं जहां लों देह आछो है, राम नाम जानिवे को आगम पुराण कहैं राम नाम जानिवे कों गीताहू पढ़ायो है, राम नाम जानिवे कों छन्दहू प्रवन्ध किये, राम नाम जानिबे को वेद हू बनायो है, राम नाम जान्यों जिन सर्वहू

को अर्थ पायो, राम २ राम योंही रटना लगायो है, राम नाम सबही में सार 'हरि दास' कहै, शब्द के समुद्र एक राम रत्न पायो है ॥ बड़े २ संत आगम पुराण कहैं, हरि हर हितू तोर हरि रस चाखरे । काम छांड़ क्रोध छांड़ लोभ अहंकार छांड़, मान छांड़ सत्य २ भाखरे ॥ कहै 'हरि दास' जहां यम हू को जोर नाहीं, मन रूप हाथी हरि मारग को हांकरे । राम नाम लेत कछु खरची न लागत है एक घड़ी रसना तू खाली मत राखरे ॥

कवित्त ।

प्रभातो निर्मल होय सूरज किरण उगें, चित्त तो प्रसन्न होय गोविन्द गुण गाये तैं । पीतर तो उज्जल होय रेतीके मांजेतैं, हृदय में ज्योती होय गुरूज्ञान पाये तैं । भजन में विक्षेप होय दुनियांकी संगति तैं, आनन्द अपार होय गोविंद के ध्याये तैं । मनको जगाओ अरु गोविंद के सरन आओ, तिरनेके ए उपाय गोविन्द मन भाये तैं ॥

गोविन्द के पास आओ मन न विचार लाओ, भोरके पाप जाय दरसन के पाये तैं । हिरदेमें ध्यान लाओ श्रवण को अमी पाओ, मनको त्रिताप जाय गोविन्द गुन गाये तैं । गुरूको राख भाव गोविन्द से हंसि हंसाव, दिलमें प्रेम बढ़े गोविन्द छवि छाये तैं । चरन में शीस नाओ भगती की राह पाओ, कलि में पार होय गोविन्द नाम पाये तैं ॥

घनाक्षरी

उद्धवसे प्रेमी धर्म पुत्रसे विरागमान, विदुरसे सत्यवादी भरतसे विरक्त हैं ।
व्याससे दयालु सुखदेव से परमहंस, नारदसे कारुणिक तारने को जक्त हैं ॥
शंभूसे उदार समदर्शी विरंचि जैसे, विष्णु से सहायक वसिष्ठ जैसे मुक्त हैं ।
सूर्यसुतदानी अरु गुरु सनकादिक जैसे, सोई 'हरिदास' कहै हरिजूके भक्त हैं ॥

सवैया—जागत रामहि सोवत रामहि बोलत रामहि बान परी है ।
स्वास उस्वास तथा जल पीवत रैन दिना यह टेक धरी है ॥
ऊठत बैठत गान करै पुनि जैमत हूं बिसरे न घरी है ।
यों 'हरिदास' कहै रसनारस रामहि रामहि राम भरी है ।
आराम न रावन राज किये आराम न दंड चवायन में ॥
आराम न कामिनि केलि कीये आराम न भोग मिठायन में ।
आराम न सम्पति जोर धरें आराम न बैठे हथायन में ॥
मन और न ठौर कहां भटकै आराम है राम के पायन में ।

कवित्त

सीख्यो सब काम धन धामके सुधारवेको, सीख्यो अपमान मान राखबो हजूर में। सीख्यो असवारी हय हस्ति सुखपालनकी, तिरबो हू सीख्यो महा नदीनके पूर में॥ सीख्यो सरञ्जाम गढ़ कोटनके ढायवे को, सीख्यो शमशेर काढ़ देत अरि उर में। सीख्यो हेम हीरा सब बातनकी परिच्छा हरि, बोलबो न सीख्यो सब सीख्यो गयो धूर में॥

दोहा—विषय विलोचन अंध करि, डार दियो तम कूप।
को रच्छै प्रभु ईस बिन, ग्रसत काल अहिरूप॥
सबको रच्छक एक प्रभु, और न दूजो कोइ।
जाको मन वैराग्य बस, जानत है यह सोइ॥
चलत फिरत बैठत उठत, सोवत जागत आदि।
ताको नित ध्यावत रहो, जो प्रभु परम अनादि॥
मानुष तन शुभ पायके, जो न कियो भ्रम दूर।
धर्म गह्यो नहिं हरि भज्यो, कहु तेहि समको कूर॥

छंद

कहुरे करुणा निधि के जस कों, जग जीवन को फल जो चहुरे।
चहुरे निशि द्योस सुसंगति को, औ कुसंगतिको नहिं खोजहुरे॥
गहुरे धन धाम औ भारी विभौ, लहि संतन के पदकों गहुरे।
गहुरे मन में बलभद्र यही, हरि नामहि नामहि को कहुरे॥

दोहा—तुलसी विलम्ब न कीजिये, लीजे हरि को नाम।
मनुष मजूरी देत है, क्यौं राखैगो राम॥
होत वृथा हरि भजन बिन, जनम जगत के मांहि।
यथा विपिन में मालती, फूलि फूलि झरि जांहि॥
हों अनाथ अतिशय दुखी, डर्यो देखि संसार।
बूढ़त हूं भवसिंधु में, मोहि करो प्रभु पार॥

दोहा—पीव बिना तो जीवना, जग में भारी जान।
पिया मिले तो जीवना, नहीं तो छूटे प्रान॥
जन्म मरण यम दंड के, गर्भ वास की त्रास।
नाम रटै सबही छुटैं, लख चौरासी गांस॥

छोड़ै सबही वासना, हो बैठे निष्काम।
चरण कमल में चित धरै, सुमिरै रामहि राम॥
ब्रह्महत्या अरु नारिकी, बालक हत्या होय।
राम नाम जो मन बसै, सबकों डारै खोय॥
नामहि ले जल पीजिये, नामहि लेकर खाह।
नामहि लेकर बैठिये, नामहि ले चल राह॥
तेरा तो कोइ है नहीं, मात पिता सुत नार।
ताते सुमिरो राम कों, हे मन बारंबार॥
जिहि कारण भटकत फिरे, घर घर करत सलाम।
तेरे तो वे हैं नहीं, ये मन सुमिरो राम॥
जीवत ही स्वारथ लगै, मूएं देह जराय।
ए मन सुमिरो राम को, धोखे काहि पराय॥
हाथी घोड़े धन घणा, चन्द्र मुखी बहु नार।
नाम बिना यम लोकमें, पावें दुःख अपार॥
जब लग जीवै राम कहु, रामहि सेती नेह।
जीव मिलैगो राम में, पड़ी रहैगी देह॥
मन ही मन में जाप करि, दर्पण उज्ज्वल होय।
दर्शन होवै राम का, तिमिर जाय सब खोय॥
सबहिं निचोरे कहत हूं, भक्ति करो निष्काम।
कोटि तपस्या है यही, मुखसों कहिये राम॥
राम नाम मुख से कहै, राम नाम सुन कान।
राम २ हरि को रटो, ऐसी गहिये बान॥
विद्या मांहीं बाद है, तप के माहीं ऋद्धि।
राम नाम में मुक्ति है, योग मांहि यों सिद्धि॥
तव कारण सबकुछ किया, नाना विधि सुख दीन।
तैं बाको जाना नहीं, नाम न कबहू लीन॥
आयुर्दा यों जात है, जस तरवर की छांह।
चेत सितावी भक्ति में, तजो जगतकी बांह॥
ओंकार प्रभु रूप है, जग में व्यापक जान।
नमस्कार उस रूप कों, जो है सब को भान॥

मोहादिक छै शत्रु कों, कर के दूर उचार।
भवहारक हरि नाम को, करि के आत्म विचार॥
गर्व छोड़ मन जीत कर, तर भव सिंधु अपार।
वचन मान गुरु देवको, जो है जग में सार॥
निज वाणी तू शुद्ध कर, गाय प्रभू के गीत।
यमनियमादिक पाल कर, राख प्रभू में प्रीत॥

सवैया

नीरहि में ज्युंहि नीर मिले अरु क्षीरहि में ज्युंहि क्षीर मिलावै।
ज्यूं घृतमें घृतही मिले जात रु सागरमें सरिता मिलि जावै॥
लून सलीलहि में मिल जात रु दीपक ज्वालाहि में लय पावै।
सिद्ध मिलै चिद सागरमें सुनु सागर सोइ समाधि कहावै॥
तात रु मात रु भ्रात नहीं भगिनी सुत दार नहीं दरसावै।
शत्रु नहीं अरु मित्र नहीं नहिं भ्रांतिहु से कछु भांति भमावै॥
एक अखंडित मंडित ब्रह्म अपंडित पंडित भेद न पावै।
सिद्ध मिले चिद सागर में सुनु सागर सोइ समाधि कहावै॥
भावाभाव न तहँ कछू सप्तम तुरिया मांहि।
मैं तू तहँ न सम्भवै, कहा आहि कहा नाहि॥

दोहा—(दादू) जा कारण जग ढूंढिया, सो तो घटही मांहि।
मैं तें पड़दा भरमका, ताथें जानत नाहि॥
(दादू) सब घटमें गोविन्द है, संगि रहै हरि पास।
कस्तूरी मृगमें वसे, सूंघत डोले घास॥
(दादू) घटि कस्तूरी मिरग के, भरमत फिरे उदास।
अंतर गति जाने नहीं, ताते सूंघै घास॥
(दादू) केई दौड़ें द्वारका, केई काशी जांहि।
केई मथुरा कों चलै, साहिब घटही मांहि॥
दादू काया कारवी, देखत ही चलि जाइ।
जब लग सास सरीर में, राम नाम लौ लाइ॥
दादू देही देखतां, सब किसही की जाय।
जब लग सांस सरीर में, गोविंद के गुण गाय॥

जे उपज्या सो बिनासि है, जे दीसै सो जाय।
दादू निर्गुण राम जप, निहिचल चित्त लगाय॥
(दादू) मरणे थी तू मति डरै, मरणा अंति निदान।
रे मन मरणा सिरज्यया, कह ले केवल राम॥
सब जग छांड़े हाथ तें, तुम जिनि छांड़हु राम।
नहिं कछु कारज जगत सों, तुमही सेती काम॥
छोपा गर्व गुमान तजि, मद मंछर हंकार।
गहै गरीबी बन्दगी, सेवा सिरजन हार॥
दादू मारग कठिन है, जीवत चलै न कोइ।
सोई चलिहै बापुरा, जे जीवत मृत होइ॥
दादू मैं मैं जालि दे, मेरे लागो आग।
मैं मैं मेरा दूर करि, साहिब के संग लाग॥
दादू माला तिलक सूं, कुछ नहिं काहू काम।
अंतरि मेरे एक है, अह निसि उसका नाम॥
(दादू) जग दिखलावै बावरी, षोडस करै सिंगार।
तहँ न संवारे आपको, जहं भीतरि भर्तार॥
सांचा हरि का नाम है, सो ले हिरदे राख।
पाखंड परपंच दूरि करि, सब साधो की साख॥
दादू जब लग जीविये, सुमिरण संगति साध।
दादू साधू राम बिन, दूजा सब अपराध॥

सवैया

धरि ध्यान रटो रघुबीर सदा धनु धारि को ध्यान हिये धरवे।
पर पीर में जाय के वेगि परो करतें सुभ सुकिरत को करवे॥
तरवे भवसागर को भजि के लजिके अघ औगुण तैं डरवे।
'परताप कंवार, कहै पद पंकज पाव घरी मत बीसर रे॥
कोऊ तो मोक्ष अकाश बतावत कोऊ तो मोक्ष पताल के मांही।
कोऊ तो कहे मोक्ष पृथ्वी पर कोऊ कहै कहुं और कहांही॥
कोऊ बतावत मोक्ष शिला पर कोऊक मोक्ष मिटे परछाहीं।
सुन्दर आत्म के अनभो बिन और कहुं कोइ मोक्षहि नाहीं॥

मुए तें मोक्ष कहैं सब पंडित, मुए तें मोक्ष कहैं पुनि जैना।
मुए तें मोक्ष कहैं ऋषि तापस मुए तें मोक्ष कहैं शिव सैना॥
मुए तें मोक्ष मलेच्छ कहैं पुनि धोखेहि धोखे बखानत बैना।
'सुन्दर' आतम को अनभो सोइ जीवत मोक्ष सदा सुख चैना॥

छंद—मल ममप्रमेय मनादि मजमव्यक्तमेकमगोचरम्।
गोविन्द गोपर द्वन्द हर विज्ञान घन धरणी धरम्॥
जे राम मन्त्र जपंत सन्त अनन्त जन मन रंजनम्।
नित नौमि राम अकाम प्रिय कामादिखल दल गंजनम्॥१॥
जे श्रुति निरंतर ब्रह्म व्यापक विरज अज कहि गावहीं।
करि ज्ञान ध्यान विराग योग अनेक मुनि जेहि पावहीं॥
सो प्रकट करुणा कंद शोभा वृन्द अग जग मोहई।
मम हृदय पंकज भृंग अंग अनंग वहु छवि सोहई॥२॥
जो अगम सुगम स्वभाव निर्मल असम सम शीतल सदा।
पश्यन्ति यं योगी यतन करि करत मन गोवस यदा॥
सो राम रमा निवास संतत दास वस त्रिभुवन धनी।
मम उर वसहु सो शमन संसृति जासु कीरति पावनी॥३॥

दोहा-(दादू)जागहु लागहु रामसों, छाड़हु विषै विकार।
जीवहु पीवहु राम रस, आतम साधन सार॥
सांई सत संतोष दे, भाव भगति बेसास।
सिदक सबूरी सांच दे, मांगै दादू दास॥
निर्मल गुरुका ज्ञान गहि, निर्मल भगति विचार।
निर्मल पाया प्रेम रस, छूटै सकल विकार॥
निर्मल तन मन आतमा, निर्मल मनसा सार।
निर्मल प्राणी पंच करि, दादू लंघै पार॥
इह जग जीवन सो भला, जब लग हिरदै राम।
राम विना जे जीवना, सो दादू बे काम॥
विथा तुम्हारे दरसकी, मोहिं व्यापै दिन रात।
दुखी न कीजै दीनको, दरशन दीजै तात॥
जिस घट इश्क अल्लाहका, तिस घट लोहि न मास।

दादू जियरे जक नहीं, ससकै सांसै सास॥

दादू राम संभारिये, जब लग सुखी शरीर।
फिर पीछे पछतायगा, (जब)तन मन धरै न धीर॥

दुख दरिया संसार है, सुखका सागर राम।
सुख सागर चलि जाइये, दादू तज बे काम॥

(दादू)कहतां सुणतां राम कहि, लेतां देतां राम।
खातां पीतां राम कहि, केवलात्म विश्राम॥

कवित्त

प्रेम ही में परतीत रस रीत प्रेम ही में, प्रेमही में राज नीत हार जीत जंग है।
प्रेम ही में हाव भाव सहित समूह प्रेम, प्रेमही में राग रंग उमँग अनंग है॥
प्रेमही में ध्याता ध्येय ज्ञाता ज्ञेय प्रेमही में, प्रेमही में जोग भोग पंचभूत अंग है।
प्रेमको प्रकाश सो तो करताकी करामात, जहां देखो तहां एक प्रेमको प्रसंग है॥

छार सम काया सब माया धूम छाया जैसी, तमोगुण तजरे तू तज देवो गारी को।
तजदे बड़ाई तू आदर अनादर तज, तज शोक मोह चिन्ता झूंठ नेह नारीको॥
तप जप दान पुराय विना किये बैठि रह्यो, जानत न तेरे सिर दंड दंड धारीको।
अहो मन मूढ़ तोसों कहा कहूं बेर बेर, राखरे भरोसो एक ईश न्यायकारीको॥

दोहा—सरीर सरोवर राम जल, मांहे संजम सार।
दादू सहजैं सब गये, मनके मल विकार॥

ज्यूं जल पैसे दूध में, ज्यूं पाणी में लूण।
ऐसे आतम राम सों, मन हठ साधै कूण॥

(दादू) राम नाम में पैसि करि, राम नाम लो लाइ।
यहु इकन्त त्रिय लोकमें, अन्त काहेको जाइ॥

(दादू)कर साईंकी चाकरी, यह हरि नांव न छोड़।
जाना है उस देशको, प्रीति पिया सों जोड़॥

आपा पर सब दूर कर, राम नाम रस लाग।
दादू औसर जात है, जाग सकै तो जाग॥

हिरदै राम संभालि ले, मन राखै बेसास।
दादू समरथ सांइयां, सब की पूरै आस॥

दादू इश्क अल्लाह का, (जे) कबहू प्रगटै आय।
तो तन मन दिल वाहका, सब पड़दा जलि जाय॥

(दादू) सेल्या पाहै प्रेमरस, आलस अंग लगाय।
दूजे को ठाहर नहीं, पुहुप न गंध समाय॥
जहां राम तहँ मैं नहीं, मैं तहँ नांही राम।
दादू महल बारीक है, द्वै को नाहीं ठाम॥
दादू हैं को भै घणा, नाहीं को कछु नाहिं।
दादू नाहीं होइ रहु, अपने साहिब मांहि॥
जब लग यह मन थिर नहीं, तब लग परस न होइ।
दादू मनवा थिर भया, सहजि मिलैगा सोइ॥
(दादू) बिनअलम्बन क्यों रहै, मन चंचलचालि जाय।
अस्थिर मनवा तो रहै, सुमिरण सेती लाय॥
जाको होवै मौत भय, जग में लगै न चित्त।
झुकै राम की ओर ही, बहुत लगावै हित्त॥
ध्याता बिसरै ध्यान में, ध्यान होय लय ध्येय।
बुद्धिलीन सुरति न रहै, पद समाधि लखि लेय॥
जीतै पहिल अहार ही, दूजे और करोध।
बहु मनुषों का संग तजि, छांडै प्रीति विरोध॥
काम क्रोध मद लोभ हनि, गर्व तजै जो साध।
राम नाम हिरदै धरै, रोम रोम आराध॥

सवैया—कंचन लोह एकै करि जानत अमृत जहर एकै करि पावै।
कीरति गार एकै अनुमानत ऊंचहि नीच एकै दरसावै॥
रंक सु राव एकै करि बोलत एक स्वरूप अहो निसि ध्यावै।
सागर प्रेम अखंड प्रकाशित सो जन जीवन मुक्त कहावै॥

कवित्त

मैं तो हूं पतित आप पावन पतित नाथ, पावन पतित हो तो पातक हरोईगे।
मैं तो महादीन आप दीनबन्धु दीनानाथ, दीनबन्धु हो तो दया जीमें धरोईगे॥
मैं तो हूं गरीब आप तारक गरीबनके, तारक गरीब हो तो बिरद बरोईगे।
मेरी करनीपै कछु मुकर न कीजे नाथ, करुणा निधान हो तो करुणा करोईगे॥

दोहा—जगतें रहु छत्तीस व्है, राम चरण छै तीन।
तुलसी देख विचार हिय, है यह मतो प्रवीन॥

पशू घड़ंता नर घड़्यो, भूल्यो सींग रु पूंछ ।
तुलसी हरिकी भक्ति बिन, धिक दाढ़ी धिक मूंछ ॥
प्रभुता को सब कोउ चहै, प्रभु को चहै न कोय ।
प्रभु को जे कोऊ चहै, तुरतहि प्रभुता होय ॥
भोजन मैथुन की कथा, करत लुगाई लोग ।
ताकी बात न करत कोउ, जिन दीन्हे सब भोग ॥
जीव जीवके आंसरे, जीव करत है राज ।
जो कोउ प्रभुके आंसरे, क्यौं बिगड़ै ता काज ॥
राम नाम कलि कल्प तरु, सकल सुमंगल कंद ।
सुमिरज करतल सिद्ध सब, पद पद परमानन्द ॥
हरन अमंगल अघ अखिल, करन सकल कल्याण।
राम नाम नित कहत रहु, गावत वेद पुराण ॥
राम नाम तो सब कहैं, ठग ठाकुर अरु चोर ।
ध्रुव प्रहलादो तरि गए, ये नामहि कछु और ॥

सवैया-आन पर्‌यो गहरे जलमें जहं नाव मलाह न खेवन हारो ।
तैरू नहीं तिर जानूं नहीं कोइ संग नहीं मोहि देत सहारो ॥
काम रु क्रोध की धार वहै अरु लोभको भौंर फिरै अतिभारो ।
चूक कृपा निधि माफ करो प्रभु ऐसे अपंग कों पार उतारो ॥

शेर—कहता हूं जवां सें कि सिफत उसकी किया कर ।
न कोई हुआ होगा न हो उस की बराबर ॥
जिसने कि सिफत अपनी से संसार संभारा।
हम उस के बनाए हैं वह मालिक है हमारा ॥

दोहा—तुलसी छल बल छांड़िके, करिये राम सनेह ।
भेद कहा भर्तार सों, जिन देखी सब देह ॥
राम नाम की लूट है, लूटि सकै तो लूट ।
अन्त काल पछतायगो, प्रान जांयगे छूट ॥
मन अस्थिर करि लीजे नाम । दादू कहैं तहां ही राम ।

कवित्त

राम नाम मातु पितु स्वामी समरथ हितु, आश राम नाम को भरोसो राम नाम को ।
प्रेम राम नाम हीसों नेम राम नाम हीको जानो ना मरम पद दाहिनो न वाम को ॥

स्वारथ सकल परमारथ को राम नाम राम नाम हीन तुलसी न काहू काम को ।
राम की शपथ सर्वस मेरे राम नाम, काम धेनु काम तरु मोसे छीण छाम को ॥

सवैया-वेद पुराण विहाइ सुपंथ कुमारग कोटि कुचाल चली है ।
काल कराल नृपाल कृपाल न राज समाज बड़ो ही छली है ॥
वर्ण विभाग न आश्रम धर्म दुनी दुख दोष दरिद्र दली है ।
स्वारथको परमारथको कलि रामको नाम प्रताप बली है ॥
न मिटै भव संकट दुर्घट है तप तीरथ जन्म अनेक अटो ।
कलिमें न विराग न ज्ञान कहूं सब लागत फोकट झूंठ जटो ॥
नट ज्यों जनि पेट कुपेटक कोटिक चेटक कौतुक ठाट ठटो ।
तुलसीजे सदा सुख चाहिये तो रसना निसि वासर राम रटो॥

छन्द भुजंगप्रयात

ओम् भज ओम् भज ओम् भज सततम् , यह जीवन है अति अल्प तरम् ॥
यह मन्त्र सुदुर्लभ वेद कृतम् , युग चारहु में ऋषि देव धृतम् ॥१॥
सब मन्त्र शिरोमणि जाप वरम् , मन शुद्धि करम् भव भीति हरम् ॥
श्रुति तन्त्र पुराण समस्त कहैं , बिनु ओम् सब मन्त्र अशुद्ध रहैं ॥२॥
यह ईश्वर वाचक नाम नरो , सब में यह श्रेष्ठ विचार करो ॥
सुख में दुख में प्रभु को भजियो , न कदापि उसे मन से तजियो ॥३॥
मुख मोड़हु ना करुणाकर से , प्रिय बान्धव मित्र वही सबसे ॥
गति मुक्ति वही धन धान्य वही , पितु मात वही गुरु देव वही ॥४॥
शरणागत याचत रक्ष विभो , जय ओ३म् जय ओ३म् जय नाथ प्रभो॥
शिव शंकर शंकर की शरणम् , मन से सुमिरे दुख के हरणम् ॥५॥

कवित्त ।

मंदिर क्यों त्यागे अरु भागै क्यों गिरिवर को, हरिजी को दूर जान कल्पै क्यों बावरे । सब साधन बतायो अरु चार वेद गायो, आपन को देखि अन्तर लौ लावरे । ब्रह्मज्ञान हिये धरो बोलते का खोज करो, माया अज्ञान हरो आपा बिसरातरे । जै हैं जब आप धाय कहा पुण्य कहा पाप, चरणदास तू निश्चल घर आवरे ॥

दोहा—बन रण दुर्ग समुद्र में, जहं संकट युत प्राण ॥
अशरण के प्रभु होत हैं, शरण ईस नहिं आन ॥
लिखि पढ़ि समझ विचार करि, सदा करो हरि ध्यान ॥
ईश भक्ति दृढ़ करि गहो, मिटै सकल अज्ञान ॥
जा कारण जग जीजिये, सो पद हिरदै नाहिं ॥
दादू हरि की भक्ति बिन, धिक जीवन कलि माहिं ॥
इंद्री स्वारथ सब किया, मन मांगे सो दीन्ह ॥
जा कारण जग सिर जिया, (सो) दादू कछू न कीन्ह ॥
दादू तजि संसार सब, रहै निराला होइ ॥
अविनाशी के आसरे, काल न लागै कोइ ॥
जागहु लागहु राम सों, रैन बिहानी जाइ ॥
सुमिर सनेही आपणा, दादू काल न खाइ ॥

दोहा—सोवत जागत सुपनवश, रस रिस चैन कुचैन ॥
सुरत श्यामघनकी सुरत, बिसरै हू बिसरैन ॥
प्रथम विवेक विराग पुनि, षट शमादि सम्पत्ति ॥
कही चतुर्थ मुमुक्षता, ये चव साधन सत्ति ॥
मान विषयनतें रोकनो, शम तिहि कहत सुधीर ॥
इन्द्रिय गणको रोकनो, दम भाषत बुधिवीर ॥
पांच२यम नियम लखि, आसन बहुत प्रकार ॥
प्राणायाम अनेक विधि, प्रत्याहार विचार ॥
छटो धारणा ध्यान पुनि, अरु सविकल्प समाधि ॥
अष्ट अंग ये साधि कै, निर्विकल्प आराध ॥
देह रहै संसार में, जीव राम के पास ।
दादू कछु व्यापै नहीं, काल झाल दुख त्रास ॥
(दादू)कर सांईकी चाकरी, ये हरि नांव न छोड़ ।
जाना है उस देश को, प्रीति पिया से जोड़ ॥
आपा परि सब दूरि करि, राम नाम रस लाग ।
दादू औसर जात है, जागि सकै तो जाग ॥

जा कारण जग जीजिये, सो पद हिरदै मांहि।
दादू हरिकी भक्ति बिन, धिक जीवन कलि मांहि ॥
पाणी धोये बावरे, मनका मैल न जाय।
मन निर्मल तब होइगा, जब हरि के गुण गाय ॥
जग मांही न्यारे रहो, लगे रहो हरि ध्यान।
पृथ्वी पर देही रहै, परमेश्वर में प्रान ॥
ज्यौं तिरिया पीहर बसै, सुरति पिया के मांहि।
ऐसे जन जग में रहैं, हरि को भूलैं नांहि ॥
जग त्यागो वैराग ले, निश्चय मन को लाव।
आठ पहर साठों घरी, सुमिरन सुरति लगाव ॥
दया नम्रता दीनता, क्षमा शील संतोष।
इन को ले सुमिरण करे, निश्चय पावै मोष(क्ष) ॥
हरि सूं प्रीति लगाय के, सब सों लेहि उठाय।
रहै सदा इक राम ही, और सकल मिटि जाय ॥
स्वासा लेवै राम बिन, सो जीवन धिक्कार।
श्वास श्वास में राम जप, यही धारणा धार ॥
उलट पलट जप राम ही, टेढ़ा सीधा होय।
या का फल नहीं जायगा, कैसे ही लो कोय ॥
खाते पीते नाम ले, बैठे चलते सोय।
सदा पवित्तर नाम है, करै ऊजला तोय ॥
भरमत २ आइया, पाई मानुष देह।
ऐसो अवसर फिरि कहां, नाम सितावी लेह ॥
कै घरमें कै बाहरै, जो चित आवै नाम।
दोनों होंहि बराबरी, कै जंगल कै ग्राम ॥
दुख धंधे को छोड़ि करि, कलह कल्पना त्याग।
तन तैं मन तें वचन तें, राम भजन में लाग ॥

चौपाई—जो नर राम नाम ले नाहीं, सो नर वृथा जिवै जग मांहीं।

दोहा—और ज्ञान सब ज्ञानरियां, ब्रह्म ज्ञान सों ज्ञान ॥
जैसे गोला तोप का, करत जात मैदान।
जिनकी रक्षा तू करै, ते उबरें करतार ॥

जे तू छांडे हाथ तें, ते डूबै संसार।
जग तें रहु छत्तीस व्है, राम चरण छः तीन ॥
तुलसी देख विचार हिय, है यह मतो प्रवीन।

कवित्त।

गले तोख पहिनाओ पांव बेरी ले भराओ, गाढ़े बन्धन तें बंधाओ खिचाओ काची खालसों। विपले पिलाओ तापर मूठभी चलाओ, मझधार में बहाओ बांध पत्थर कमालसों। बिच्छू ले बिछाओ तापर मोहि ले सुआओ, बांध कापर दुशालसों। गिरितें गिराओ काली नागसे डसाओ पर भांति न छुड़ाओ दीन बन्धू दयाल सों॥

दोहा—तीन टूक कोपीन के, बिन भाजी बिन लोन।
जिनके हियमें हरि बसैं, इन्द्र बापुरो कौन॥
मन मतंग उनमत्त है, बचियों यासूं मंद।
कसि जँजीर हरि नामतें, फिस्यो करो निर्द्वन्द्व॥
अरे मूढ़ बहु पुण्य सूं, दई दई नर देह।
त्याग सकल मद मोह को, हरि पद सूं कर नेह॥
सेवक की रक्षा करै, सेवक की प्रति पाल।
सेवक की बाहरि चढ़ैं, ऐसे दीन दयाल॥

सवैया

राज सुरेश पचाशक को विधिके करको जु पटो लिखि पायो।
पुत्र सपूत पुनीत प्रिया जिन सुन्दरता रति को मद नायो॥
सम्पति सिद्ध सबै हुलसी मनकी मनसा चितवें चित लायो।
ऐसो भयो तो कहा तुलसी जो पै राजिव लोचन राम न गायो॥

सवैया

मात तुही गुरू तात तुही मित भ्रात तुही धन धान भँडारो।
ईश तुही जगदीश तुही मम सीस तुही प्रभु राखन हारो॥
राव तुही उमराव तुही मन भाव तुही मम नैन को तारो।
सार तुही करतार तुही घरबार तुही परिवार हमारो॥

दोहा—चारि पहर नहिं जग सकै, आधी रात सु जाग।
ध्यान करो जपही करो, भजन करन कूं लागि॥

जागै ना पिछले पहर, ताके मुखड़े धूल ।
सुमिरै ना करतार को, सभी गमावै मूल ॥
जागै ना पिछले पहर, करै न आतम ध्यान ।
ते नर नरके जांयगे, वहुत सहैं यम सान ॥
जन्म छुटै मरगा छुटै, आवागम छुटि जाय ।
एक पहर की रातसूं, वैठा हो गुण गाय ॥
जो कोइ विरही रामके, तिनको कैसी नींद ।
सबर लागा नेहका, गया हियेको बींध ॥
समझ सितावी भक्ति ले, नेक न ढील लगाव ।
आपा हरिकों देचुको, याको यही उपाव ॥
शून्य शहर हम बसत हैं, अनहद हैं कुल देव ।
अजपा गोत विचारिले, 'चरण दास' यही भेव ॥
देह मिटत है स्वप्न ज्यों, जीव रहत है नित्त ।
देह कर्म विसराय करि, आतम सों करि हित्त ॥
दोहा—त्रिकुटी में तीरथ अगम, तिरवेणी जेहि नाम ।
न्हाय योग की युक्ति सूं, पूरण हों सब काम ॥
मन पवना वश कीजिये, ज्ञान युक्ति सों रोक ।
सुरति बांधि भीतर धसै, सूझै काया लोक ॥
मन हिरदे में रहत है, पवन नाभि के मांहि ।
इन्द्रिय रोके ये रुकैं, और कछु विधि नाहिं ॥

चौपाई

पाप होय सो इन्द्रिन काजै । इन्द्रिय रोके सब दुख भाजै ॥
इन्द्रिय वस मन जीता जावै । राम रूप निहिचल घर आवै ॥

छप्पय

नमः सच्चिदानन्द भक्तवत्सल भय हरता ।
शाश्वत असरण सरण करण कारण जगकरता ॥
निराकार निर्लेप निगम निर्दोस निरंजन ।
दीरघ दीन दयालु देव दुख दालदभंजन ॥
अखिलेस अनूपम एक अज अजरामर महिमा अजय ।
निर्विकार नाथ निरभय निपुण नारायण करुणानिलय ॥

शब्द स्पर्श रूप रस गंधा । पंच विषय इन्द्रिय संबंधा ।
सबविधि त्याग करै जब याको । तप अस नाम कहावत ताको ॥
सुमरन श्रवन रु निरखन नारी । भाखत गुह्य वृतान्त उचारी ।
हास्य रती स्पर्षन नहिं सजना । ब्रह्मचर्य अठ मैथुन तजना ॥

मनसे तनसे वचनसे, करै न कोकी घात ।
यही अहिंसा धरम है, कहत वेद साक्षात ॥

चौपाई

शौरज धैर्य जाहि रथ चाका * सत्य शील दृढ़ ध्वजा पताका ।
बल विवेक दम परहित घोरे * क्षमा दया समता रज्जु जोरे ॥
ईश भजन सारथी सुजाना * विरति चर्म संतोष कृपाना ।
दान परशु बुधि शक्ति मचंडा * वर विज्ञान कठिन कोदंडा ॥
संयम नियम शील सुख नाना * अमल अचल मन तूणि समाना ।
कवच अभेद्य विप्र पदपूजा * एहि सम विजय उपाय न दूजा ॥
सखा धर्ममय अस रथ जाके * जीतन कहं न कतहुं रिपु ताके ।

दोहा—महा अजय संसार रिपु, जीति सकै सो बीर ।
जाके अस रथ होइ दृढ़, सुनहु सखा मति धीर ॥

तो लग या मन सदन में, हरि आवैं किहँ वाट ।
विकट जटे जों लग निपट, खुलै न कपट कपाट ॥

जाके सुनत न कान कान को जो सुनवावै ।
सोई तुम जानहु ब्रह्म न यह जाको जग ध्यावै ॥

दोहा—वैसा तो रँगरेज ना वैसा छीपी नांहिं
वैसा कारीगर नहीं, या दुनियां के मांहि ।
अजब २ अचरज किये, अद्भुत अधिक अपार ।
जल थल पवन अकाश में, देखो दृष्टि उघार ॥
सृष्टि वाग माली रच्यो, भांति भांति गुलजार ।
रीझ २ शिर दीजिये, एहो निरख बहार ॥
कवहू जग परगट करै, कवहू करै अलोप ।
नाना विध वाजी करै, आप रहत है गोप ॥

सवैया

आदिहु आनँद अन्तहू आनँद मध्यहु आनँद ऐसे ही जानो।
बंधहु आनँद मुक्तहू आनँद आनँद ज्ञान अज्ञान पिछानो॥
लेटहु आनन्द बैठहू आनँद डोलत आनँद आनँद आनो।
'अगदास' विचारि सबै कुछ आनँद आनँद छांडिके दुःख न टानो॥
आदिहू चेतन अन्तहू चेतन मध्यहु चेतन माया न देखी।
ब्रह्म अद्वैत अखंड निरालँब और न दूसरो आनँद एखी॥
सिंधु अथाह अपार विराजत रूप न रंग नहीं कुछ रेखी।
'अगदास' नहीं शुकदेव नहीं तँह ना कोई मारग ना कोई भेखी॥
जो यह बात विचार करो वह ब्रह्म कहां अरु ढूंढहिं कैसे।
तो वह मान करे न मिले वह वेग मिलै हिय ज्ञान करे से॥
सो जिमि तेल बसै तिल में अरु ऊख संस्कार बसै रस जैसे।
पावक काठ पषान बसै वह ब्रह्म बसै तनमें पुनि तैसे॥

दोहा—सांई तेरा तुज्झ में, ज्यौं पत्थर में आग।
किया चहै दीदार तो, चकमक होके लाग॥
निर्विकार निर्लेप तुहिं, शीतल और अगाध।
क्षोभ रहित चिन्मात्रतें, छूटत सकल उपाध॥
दर्पण के प्रतिबिंब में, बाहर भीतर काच।
तैसे ब्रह्म शरीर के, ऊपर अंदर सांच॥
व्यापक बाहर भीतरै, जैसे घट आकाश।
तैसे सकल शरीर में, निश्चल ब्रह्म प्रकाश॥
जुदे नहीं दरयावतें, बुद बुद फैन तरङ्ग।
तैसे आतम विश्वमय, विश्व आत्म के संग॥

शेर—हाज़िर है जाबजा प्यारा। कहां वह चश्म जो मारै नजारा॥

मान जोग नहिं होत नर, कोउ कोरे पद पाये।
मान जोग नर होत सोई, जो पर हित जग जाये॥
तुलसी रेखा करम की, मेटत नांहीं राम।
मेटै तो कछु देर नहिं, समझ किया है काम॥
राम नाम कहते रहो, धरे रहो मन धीर।
कारज सब ही सारि हैं, कृपा सिन्धु रघुवीर॥

एक श्वास जो जात है, चौध भुवन को मोल।
कहना था सो कह दिया, अब क्या बजना ढोल॥
मुख से रटै जो मानवी, मन में रटै सो देव।
सुरते रटै सो सन्त है, इस विध जानो भेव॥
पारस मणि अरु काम दुघ, कल्प तरू की बाड़॥
तुलसी हरि के भजन बिन, तातैं भलो उजाड़॥
कीने बिना उपाय कछु, दैव कबहु नहिं देत।
खेत बीज बोवै नहीं, क्यौं कर जामें खेत॥
कर्म करत फल होत है, जो मन राखै धीर।
श्रमसे खोदत कूप ज्यों, थल में प्रगटै नीर॥
काजल तजै न श्यामता, मोती तजै न स्वेत।
दुर्जन तजै न कुटिलता, सज्जन तजैं न हेत॥
तुलसी तीनों लोक में, को जानै तन पीर।
हृदया जानै आपना, कै जानै रघुवीर॥
एक भले सब को भलो, देखो सबद विवेक।
जय से सत हरिचंद के, उधरे जीव अनेक॥
एक बुरे सब को बुरो, होत सबल के कोप।
अवगुन अर्जुन के भयो, सब क्षात्रिन को लोप॥
पूनों चन्द कसूंभ रंग, नदी तीर द्रुम डाल।
रेत भींति भुस लीपनो, ये थिर नाहिं जमाल॥
दुतिया चन्द मजीठ रंग, पुरुष वचन प्रति पाल।
पाहन रेख रु करम गति, ये नहिं मिटत जमाल॥
छप्पय—जदपि कुसंग तैं लाभ, तदपि वह संग न कीजे।
जदपि धनी होय निधन, तदपि घट प्रकृति न लीजे॥
जदपि दान नहिं शक्ति, तदपि सन्मान न खुट्टिय।
जदपि प्रीति उर घटै तदपि मुख उपर न टुट्टिय॥
भाइ भतीजा भानजा, और भाट भूपाल।
इतने भक्ष्भा छोड़ि के, अन्त करो व्योहार॥
सवैया—सिंहन के बन में बसिये जल में घुसिये कर में बिधु लीजे।
कान खजूरे को कान में डारि के सांपन के मुख आंगुरि दीजे॥

कूप पिसाचन में बसिये और जहर को घोल हलाहल पीजे ।
जो जग चाहै जियो 'रघुनन्दन' मूरख मित्र कबू नहिं कीजे ॥

दोहा—नेहा सब कोऊ करै, कहा करे में जात ।
करिबो और निबाहिबो, बड़ी कठिन यह बात ॥
छीर होत तृन खायकै, पयतें विष व्है जाय ।
यहि विध धेनु भुजंग रद, पात्र कुपात्र लखाय ॥

कुंडलिया—माया माया करत है, खाया खरच्या नांह ।
आया ऐसा जायगा, ज्यों बादर की छांह ॥
ज्यूं बादर की छांह जायगा आया जैसा ।
जाण्या नहिं जगदीश प्रीत कर जोड्या पैसा ॥
कहै दीन दरवेश काहे को धारी काया ।
खाया खर्च्या नांहि करत है माया माया ॥

कवित्त ।

कबू एक हाकम हुकम कुल आलम पर कबू एक कूरे बोल लोकन के सहिये ।
कबू एक ऊंची अटा बैठ घन घटा जोत, कबू एक झोंपड़ी में मेघ बूंद सहिये ।
कबू एक भोजन छत्तीसों बनायखात कबू एक रूखी भाजी बिना लून लइये ।
हारिये न हिम्मत बिसारिये न हरिनाम जाही विध राखै राम ताही विध रहिये ।

सवैया—कबहू मन रंग तरंग चढ़ै, कबहू मन सोचत है धन को ।
कबहू मन मानुनि देखि चलै, कबहू मृग होय फिरै वनको ।
कबहू मन रंग में भंग करै, कबहू मन सोचत है धन को ।
सुविचारि कहै तुलसी नर ! तू कर शांत सदां कपटी मनको ॥

दोहा—अण घटती इच्छा करै, करै अण दिठी बात ।
'कह ठाकुर' सुन ठकरा, एही मूरख जात ॥
नाम रहंता ठाकरां, नाणां नाहिं रहंत ।
कीरति केरां कोटडां, पाड्या नाहिं पडंत ॥
पत्थर पूजै हर मिलै, मैं पूजूं गिरिराय ।
इहिं पत्थर चक्की भली, पीस खाय संसार ॥

कवित्त

जस को सवाद सोई सुनिये पराये कान गान कोसवाद सोई हरिगुण गाइये
जीभको सवाद बुरे बोलिये न काहू सँग संपतको सवाद सीस सबैं नवाइये

घरको सवाद जवै एकीसंप होइ चलै देहको सवाद सो निरोग देह पाइये ।
एतो सुख के सवाद केशव दास कहै खाने को सवाद कछु और कों खवाइये ।

घर के सुख, दुःख ।

सवैया—मित्र मिलाप मिलेहि रहै आठहू याम कुटुम्ब कहेमें ।
धर्म्म सधे वढ़ै भर्म सदा रहैः रायगुपाल जु वाम कहेमें ।
वंश वढ़ै जग होत प्रशंसित लै वटु अंश रहै सो छएमें ।
गाममें नाम सरै सब काम सो एते अराम हैं धाम रहेमें ॥

रामको नाम न लेवे वनैं रुजगारको भोरतैं साम लों भीकैं ।
कामनके सड़सेते गुपाल जु आठहु याममें माम न जीकैं ।
दारिद धामतैं ठामहुमें सुख सांझ समाज सबै दिन फीकैं ।
दाम विना निज गाममें वास अराम न आवत धाममें नीकैं ॥

गृहस्थाश्रम के सुख, दुःख

कवित्त

चारिहु वर्ण चारि आश्रमको मूल यही याहीतें सकल अवादानी होति वस्ती है ।
वंश वढ़वारी व्याह शादी भोग राग सुख रहत है यामें पुण्य दान जबरदस्ती है ।
सुकवि गुपाल यातैं जगतके जीमें जीव सदा सबहीकी भयो करै परवस्ती है ।
तनुकी दुरुस्ती रहै धनकी न सुस्ती तोपै पृथ्वीके मांझ सर्वोपरि गृहस्थी है ॥

रात दिन यामें,केई खरच लगेही रहैं आयो गयो व्याह गौन गमी औ बधाई है ।
विषयके भोग कर्म योगके वियोग योग जिकिरि फिकिरि मारै आपनी पराई है ।
सुकवि गुपाल भाव भजन वनैं न वामें परयो रहै सदा मोहजालमें महा ही है ।
करत कमाई तऊ रहै हाई २ यातैं सबतैं सवाई दुखदाई ये गृहस्थाई है ॥

स्त्री के सुख, दुःख ।

कवित्त

घरको रखावै सुख सम्पति वढ़ावै काम तपति मिटावै चित्त चिन्ता को नशावै जो ।
भोजन जिमावै नित सुखमें गमावै दिन हित उपजावै हिय कुशल मनावै जो ।
उद्यम लगावै जग जस करवावै सब दुखन नसावै भली टहल बनावै जो ।
सुकवि 'गुपाल' घर ऐसी नारी आवै जोपै जीवत ही जग में मुकति नर पावै जो ॥

वृथा ठान ठानै दया धरम न आनै दुख हीनको भानै साधु संग न पिछानै है ।
भरी अभिमानै समझै न लाभ हानै पाप पुण्यको न छानै हिय अधिक अज्ञानै है ।

गहकिकै सुकवि 'गुपाल' गुण गानै नाहीं डोलै नित धनकी उमंग तान तानै है ।
हरिको न आनै मोहमायाहीमें आनै तिय स्वारथही जानै परमारथ न जानै है ।

दोहा—परमारथ समझै नहीं, स्वारथ में लवलीन ।
ऐसी या संसार में रहत नारि मति हीन ॥

सेवा निन्दा ।

कवित्त

कहनो परत नित रहनोपरत पास सहनों परत यामें भली औ बुरीको है ।
चाकर कहावै बड़ो दरजा न पावै भारी नामको घटावै औ हटावै हितहीको है ।
कहत 'गुपाल' देह विकति पराये हाथ, मारधार परै यामें होत ज्यान जी को है ।
कुंजस को टीको मोहि लागत न नीको यातें सबही में फीको यह काम चाकरीको है ।

सोरठा—बुध विद्या गुन ज्ञान, नेम चाव औ हर्षवल ।
ए तज होय अयान, जिहि घट विरहा संचरै ॥

दोहा—विरह लपत अतिही कठिन, जानत है सब कोय ।
देख सती या आगि को, जर कै सीतल होय ॥
प्रीति जो सीखो ईख सों, जहँ जा रस की खान ।
जहां गांठ तहँ रस नहीं, यही प्रीति की वान ॥

सवैया—अंबरतैं अति ऊंची वहै अरु ओंडी रसातल हूतैं अथारी ।
तूहिनके गिरितैं अति सीतल पावक तैं अति जारन हारी ।
माहुतैं कटु अति मीठी सुधाहुतैं झीनी अनुतैं सुमेरतैं भारी ।
जानत जान अजान न मानत सागर बात सनेहकी न्यारी ॥

दोहा—सुधरी बिगरै वेगही, बिगरी फिर सुधरै न ।
दूध फटै कांजी परै, सो फिर दूध बनै न ॥

कवित्त

वैर प्रीति करिबे को मनमें न राखै संक राजा राव देखि कै न छाती धकधाकरी ।
आपनी उमंग की निबाहिवे की चाह जिनै एक सी दिखात तिन्हैं बाघ और बाकरी ।
ठाकुर कहत मैं बिचारि देख्यो येही मरदानन की टेक बात आकरी ।
गही जौन गही जौन छोड़ी तौन छोड़दई करी तौन करी बात ना करी सो ना करी ॥

ईसके भजन में न भूसुरके तैंनमन रंक धाम अन में कहूं न वृन्दावन में ।
ज्ञाति गुरुजन में न धोखे पित्रगन सें न उठै कवित्तन में न वेद उच्चरन में ।

कहै कवि राम ते बसत भेततन में विचारि देखो मनमें दया न जाके तनमें।
कहा परगन में वनाय धनी गनमें न लागै हरिजन में तो थूक ऐसे धन में ।।
गुन बिन धन जैसे गुरु बिन ज्ञान जैसे मान बिन दान जैसे जल बिन सर है।
कंठ बिन गीत जैसे हित बिन भीति जैसे वेश्या रसरीति जैसे फल बिन तर है।
तार बिन जंत्र जैसे स्याने बिन मंत्र जैसे पुरष बिन नारि जैसे पुत्र बिन घर है।
'टोडर' सुकवि तैसे मन में विचारि देखो धर्म बिन धन जैसे पत्ती बिना पर है।
ताल फीको अजल कमल बिन जल फीको कहत सकल कवि हवि फीको रूम को।
बिन गुन रूप फीको ऊसर को कूप फीको परम अनूप भूप फीको बिन भूमको।
श्रीपति सुकवि महावेग बिन तुरी फीको जानत जहान सदा जोह फीको धूम को।
सेह फीको फागुन अबालक को गेह फीको नेह फीको तियको सनेह फीको सूम को।

छप्पय

टका करै कुतूहल टका मिरदंग बजावै, टका चढ़ै सुखपाल टका सिर छत्र धरावै
टका माई अरु बाप टका भाइन को भैया, टका सासु अरु सुसुर टका सिर लाड़ लड़ैया
सो एक टका बिन टुक टुका, होत रहम नित राति दिन।
वैताल कहै विक्रम सुनहु, धिक जीवन इक टके बिन ।।

दोहा—सम्पति सम्पतिमान को, सब कोई सब देय।
दीनबन्धु बिन दीन की, को 'रहीम' सुधिलेय।
दीनहिं सब कहँ लखत है, दीन लखत नहिं कोय।
जो 'रहीम' दीनहिं लखै, दीन बन्धु सम होय ।।
धन अरु योवन को गरब, कबहू करिये नाहिं।
देखत ही मिटि जात है, ज्यों बादर की छांहिं ।।
सायर सूर सपूत को, बोली में लख जात।
कायर कूर कपूत को, चहरो चुगली खात ॥
जान बूझ अनुचित करै, तासों कहा बसाय।
जागत ही सोवत रहै, ताकों कहा जगाय ।।
बुद्धिमान गंभीर को, संगत लागै नाहिं।
ज्यों चंदन ढिग अहि रहत, विष न होय तिहिं माहिं ।।
नैन सलोने अधर मधु, कहु 'रहीम' घट कौन।
मीठो भावै नोन पर, अरु मीठे पै नोन ।।
नेह निबाहन कठिन है, फिरयौ जगत सब जोय।
विमल प्रीति नहिं देखिये, स्वारथ बस सब कोय ॥

नीति प्रकरण

दोहा—चतुर समय मत चूकियो, कही कहत हैं कूक ।
चतुरन के सालत सदा, समय चूक की हूक ॥
काहू तैं कड़वे वचन, मत कह कबहूं जान ।
तुरत मनुज के हृदयको, छेदत है जिमि बान ॥
अंग भंग काना बहिर, कूबड़ लंगड़ देख ।
कीजे नहिं उपहास कछु, आपन हित अवरेख ॥

चौपाई-बालक अधिक मातु ढिग रहहिं । तातैं सब गुण मातु के लहहीं ॥
यह मैं निज मन में अनुमाना । माता तैं सुधरैं संताना ॥
यातैं तुम रहुउ सदा सुचाली । बालक होवैं नहीं कुचाली ॥
कर प्रबन्ध अस उत्तम जानी । जातैं हों बालक गुण खानी ॥
विद्यालय में सदा पठाओ । शुभ शिक्षा पर ध्यान लगाओ ॥
पढ़ने में मत करो दुलारा । मूरख रहैं नहिं बाल तुम्हारा ॥
चाहै पुत्र पुत्री कोउ होई । बिन भय के सुधरैं नहिं कोई ॥
जो चाहो तुम कुल अकलंका । तो ताड़नहिं करो नहिं शंका ॥
बिगरैं जो बालकपन माँहीं । ते आयू भर सुधरैं नाहीं ॥
बालकपन स्वभाव जो होई । ताहि निवारि सकै ना कोई ॥

दोहा—कम पढ़ना गुणना घणा, यह बुधजन की रीति ।
तातैं समझ पढ़ीजिये, या में मोक्ष सुभीत ॥
विद्या धन की चिंतना, करिये करि कै ध्यान ।
निश्चय अपने जीव कों, अजर अमर सम जान ॥
बालकपन में बात ज्यो, धसै हृदय के बीच ।
सो निकसैगी ता दिना, जब आवैगी मीच ॥
तात मात अरु मित्र सम, हितकारी नहिं कोय ।
इन्हैं छांड़ि कारण विना, नहिं हितकारी होय ॥
मन थिर करिये विपद में, कर घबराहट दूर ।
धीरज के अवलंब तैं, सुवख होत भरपूर ॥

विपद काल के बीच में, जब जब डूबै चित्त ।
वृद्ध सुजन सों जाय के, मन्त्र पूछिये नित्त ॥
भूषण नर के हैं नहीं, वर हारादि अनेक ।
सब तैं उत्तम जानियों, वाणी भूषण एक ॥

सोरठा–जो होती नहिं नार, मदमाती मृगलोचनी !
जगके परली पार, गमन न दुर्गम कछुक था ॥

चौपाई–शूद्र गँवार ढोल पशु नारी । सकल ताड़ना के अधिकारी ।

दोहा–हुती गरज मन और था मिटी गरज मन और ।
उदेराज मन की प्रकृति रहे न एको ठौर ॥

कुंडलिया–परनिन्दा परनारि अरु, परद्रव्यन की आस ।
छांड़ि तीनही बात कों, भजो एक अविनास ।
भजो एक अविनास तबै एक जगनाथनिवाजै ।
जन्म मरण जंजाल प्रभू सों पल पल भाजै ।
हरि गुरु बिन हरिदास सिंधु ये तरनो भारी ।
तजो तीन को संग द्रव्य निन्दा परनारी ॥

कवित्त

हिल मिलजानेतासूंहिल मिललीजेआप, हिलमिल न जानै ऐसोहितूनाविसाहिये ।
होयगरूर तासों दूनीमगरूरी कीजे, लघुता व्हैचलै तासों लघुतानिबाहिये ।
बोधा कवि नीतिकोनिबेरो इहिभांति करो, आपकोसराहै ताहि आप हू सराहिये ।
दाताकहा सूरकहा सुन्दर प्रबीन कहा, आपकों न चाहै ताहि आपहू न चाहिये ।

दोहा–तुलसी जहां विवेक नहिं तहां न कीजे वास ।
सेत सेत सब एक से, करर कपूर कपास ॥

चौपाई-ऐसो जन्म बहुरि नहिं पै हो । बीति जाय पुनि बहु पछतै हो ॥
मनुष देह या दुर्लभ जानो । वाकों पा शुभ करनी ठानो ॥

दोहा–मोह शहत सम जानिये, मक्खी सम जिय जान ।
लालच लागे जित फंसे, सीस धुनै अज्ञान ॥
जग मांही ऐसे रहो, ज्यौं अम्बुज सर मांहि ।
रहै नीर के आँसरे, पै जल छूवत नाहिं ॥

जग माहीं ऐसे रहो, ज्यों जिव्हा मुख मांहि ।
घी रसना भोजन करै, तोऊ चिकनी नाहिं ॥
दया गहे तें सब नसें, पाप ताप दुख द्वन्द ।
ऐसी परम पुनीत को, तजै सो मूरख अन्ध ॥
चल्यो करै थिर ना रहै, कोटि जतन करि राख ।
यह जबही वस होयगा, इन्द्रिन के रस नाख ॥
हरिकी राह भुलाय करि, दीनों कुटुम्ब चिताय ।
तातें दुख जग में घने, चौरासी भरमाय ॥
आपा मेटे हरि भजे, तन मन तजे विकार ।
निर्वैरी सब जीवसों, दादू यहु मत सार ॥
दादू पत्थर सेदिया, अपना मूल गंवाइ ।
अलख देव अंतर बसे, और जगह किमि जाइ ॥
सोचि करै सो सूर है, करि सोचै सो कूर ।
सोचि करै मुख नूर है, करि सोचै सिर धूर ॥

पत्थर पीवें धोइकरि, पत्थर पूजें प्रान ।
अन्त काल पत्थर भए, वहु बूड़े इहि ज्ञान ॥
सोई जन सांचे सती, साधक सोइ सुजान ।
सोइ ज्ञानी सोइ पंडिता, जे राते भगवान ॥
जो तू चाहै राम को, एक मना आराध ।
दादू दूजा दूर करि, मन इन्द्रिय करि साध ॥
दिनको हरि सुमिरण करो, रैन जागि कर ध्यान ।
भूख राखि भोजन करो, तजि सोवनकी बान ॥
पृथ्वीसा धीरज धरै, जलसा निर्मल होय ।
तेज अग्नि सा तास में, वायु सा व्यापक होय ॥
सोरठा । गुण औगुण जिण गांयँ, सुणै न कोई सांभलै ।
मच्छ गला गल मायँ, रहणौ मुसकिल राजिया ॥
मुख ऊपर मीठास, घट मांहे खोटा घड़ै ।
इसड़ासूं * इकलास, राखीजे नहि राजिया ॥

* सम्बन्ध ।

मुतलब री मनवार, चुपकै लावै चूरमा ।
मुतलब बिन मनवार, राब न पावै राजिया ।।
जगा २ रो सुख जोय, ÷ नहचे दुख कहणो नहीं ।
काढ़ न दे वित कोय, रीरायांसूं राजिया ।।

दोहा—रेमन ! भली न होसकै, बुरी करन मत जाय ।
अम्मृत फल चाखै नहीं, विष काहे को खाय ।।

चौपाई

संत असंतन की अस करणी । जिमि कुठार चन्दन आचरणी ।।
काटे परसु मलय सुन भाई । निज गुण देह सुगन्ध बसाई ।।

दोहा—तातें सुर सीसनि चढ़त जगवल्लभ श्रीखंड ।
अनलदाह पीटत घनहि, परसु बदन यह दंड ।।

कवित्त

बालपने ब्याहो सोहि विद्या पढ़वे को वक्त, अष्टवर्षा गोरी वह गटाक गिटजाती है ।
पोते हित आप वेग देवता मनायो याने, हमारी जवानी तो पटाक मिट जाती है ।।
अन्य देश वासिनकी उन्नति सु देख २, हमरी सुबुद्धि सो सटाक सटजाती है ।
ऐसी पाटीहीकी कई आंत आड़ी घाटी, आप मेटो तो फटाक मिटजाती है ।।

दोहा—मांगन मरन समान है, मत कोइ मांगो भीख ।
मांगनतैं मरना भला, ये बुधजन की सीख ।।
पढ़ना गुणना चातुरी, ये तो वात सहैल ।
काम दहन मन वसकरन, गगन चढ़न मुसकैल ।।

छप्पय—सज्जन सों हित रीति दया परिजन से भाखहु ।
दुर्जन सों सठ भाव प्रीति सन्तन प्रति राखहु ।
कपट खलनसों राखि विनय राखो बुध जनसों ।
छमा गुरू सों राखि सूरता वैरीगन सों ।।
जुबतिन संग करि धूर्तता, जो तू जग वसिवो चहै ।
अति ही कराल कलिकाल है, इम चालन सों सुख लहै ।।

दोहा—जामें गुन अवलोकिये, करिये ताहि मंजूर ।
बाल बचन हू मानिये, होय नीति भरपूर ।।

÷ 'नासत दुःख' ऐसा भी पाठान्तर है ।

जेते जग में मनुज हैं, राखो सबसों हेत।
को जाने केहि काल में, विधि काको संग देत॥
तीन बात नहिं कीजिये, जहां प्रीति की चाह।
जूआ धन व्यवहार अरु, अबला और निगाह॥
वाद विहार अहार रन, नृत्य गीत व्यवहार।
नारि सदन ये आठ थल, लाज त उचित उदार॥
नृपति मृतक विन राजको, विप्र मृतक विन कर्म।
धन विन मृतक गृहस्थ है, जती मृतक विन धर्म्म॥
रहिमन पानी राखिये, विन पानी सब सून।
पानी गए न ऊबरै, मोती मानुप चून॥
बालक योगी देव नृप, विप्र वृद्ध गुरु लोग।
नीति पुकारत है यही, यहे न क्रोधहि जोग॥
मन मतंग अंकुश अकल, सांकल हया शरम्म।
चरखी दोऊ नैन है, स्हावत एक धरम्म॥
सुन्दर तबही बोलिये, समुझि हिये में पैठि।
कहिये बात विवेक की, नां तर चुप है बैठि॥

सोना रूपा पाय के, करहु दान सन्मान।
असन बसन सुख प्रभु भजन, याही में कल्यान॥
अति अहार अति क्रोध अरु, अति शमता दुख जान।
अति क्रीड़ा अति बोलबो, तजत त्रास मतिमान॥
अति विद्या अति सम्रृति अरु, अति उछाह अति ख्याति।
अधिक पुन्य अति धीरता, साधहु सुत दिन राति॥
आदर दै विद्वान को, गुणु को करि सन्मान।
प्रिय बानी अरु न्यायरत, करो सुपात्रहि दान॥

दीन वृद्ध बालक त्रिया, बिन अपराध अनाथ।
तिनकी रत्ता कीजिये, वित्त बुद्धि बल साथ॥
आयु बल जस सौख्यधन, पुराय प्रजादि प्रभाव।
वृद्धि होत जेहि कर्म तैं, सो सेवहु करि भाव॥

चौपाई-जब आपत आवत सिर भारी। सुज्ञ चलत तब समय विचारी।
नृप हरिचन्द्र विषम गति जानी। तजि मद भर्यौ श्वपच घर पानी॥
दोहा—धर्म नीति के वचन को जो नहिं करै प्रमान।
उत्तर ताकी बात को, चुप नित गनै सुजान॥
जाके केवल वचन है, कर्म न वच अनुसार।
ताकी सीख न मानि है, श्रोतौं[2] देखनहार॥
वाहू को तू कर भलो, करै जो तेरो मन्द।
टुकड़ो देके कीजिये, कुक्कुर को मुख बन्द॥
सम्पति तेरे हाथ है, वासों लै कछु काज।
परि है औरन हाथ यह, जो है तो पै आज॥
देवो अवसर को भलो, जासों सुधरै काम।
खेती सूखे बरसबो, घनको कोने काम॥
तजि कुकर्म चित शुद्ध रख, फिर नहिं भय को लेस।
रजक पछारत सिल सदा मैले वसन विसेस॥
चौपाई—वैभव पाय करो शुभ करनी। हाथों हाथ जाय धन धरनी॥
सुखरस मिलै दुःख कछु पाई। घन अँधेर दीपककी नाई॥
दोहा—अति दुरलभ नर देह धरि, करि कछु सुकरत काम।
यही सार संसार में, जो चाहसि आराम॥
बार बार नर तन नहीं, कहै शास्त्र अरु संत।
तातें सुकरत कीजिये, कै भजिये भगवंत॥
सो इय नृप गुरु तिय अनल, मध्य भाग जग मांहि।
है बिनास अति निकट तें, दूर रहें फल नांहि॥
शेर—बदी जो करै तो खुदा की सज़ा है॥
सदा नेक रहना इसी में मज़ा है॥
दोहा—मैथुन मंत्ररु औषधी, दान मान अपमान।
आयू वित्त गृह छिद्र ये प्रगट न लाल बखान॥
धन मद यौवन मद महा प्रभुता को मदपाय।
तापर मद को मद जिन्हैं, को तिहिं सके सिखाय॥

---

१ चाण्डाल। २ सुननेवाले।

१२ मास में १२ चीजें

चैते गुड़ वैसाखे तेल। जेठे पन्थ आषाढ़े बेल
सावनसाग न भादों दही। कार करेला कातिक मही॥
अगहन राई पूसे धना। माघे मूली फागुन चना॥

आडम्बर तज कीजिये गुन संग्रह चित चाय।
गऊ बिकै नहिं छीर बिन घानिय घंट वँधाय॥

तुलसी मीठे वचन तें सुख उपजत चहूं ओर।
वशीकरण यह मन्त्र है तजिये वचन कठोर॥
तिनका कबहु न निन्दिये जो पावन तल होय।
कबहूं उड़ आंखों पड़ै पीर घनेरी होय॥
कोटि कर्म लागे रहैं एक क्रोध की लार।
किया कराया सब गया जब आया अहंकार॥
देह विषै बल नेह धन जस इत पुन्य परलोक।
चार बचाये इन्द्रियन कीजे भोग अशोक॥
कहनी मीठी खांड़सी करणी विष सी होय।
जे कहनी करणी हुवै तो विष भी अमृत होय॥

सवैया—मजबूतिपनो रखनो मन में दुख दीनपनो दरसावनो ना।
बहनो कुल रीति सुमारग में हिय तें हरि हेत हटावनो ना॥
चिमनेश खुबी हंस बोलवै में बिन स्वारथ वैर बढ़ावनो ना।
उपकार भलाइ करो तो करो मरजावनो है फिर आवनो ना॥
गृह स्वारथ होकि कुस्वारथ हो गहि बात पछै सिट जावनो ना।
राम भरोसे कियो सो कियो करि काम पछै पछतावनो ना।
चिमनेश या हीमत कीमत है तज हीमत लोक हंसावनो ना।
विखमी सिर आन बनै तो बनो दुख देख घनो घबरावनो ना॥

शेर

अगर तू किसी को सताता रहैगा। तो तू भी जहां में दुःख पाता रहैगा॥

कहावतें—बिन विद्या के नर अरु नार। जैसे होवैं गधा कुम्हार।
खेती करे न बनजे जाय। विद्या के बल बैठा खाय।
बालू की भींत ओछे का संग। पातुर की प्रीत तितली का रंग॥

वेश्या निषेध

दोहा—ब्याह समय सौभाग्य में रांड़ नचावें भूल।
मंगल में अशगुन करें पड़ी बुद्धि पै धूल॥
स्वाभाविक अबला चपल करत चित्तकी हानि।
सहस गुणी वेश्या अधिक चंचलता की खानि॥
रंडिन की विद्या यही कोटिन छल इन मांहि।
यह इनको व्यापार है प्रति दिन लूटहि खांहि॥
नव कुमार धन युक्त शठ जो कबहूं मिलिजाय।
खीर खांड़ मानो मिली झट ही लेवें खाय।

चौपाई-जब से वेश्या नृत्य चलायो। संतति को विध्वंस करायो।
राज काज धन धाम नसाये। धर्म्म कर्म्म सब धूल मिलाये।
यह कुरीति जब से अधिकाई। पिता पुत्र मर्याद गमाई।
नाच रीति जग मांहि चलाई। संतति हित विष बेल लगाई।
जगत् मांहि जितनी हैं नारी। पुरुष चित्त सब हरने हारी।
वेश्या सहस गुणी अधिकाई। इन में है अति चंचलताई।
होली, ब्याह बरात बसेरे। नूतन पत्नी जुरें घनेरे।
अधिक दाव इनको तहँ लागे। तरुण पुत्र फँस जाँय अभागे।
तान गान बहु जाल बिछावैं। रूप बनाय चुगा दिखलावैं।
तुम्हरे सुत पत्नी फँस जावें। कोटि यत्न छूटन नहिं पावें।
तरुण पुरुष को जो कहुं पावैं। लपक झपक दूनी दिखलावैं।
नयन फँास उरझावत नीके। अधिक फँसत हैं पूत धनीके।
नूतन चटक मटक दर्शावें। कोटि यतन करि चित्त चुरावें।
मधुर वचन गुरु मंत्र सुनावें। छल बल कर निज शिष्य बनावें।
जे बस पड़ि हैं इन ठगिनी के। काट कलेजा खावहि नीके।
ये डायन लड़कन को खावैं। धनपति की चटिनी कर जावें।
नव कुमार सब इनके खाजा। इनतें बचें न रैयत राजा॥

दोहा—सदा सुहागिन हे सखी निज रोटी अरु नार।
दाम लगै अवगुन करैं पूरी अरु पर नार॥

इसके शिष्य न होंहि किसीके । रहत जनम भर दास उन्हीं के ॥
कुल कुटुम्ब सब लागत फीके । ढिग नहिं आवें निज नारी के ॥
एक बार जो दर्शन पावें । गुरु ईश्वर से ध्यान हटावें ॥
मात पिता के वचन न भावें । बस कुसंग दुष्कर्म कमावें ॥
पुरुपन की सम्पत्ति नशावें । धन न रहे शिर धुन पछतावें ॥
द्रव्य हेतु निज मात सतावें । नारिन के भूषण ले जावें ॥
तृष्णा के वश जुआ मचावें । निज घर पर का माल चुरावें ॥
राज मांहि जब पकड़े जावें । निज पुरुपन की नाक कटावें ॥
नारि पुरुष में खटपट होवें । प्रीति रीति घर की सब खोवें ॥
कुल मर्यादा देइ मिटाई । परमारथ की कहा चलाई ॥
पृथक नारि डायन कहुं नाहीं । यही प्रबल डायन जग माहीं ॥
देखत ही घायल करि डारैं । दृष्टि मात्रतैं प्राण निकारैं ॥
प्राण जाय उत्तम कर जानो । कोटि मृत्यु सम याहि पिछानौं ॥
सर्प डसे जग में बचजावे । इनके मारे जनम गमावें ॥
शूकर आदि योनि में जावें । कोटिन जन्म महा दुख पावें ॥
सर्पन के मुख में विष अहहि । गरल रूप वेश्या तन कहहि ॥
सर्प डसे तन के ढिग आवै । इनको विष देखत चढ़ि जावै ॥
है प्रत्येक अंग विष खानी । जिहि लखि मरें चतुर अज्ञानी ॥
रोम रोम विष पूरित जानो । नख सिख विष का सिन्ध पिछानो ॥
एक हू अंग दृष्टि जो आवे । तुरतहि विष तन माहि समावै ॥
जो कहुं हँसि कै वचन सुनावैं । ज्ञान बुद्धि सब सुधि विसरावै ॥
कविजन कहत मधुरता नीकी । सो अति विषवत वैरिन जीकी ॥
वेश्या वचन मधुर मत जानो । विषका सार ताहि पहिचानो ॥
अग्निवाण सम नयन दगारे । तजत नाहिं बिन जान निकारे ॥
चंदन वन सम शुभ कुल भारी । वेश्या तहि जलावन हारी ॥
परम शत्रु रोगन की क्यारी । धन छिनाय झट करत भिखारी ॥
विद्या सुमति नशावन हारी । तीनों ताप तपावत भारी ॥
सत्य शील संतोष नसावै । धर्म धैर्य शुभ शान्ति नसावै ॥
चोरी ठगी जुआ खिलवावै । बड़े बड़े पातक करवावै ॥

पर नारी पैनी छुरी तातें दूरहि भाज ।
रावण से राजा मरे पर नारी के काज ॥
तनक कंकरी परत ही नैन होत बेचैन ।
वे नैना कैसे रहैं गड़त नैन में नैन ॥
निज पति तजि पर पति भजैं तिय कुलीन नहिं होय ।
मरे नरक जीवत जगत् भलो कहै नहिं कोय ॥
आरत गिनै न आपदा अर्थी गिनै न दान ।
कामी जन कुल लाज को याचक निज अपमान ॥
धर्म्म कर्म कुल भक्षिणी, संतति खावनहार ।
वेश्या है अति राक्षसी, बुधजन कहत पुकार ॥

सेवा निन्दा ।

चाहे कुटी अति घने वन में बनावे, चाहे विना नमक कुत्सित अन्न खावै ।
चाहे कभी नर नये पट भी न पावै, सेवा प्रभो ! पर न तू पर की करावै ।
सेवा समान अति दुस्तर दुःखदाई, दुर्वृत्ति और अवलोकन में न आई ।
जीना कभी न जगमें उसका भलाहै, जो पेट हेतु पर सेवन को चला है ।
स्वातंत्र्य तुल्य अतिही अनमूल्य रत्न, देखा न और बहु वार किया प्रयत्न ।
स्वातन्त्र्य में नरक बीच विशेषता है, न स्वर्ग भी सुखद जो परतंत्रता है ॥

स्फुट कविताएं

दोहा—जहां न जाको गुण लहै, तहां न ताको काम ।
धोबी बसिकैं का करै, दिगंबरनके ग्राम ॥
सोरठा—धिक् यौवन धिक् रूप, धिक् धिक् योग्य कुलीनता ।
गुण धिक् परम अनूप, बनिता धिक् बिन शीलयुत ॥
दोहा—जो रीकै जिहि भांति सों, तैसे ताहि रिझाय ।
पीछे युक्ति विवेकतैं, अपने मत पर लाय ॥
सर्वस छांड़ि परी तिहि के वश, छांड़त नहिं दिन राती ।
ऐसी प्रीति मीन की देखत, जल की फटी न छाती ॥
नीच निचाई नहिं तजै, जो पावै सत्संग ।
तुलसी चंदन विटपि बसि, विष नहिं तजत भुजंग ॥
आवत ही हर्षै नहीं, नैनन नहीं सनेह ।
तुलसी तहां न जाइये, कंचन बरसै मेह ॥

संगत

कुण्डलिया—संगत ही गुण ऊपजै, संगत ही गुण जाय।
स्वांति बूंद मुख सर्प के, पड़त जहर हो जाय॥
पड़त जहर होजाय पड़े वह सीप के मांई।
संगत के परताप सीप मोती हो जाई।
महिमा ये सत्संग की, ऐन कहे समझाय।
संगत ही गुण नीपजे, संगत ही गुण जाय॥

दोहा—तुलसी हम जबहू लखे, ऐसे गरीबनिवाज।
मणि माणिक मंहगे किये, सोंघे तृण जल नाज॥

कवित्त

चलिबो गगन पंथ मिलबो मिहिर लोक दलबो रिपु को दल शस्त्रन विहीन है।
धरिबो धरा को भार तरिबो निधि को वार, हरिबो हरा को हरि करिबो अधीन है॥
खायबो हलाहल को, ल्यायबो फनींस मनि धायबो खगेश संग बने कोऊ दिन है।
रहिबो अहार बिन, कहिबो भविष्य होन सबही सहल काम रहिबो कठिन है॥

पैसा :

आलम में खैर करते हैं पैसे के जोरसे, बुनियाद दैर करतेहैं पैसे के जोरसे।
दोज़ख से तैर करते हैं पैसे के जोर से, जिन्नतकी सैर करतेहैं पैसे के जोर से॥
तेगो सिपर उठाते हैं पैसेके चाट पर, तीरो सना लगातेहैं पैसे के चाट पर।
मैदां में ज़खम खाते हैं पैसे के चाट पर, यहां तककि सर कटाते हैं पैसेके चाटपर॥
पैसा जो होयतो देवके गर्दनको काटलाय, पैसा न होतो मकरेके जालसे खौफ खाय।
पैसा ही रंग रूपहै पैसा ही मालहै, पैसा न हो तो आदमी चरखे की मालहै।
पैसे हीका अमीरके दिल में खयाल है, पैसे हीका फकीर भी करता सवाल है॥

दोहा—जाहि पर्यो जैसो विसन ता बिन रहत न सोय।
सुरा सुरापी ना तजै जदपि बिकल गति होय॥
जो जाको प्यारो लगै सो तिहि करत बखान।
जैसे विषको विषभखी जानत सुधा समान॥
तुलसी कबहु न कीजिये वणिक पुत्र विश्वास।
घट तोलै अरु धन हरै रहै दास को दास॥

धोला तो सबही भला धोला भला न केश ।
वैरी डरै न तिरिया टरै आदर दे न नरेश ॥
चित्त देउ तो वित्त देउ वित विन चित्त निवार ।
कर सुरता अरु निरधना दो दो धक्का न मार ॥
जो कोइ करणी ना करै बहुत करै बकवाद ।
रीता जानों तासु को छूटै ना जग व्याध ॥
प्रभु को चिन्ता सबन की आपन करिये नांहि ।
जनम अगाऊ भरत हैं दूध मात थन मांहि ॥

कवित्त

सुख पुंज कहै यारो जरा यह तो विचारो है यह देह हाड़ चामकी ।
बुरो मत मानो हरतें न कछू छानो जनम जात है विरानो सुधि लेओ हरि नामकी ॥
खाया न खवाया योंही जायगी यह काया दौलत कमाइ संग चलै ना छदामकी ।
वही सुरज्ञानी पर पीरकी पिछानी परउपकारकी न जानी तो जवानी कौन कामकी॥

दोहा—रण में वन में दुर्ग में विषम आपदा मांहि ।
जिनके धीरज अंग है उनको भय कछु नांहि ॥
ज्ञानी पंडित चतुर नर नट नारी अरु भट्ट ।
इनसे कपट न कीजिये इनके रचे कपट्ट ॥
बहुत बोलबो डोलबो आलस क्रोध आनन्द ।
वसै सकल जा नृपति में होत राज को भंग ॥

दोहा—आदि अंतलों आयकरि सुकृत कछू ना कीन्ह ।
माया मोह मद मत्सरा स्वाद सबै चित दीन्ह ॥

सवैया—सत संगतको फल नांहि लियो हियमें नहिं जोत अखंड जगी ।
मृग नैनी त्रियाके कटाक्षनकी उर में नहिं आन के खूबि खगी ॥
गृह सोनेको दीपक योंहि भयो नहिं जोग रु भोगमें प्रीति पगी ।
जुग जीवन जन्म वृथा तिनको गल शैली लगी न नवेली लगी ॥
कबहू नहिं आसन दृढ़ कियो कबहू नहिं हरि सों प्रीति पगी ।
कबहू नहिं मित्र को काज कियो कबहू नहिं शत्रु की दाह जगी ॥
कबहू नहिं दान दियो करसे नहिं जोग रु भोग में प्रीति पगी ।
जुग जीवन जन्म वृथा तिनको गल सेली लगी न नवेली लगी ॥

दोहा—लोभ पाप को मूल है लोभ मिटावत मान।
लोभ कभी नहिं कीजिये यामें नरक निदान॥

कवित्त

जीविकाके काज नर कुटुम कबीलो त्यागे जीविकाके काज सूर करै सूरताई है।
जीविकाके काज नर चाकरी पराई करै जीविकाके काज परदेश रहै छाई है॥
कहत गुपाल कवि जीविका अधीन जीवका विगार होत औ फिकिरि सवाई है।
पाय जिन्दगानी सब जगत के जीवन को जीवहू तें प्यारो यह जीवका बनाई है।

चौपाई—कीड़ी गत तब, पदतर ऐसी। कुंजर पदतर तबगत जैसी॥

सवैया—लाख घटो कुल कान न छोड़िये वस्त्र फटैं प्रभु औरन दै है।
द्रव्य घटे मुख ना नहिं कीजिये दै है न कोऊ व लोक हंसे है।
पैरे तो जाने समुद्र को पैरबो वेरो कहूं कि किनारे लगे है।
हिम्मत छोड़े तें किस्मत जात है जायगो काल कलंक न जै है॥

कवित्त

दल बिनु भूपति दिनेस बिनु पंकज फनेस बिनु मनि औ निसेस बिनु यामिनी।
दीप बिनु नेह औ सुगेह बिनु सम्पति अदेह बिनु देह घन मेह बिनु दामिनी।
कविता सुछन्द बिनु मीनजल वृन्द बिनु मालती मलिन्द बिनु होत छवि छामिनी।
दास भगवंत बिनु संत अति व्याकुल वसंत बिनु कोकिल सुकन्त बिनु कामिनी।

दोहा—खेती पाती बीनती परमेश्वर का जाप।
पर हाथां ना कीजिये अड़र कीजिये आप॥

चौपाई—जो तब वचन वृथाही जावैं। क्यों उचार निज मान गमावैं॥
सम्पति में सब जोरै हाथा। विपत परे पर मारै लाता॥

दोहा—बुध जन निज पद सेवहीं सुवत सुचालन साथ।
खेल कलोल ठठोलता ताहि न पलक सुहात॥
भूप गुनी ना गिनत है गुनी गिनत ना भूप।
जैसे महिमा गिरि चढ़े ऊंच नीच सम रूप॥

सवैया—काहुय सोच रहै ऋण को अरु काहुय अन्न विना दुख होई।
कोउ सदा तन को दुखिया अरु काहुय है रिपुकी भय सोई।
पुत्र विना निसिवासर सोचत कोटन को धन होवहि जोई।
सोच लगो तन को मन को अवही जग में सुखिया नहिं कोई॥

जो जड़ चेतन जीव जहान चराचर एक समान बिचारै ।
ईश्वर है सब के तन में अस ज्ञान बिचार न काहुय मारै ।
बैन सदा सब से मृदु बोल हि जीव दया कबहू नहिं टारै ।
ते सुखिया सपने न दुखी अब या भगवान सुदास पुकारै ।

जे तन के हित जीव बधे अरु सो तन एक दिना जर जै है ।
जो तुम देखत हो घर सम्पति सो यहि ठौर धरी सब रै है ।
रे मन जीव दया नहिं छांड़हु जीव दया बिन जन्म नसै है ।
मार परै जम की सिर ऊपर कोउ तुम्हें फिर हाथ न दै है ॥

ऊंच नहीं जिनको कुल उत्तम ऊंच नहिं जिन राज करे हैं ।
ऊंच नहीं जिनके घर सम्पति ऊंच नहीं गुणवन्त भए हैं ॥
सो जिनको तुम ऊंच बिचारत एक दिना सब नीच भए हैं ।
ऊंच कवाहंहि ते जग में करनी कर जे भव पार लगे हैं ॥

नीच न जो शुभ कर्म्म करै अरु नीच नहिं कुल हीन भए से ।
नीच नहिं बिन मञ्जन से अरु नीच नहीं बिन वेद पढ़े से ।
नीच कहाये कुकर्म्म करै अति नीच कहावहि जीव बधे से ।
कोउ न ऊंच कहो मुख से सब नीच भए भव सिन्धु परे से ॥

देखत ही युग बीत गए अरु देखत बालक वृद्ध भए हैं ।
देखत लोग कुटुम्ब मरे अरु देखत संग सखा बिछुरे हैं ।
देखत ही मुख दंत भए अरु देखत ही मुख दंत गिरे हैं ।
सोच नहीं सिर काल चढ़ो जग लोकन को पछिताय रहे हैं ॥

दोहा-सदा भजन गुरु साधु द्विज जीव दया सम जान ।
सुखद सुनै रत सत्य ब्रत स्वर्ग सप्त सोपान ॥
मंत्र तंत्र तंत्री त्रिया पुरुष अश्व धन पाठ ।
भति गुण योग बियोग तें तुरत जाय ये आठ ॥
तुलसी रसना लो भली जो तू सुमिरै राम ।
नातर काढ़ि निकासिये मुख में भलो न चाम ।
सुख के माथे सिल पड़ो हरि हिरदै से जाय ।
बलिहारी हा दुख की पल पल राम स्मराय ॥

मिहनत करे मानवी मिहनत पावै मान ।
बिन मिहनत रूठे नहीं धर्मी गुरु भगवान ॥
सदा दिहाड़ा दीन का सब ही वार सुवार ।
भद्रा जबही जानिये जब रूसे करतार ॥

सवैया

तरु जो फलहीन विहंग तजै सर सूखत सारस हू उड़िजावै ।
बिन गंध तजै मधु पावली फूल झरे बन हू मृग नांहि रहावै ।
गनिका बिन द्रव्य तजै जन को नृप श्रीबिन देखहु मंत्रि सिधावै ।
सब स्वारथ प्रीति करैं जग में बिन स्वारथ को कोउ मित कहावै ॥

दोहा—ज्यों कामी के चित्त में, चढ़ी रहत नित बाम ।
ऐसे हो कब लागि हो, तुलसी के मन राम ॥

लिखि लिखि लिखि सब जग लिख्यो, पढ़ि पढ़ि पढ़ि काकीन ।
चढ़ि चढ़ि चढ़ि घट घट गए, तुलसी राम न चीन ॥

माला तो कर में फिरै, फिरै जीभ मुख मांहि ।
मनवो तो चहुं दिस फिरै, ऐसो सुमिरण नांहि ॥
काया जोवन माल धन, अविचल रह्या न कोय ।
जो घड़ी पल आनन्द में, जीवन का फल सोय ॥
बनी बनाई बन रही, अब बनवे की नांहि ।
तुलसी इतना समझ के, मगन रहो मन मांहि ॥
जैसो हेत हराम में, तैसो हर से होय ।
चला जाय बैकुंठ में, पला न पकड़े कोय ॥
जितने तारे गगन में, इतने शत्रू होय ।
कृपा होय श्रीराम की, बाल न बांका होय ॥
मन मजूस गुन रतन पर, चुपक दीजिए ताल ।
ग्राहक मिले तब खोलिये, कूंची वचन रसाल ॥
राम नाम कहते रहो, जब लग घटमें प्रान ।
कबहू दीनदयाल के, भनक परैगी कान ॥
जैसी मीठी लगत है, ग्राम कथा की बात ।
एसी लागे हरि कथा, तरबो केती बात ॥

मैं दुरंगि दुनियां कहूं, पल में पलटी जाउं।
सुख में जो सोये रहें, उनको दुखी बनाउं॥
राम भजनको आलसी, भोजनको हुशियार।
तुलसी ऐसे जीव को, बार बार धिक्कार॥
हरि करुणा बिन जगत में, पूरी परै न आस।
मृग सरिता पय पान करि, गई कौन की पियास॥
वचन तजे नहिं सत्पुरुष, तजें प्रान और देस।
प्रान पुत्र दुहु परि हरे, वचन हेत अवधेस॥
पंडित सन्यासी प्रसिद्ध, जोगी जंगम जान।
शेख भगत अरु सेवड़ा, सब में खेंचा तान॥
काम क्रोध मद लोभ वश, वक्ता श्रोता वेद।
आंट छुटै ना अंतरै, मिटै न मनका खेद॥

नारी निन्दा।

दोहा—त्रिय अति प्रिय जे जानि नर, करत प्रीत अधिकाइ।
ते शठ अति मति मंद जग, वृथा धरी नर काइ॥
अस्थि मास अरु रुधिर तुक, कस मल नख सिख पूरि।
निर्घिन अशुचि मलीन तन, त्यागि आग ज्यूं दूरि॥
अहि विष तन काटे चढ़ै, यह चितवत चढ़ि जाय।
ज्ञान ध्यान पुनि मान हूं, लेत मूल युत खाय॥
जब लग मानवके रसिक, काम न उपजै देह।
कुशल तभीतक जानियो, धन मन मति जन गेह॥
कहा तिया नहिं करिसकै, कामवती जब होय।
रसिक! सास पति पुत्र सब, कर न सकै कछु कोय॥

आठ प्रकार का मैथुन

श्रवण सुमरण कीर्तन, चितवन बात इकंत।
दृढ़ संकल्प रु जतन पुनि मासी अष्ट कहंत॥
दोहा—पान झडन्ता देखि के हंसी जु कुंपलियांह।
मो बीती तो बीतसी धीरी बा पडियांह॥
लोहा लकडां चामडां पहिल्यां किस्या बखाण।
बहू बछेरा डीकरा नीमटियां परमाण॥

ऊजड़ खेड़ा फिर बसे निर्धनियां धन होय।
बीत्या दिन नहिं आवई मुआ न जीवे कोय॥
सीख शरीरा ऊपजे दिई न उपजे सीख।
अण मांग्या मोती मिले मांगी मिले न भीख॥

सवैया-निसिवासर वस्तु विचार सदा मुखसाच हिये करुणा धन है।
अगनी गृह संग्रह धर्म्म कथा न परिगृह साधुन को गन है।
कहे केशव भीतर ज्योति जगै अरु बाहर भोगन को तन है।
मन हाथ सदा जिनके तिनके बन ही घर है घर ही बन है॥
वेश तें नांहि महानता है न महानता लाखन ग्रन्थ पढ़ेतें।
ऊपर तें न महानता है न महानता कोटिक द्रव्य बढ़ेतें।
दान तें नांहि महानता है न महानता शूरता जुद्ध चढ़ेतें।
जो मग धर्म धनञ्जय को सु महानता ता मग बीच कढ़ेतें।
दीन दयालु सुने जबतें तबतें मन में कछु ऐसी बसी है।
तेरो कहाय के जाऊं कहां तुम्हरे हित की पट खैंच कसी है॥
तेरोहि आसरो एक मलूक नहिं प्रभु सों कोउ दूजो यसी है।
ए हो मुरार पुकार कहों अब मेरी हंसी नहीं तेरी हंसी है॥

दोहा—संपतिसों आपत भली जे दिन थोड़ा होय।
मित महेली बांधवा ठीक परे सब कोय॥

छप्पय—हूनर करो हजार स्याणप चतुराई सहित।
हेत कपट व्यवहार रहै न छानो राजिया॥
हीमत कीमत होय बिन हीमत कीमत नहीं।
करै न आदर कोय रद कागद ज्यूं राजिया॥

दोहा—हृदया भीतर आरसी मुख देखा नहिं जाय।
मुख तो तब ही देखिये दिलकी दुविधा जाय॥
बड़े लहत सुख संपदा बड़े सहत दुख द्वन्द।
उडगण बढ़त न घटत कहुं बढ़त घटत नित चंद॥
भय पहिलो भगवान को भय दूजो भुव पाल।
भय तीजो लौकीक को बरत्यां बिनु मत चाल॥
गेहत्याग कानन भगा कानन जन्तु सताय।

विधि के रूठे नरन को कोउ [illegible] ॥
रनका दाहा वन गया वन में लागी लाय ।
विधि जो पलटा हो प्रभु को कर सकै सहाय ॥
माया वा जगदीश की भेद न पावे कोय ।
भोगै कोऊ सम्पदा कोउ टुकड़े बिनरोय ॥

शेर—मददगार वह हुआ तो दिल अफगार कौन है।
दस्तगीर वह हुआ तो सितमगार कौन है ॥

दोहा—हरि लिखिया सो विधिलिख्या लिख लिख घाल्या अंक ।
राई घटै न तिल बढ़ै रहु रहु जीव निशंक ॥
साल गिरह के दिवस को सब कोइ गात बजात ।
यह नहिं जानत मूर्ख नर साल गिरह से जात ॥
सत्य शील शम दम दया ज्ञान सुकुलता दान ।
जग वल्लभता शूरता पावत दस पुनवान ॥
नानक ! नन्हे हो रहो जैसी नन्ही दूब ।
बड़ी घास जल जायगी दूब रहैगी खूब ॥
बड़े बचन पलटैं नहीं कहि निर्बाहैं धीर ।
कियो विभीषण लङ्कपति पाय विजय रघुवीर ॥
मरजाऊं मांगू नहीं निज स्वारथ के काज ।
परमारथ के कारणे मोहि न आवै लाज ॥

सोरठा—सुख में प्रीति सिवाय दुख में मुख टाला लिवै ।
कांई कहसी जाय राम कचहरी राजिया ॥

दोहा—दान दीन को दीजिये मिटै दरद की पीर ।
औषध ताको दीजिये जाके रोग शरीर ॥
अमृत भरे तन मन बचन निसि दिन पर उपकार ।
पर गुण मातन मेरुसम बिरले संत संसार ॥

सवैया—राज चहै छण में मन जो छण में मन देश विदेशहि जावै ।
नारि चहै क्षण में अपनी क्षण में पर नारिहि कंठ लगावै ।
कोट विलास करै क्षण में क्षण में पर द्रोह अनेक सुहावै ।

देह चले इक कोस नहिं क्षणमें मन कोस हजारन जावै ॥
जो मन ऊंचहि नीच करै अरु जो मन शीश जटा उतरावै ।
जो मन कोटि कुकर्म करै अरु जो मन मित्रहि शत्रु बनावै ।
जो मन त्रास अनेक सहै अरु जो मन द्वारहि द्वार फिरावै ।
ई मनकी परतीत नहीं क्षण में मन कोस हजारन जावै ॥
काल कमान लए करमें नहि बालक वृद्ध जवान विचारै ।
अंध सपंगु महीपत रंक न शूर महीश्वर संत उबारै ।
पूजन नेम करे न तजै नहिं छांड़हि जो बहुदीन पुकारै ।
जो जग में अवतार धरै जिहि आयु घटै तिहिको सर मारै ॥

दोहा—मित्र पुत्र धन कामिनी जैसे प्यारे तोय ।
तैसे प्यारे हरि लगै आन भक्ति न कोय ॥

कवित्त

पड़ा रहा नाम शर्मा वर्मा नहीं आया काम गुप्त और दासन की पदवी खरी रही ।
सरकारी खिताब ले जनाब मशहूर हुआ सी.ई.आई. रायबहादुरी धरी रही ।
एम.ए.रहे पास और बी.ए.भी उदास हुए रो रही विकालत बैरिस्टरी डरी रही ।
खड़ीरही आर्यसभा राजसभा विद्यासभा खेल गयो खेलीखेल खेत खोपड़ी पड़ी रही
होरहे डिफार्मर रिफार्मर का रूप धरे सोशिएल रिफार्म की मीटिंग करी रही ।
ग्यारह पति मुर्दा और बारहवें को हैज़ा हुआ तेरहवें को दस्तहुआ विधवा खड़ीरही
कोट पटलून बूट टांगे रहे खूंटीपर टेबल पै टोप रक्खा गले में घड़ी रही ।
स्वयम्वर शादी की मुराद रही मनही में खेलगयो खेली खेल खेत खोपड़ी पड़ी रही ॥

दोहा—मनुज विविध भेषज करत व्याधि न छांड़त साथ ।
खग मृग बसत अरोग्य बन हरि अनाथ के नाथ ॥
नहिं लखपति नहिं कोटि पति नहिं कुवेर को होय ।
संतोषी जो पाइ सुख रहै कोन में सोय ॥

सोरठा—धन करिके जो हीन, हीन न ताको कहत बुध ।
विद्या बुद्धि विहीन हीन सोई सब वस्तुमें ॥

दोहा—माया सूं माया मिलै कर कर लम्बे हत्त
तुलसीदास गरीबकी कोऊ न पूछै वत्त

तुलसी इस संसारमें कौन भये समरत्थ ।
इक कंचन और कुचन पै जिन न पसारे हत्थ ॥
तुलसी जे तरवार सूं पारस भेटै आय ।
छेदन भेदन वंकता जाति स्वभाव न जाय ॥
आयांरी आदर करै नैनन घणो सनेह ।
तुलसी तहां पधारिये पथरन बरसै मेह ॥
नहिं धन धन है परम धन तोषहि कहै प्रवीण ।
बिन संतोष कुबेर ऊ दारिद दीन मलीन ॥
नहिं विद्या नहिं शील गुण गह्या न साधु समीप ।
जनम गयो योंही वृथा ज्यों सूने घर दीप ॥
जल भीतर ज्यो मगर से गोते खोर डराय ।
तो पुनि महंगे मोल के मोती सकै न पाय ॥

चौपाई—लालच सुधबुध सकल भुलावत । खगमीनन यह जाल फंसावत ॥

दोहा—बने समय में मित्रकी रहत नहीं परवाह ।
जब बिगरै तब होत है फिर मित्रनकी चाह ॥
घर घर डोलत दीन ह्वै जन जन याचत जाइ ।
दियो लोभ चसमा चखनु लघु पुनि बड़ो लखाइ ॥
जगत जनायो जिहि सकल सो हरि जान्यो नाहिं ।
ज्यों आंखिन सब देखिये आंख न देखी जाहिं ॥

दोहा—जो रहै उत्तम प्रकृति का करि सकत कुसंग ।
चन्दन विष व्यापत नहीं लपटे रहत भुजंग ॥
ज्यों कदली के पात में पात पात में पात ।
त्यों चतुरन की बात में बात बात में बात ॥
विद्या निशि दिन गहहु तुम प्यारे चतुर सुजान ।
जासे सुख अरु संपदा जग में हो बहुमान ॥
कंकन तें सोहत न कर कुंडल तें नहिं कान ।
चंदन तें सोहत न तन गुण तें शोभित जान ॥

झूंठे का आदर नहीं नहीं झूंठ सम पाप।
साख जाय चिन्ता रहै झूंठ वचन को ढांप॥

सत्य

सत्य सदा जय करत है झूंठ पराजय होत।
सत्य बढ़ावै कान्ति अरु झूंठ नशावत जोत॥
जहां सत्य तहँ धर्म है जहाँ सत्य तहँ योग।
जहँ सत्य तहँ श्री रहत जहां सत्य तहँ भोग॥
वायु वहत है सत्य तें जलत सत्य तें आग।
सत्य हि तें धरती थमी सत्य होत बड़ भाग॥
सत्य भाव को गहहु तुम तजो झूंठ को भाव।
नहिं असत्य सम पाप जग पुण्य सत्य सों पाव॥

कलहारी अरु कर्कशा नित प्रति रक्खै रार।
जिस घर नारी कर्कशा उस घर दुःख अपार॥
सिंह गमन सत्पुरुष वचन केल फलैं इक बार।
त्रिया तेल हमीर हठ चढ़ै न दूजी बार॥
चिन्ता चिता समान है केवल अंतर येह।
चिता जरावत मृतक तन चिन्ता जीवित देह॥

सवैया—कायर बांह कुवादर छांह निर्धन मित्र कछु न कछु।
वाल को बोल वाहर ढोल सति को सिंगार कछु न कछु॥
होलिको भूप अरण्यको कूप चाण्डालिको रूप कछु न कछु।
कुवरो माणस सुमरो साहब दुवलो राज कछु न कछु॥
संग कुसंग पतंग कुरंग अतीत अनंग कछु न कछु।
सूम को माल धूल की दिवाल बिना जल ताल कछु न कछु॥
चैत को मेह निर्वल देह बिना तिय गेह कछु न कछु।
पातरि यार न चातुरी नार कुपातर प्यार कछु न कछु॥
जिनके हों लाड़ घनेरे। उन को हैं दुख बहुतेरे।
जो नृप पै अधिकार ले करै न पर उपकार॥
पुनि ताके अधिकार में रहै न आदि अकार॥

सवैया—आपनु काज संवारन के हित और को काज विगारत जाई।
आपनु कारज होउ न होऊ बुरो करि और को डारतभाई॥
आपहु खोवत औरहु खोवत खोइ दुनो घर देत वहाई।
सुन्दर देखतही बनि आवत दुष्ट करै नहिं कौन वराई॥

कवित्त

सुनिये कलप तरु पुहुप तिहारे हम राखिहो हमें तो शोभा रावरी बढ़ावैंगे।
तजि हो हरखि के तो बिलखि न शोचें कभू जहां तहां जैहैं तहां दूनो जस गावेंगे॥
सुरन चढ़ैंगे सूर नरन चढ़ैंगे सिर, कीमत तिहारी हाट हाट में विकावैंगे।
देश में रहैंगे परदेश में रहैंगे काहू भेष में रहैंगे तोहू रावरे कहावैंगे॥

कवित्त—खल सों वसाय महा छल सों वसाय महा दल सों वसाय औ वसाय वे भरम सों। सिरी सों वसाय गाज चिरी सों वसाय वड़े टिरी सों वसाय औ वसाय वे धरमसों। नीर सों वसाय औ समीर सों वसाय धीर पीर सों वसाय त्यों वसाय वे करम सों। चोर सों वसाय वट पार सों वसाय इन सर्व सों वसाय न वसाय वे शरमसों॥

दोहा—राम बचाये सो बचे वलकर बच्यो न कोय।
वल करके रावण वच्यो छिन में डारयो खोय॥
राम नाम के कारणे तनक निवाया सीस।
कहा विभिषण दे मिल्यो लंक दई बखशीस॥
मीठी मीठी वस्तु नहिं मीठी जाकी चाह।
अमली मिसरी छांड़िके आफू खात सराह॥
बुद्धिमान गंभीर को संगति लागै नांहि।
ज्यों चंदन ढिग अहि रहत बिष न होय तिहि मांहि॥
मुख श्रवण दृग नासिका सब हीके इक ठौर।
कहवो सुनवो देखवो चतुरन को कछु और॥
अपनी अपनी ठौर पै सब को लागत दाव।
जल में गाड़ी नाव पर थल गाड़ी पर नाव॥
वहुत द्रव्य संचय जहां चोर राज भय होय।
कांसे ऊपर बीजरी परत कहत सब कोय॥

जिस जननी के पुत्र ने निज कुल हित नहिं कीन ।
वृथा गर्भ नव मास धरि जननी को दुख दीन ॥
लीक लीक गाड़ी चलै लीकहि चलै कपूत ।
लीक छांड तीनों चलैं सायर सिंह सपूत ॥
क्षीण सुपुष्ट शरीर है शीत उष्ण तिहि लार ।
सुन्दर जन्म जरा लगे ए षट देह विकार ॥
रोग बिगारै राज को मोल बिगारै माल ।
लाड़ बिगारै पुत्र को चुगल बिगारै चाल ॥
चाकर को ठाकर करै स्वामी सज्जन रीझ ।
जैसे फैलत चहुं दिशा किंचित् बड़ को बीज ॥

शेर—हर चीज़ यहां की आनी जानी देखी ।
दुनिया ये गर्ज कि हमने फ़ानी देखी ।
जो आके न जावे वह बुढ़ापा देखा ।
जो जाके न आवे वह जवानी देखी ॥

दोहा—काम क्रोध लोभादि मद प्रबल मोह की धार ।
तिन में अति दारुण दुखद माया रूपी नार ॥
काम क्रोध मद लोभ की जब लग मन में खान ।
तुलसी पंडित मूरखो दोनों एक समान ॥
प्रेम बराबर योग नहीं प्रेम बराबर ध्यान ।
प्रेम भक्ति बिन साधबा सब ही थोथा ज्ञान ॥
जाको राखै सांइया मार न सकै कोय ।
बाल न बांका कर सकै जो जग वैरी होय ॥
गिरिये पर्वत शिखर तें पड़िये धरणि मंझार ।
दुष्ट संग नहिं कीजिये बूडैं काली धार ॥
जब गुण का गाहक मिलै तब गुण लाख बिकाय ।
जब गुण का गाहक नहीं तब कौड़ी बदले जाय ॥
जहां दया तहँ धर्म है जहां लोभ तहँ पाप ।
जहां क्रोध तहँ काल है जहां क्षमा तहँ आप ॥

कामी क्रोधी लालची इनसे भक्ति न होय ।
भक्ति करै कोइ शूरमा जात वरण कुल खोय ॥
छोटी मोटी कामिनी सबही विष की बेल ।
बैरी मारै दाव से ये मारे हँस खेल ॥
लेने को हरि नाम है देने को अन दान ।
तरने को आधीनता डूबन को अभिमान ॥
खाय पकाय लुटाय दे करले अपनो काम ।
चलती बिरियां रे नरा संग न चलै छदाम ॥
प्रीति पुरानी ना पड़ै जो उत्तम से लाग ।
कोड वर्ष जल में रहै पथरी तजै न आग ॥
प्रीति निभानी कठिन है प्रीति करो मत कोय ।
भंग भखन तो सहज है लहरें मुश्किल होय ॥
प्रीति जहां पड़दा नहीं पड़दा जहँ नहिं प्रीति ।
प्रीति करी पड़दा रख्या यह प्रीति नहीं विपरीत ॥
बस कुसंग चाहत कुशल तुलसी ये अफसोस ।
महिमा घटी समुद्र की रावन बसे परोस ॥

सवैया

मीन मरै जल के बिछुरे जल नेक दया नहिं मीन की आनै ।
चातक स्वाति की बूंद रटै अरु स्वाति न चातक ही पहिचानै ।
चन्द को चाह चकोर मरै पै चकोर की चाह न चन्द्रमा जानै ।
मूरख मित्र सों प्रीति लगैये तो प्रानहु जाय पै मित्र न मानै ॥
चन्द की चाह चकोर मरै अरु दीपक जोति जरै जो पतंगी ।
मोर मरै घन घोर के कारण मीन मरै बिछुरे जल संगी ।
चातक स्वाति की बूंद रटै अरु केतकी कारन भौंर सुअंगी ।
ये सब चाहैं इन्हैं नहिं कोऊ सो जानिये प्रीति की रीति एकंगी ॥
जो अमावस पावस लागि रहै तो चकोरन के रहै प्रान कहां ।
घन स्वाति के जो बरसै न कहुं तो पपीहन के तन त्रान कहां ।
बलदेव जो भोरहिं उगै न भानु तो चक्रन जीवन दान कहां ।
महबूब को खूब न देखैं कहीं तो गरीबन की गुजरान कहां ॥

हिन सांचो लगै जिहि को जिहि सों तिहि को ले तहँ पहुंचावत है।
वर हंस चुगै मुक्ताहल को अरु स्वातिहु चातक पावत है।
कहि ठाकुर यह निज भेद सुनो उरझावै सोइ सुरझावत है।
परमेश्वर की परतीत यही मिल्यो चाहिये ताहि मिलावत है॥

दोहा—कहा न होत सुसंग तें देखहु तिल अरु तेल।
मोल तोल सब फिर गयो पायो नाम फुलेल॥

शेर—खूब देखा तो खुशामद की बड़ी खेती है।
गैर क्या यह अपने ही घर बीच बड़ा सुख देती है॥
जो खुशामद करै खल्क उससे सदा राजी है॥
सच तो यह है कि खुशामद से खुदा राजी है।
जब तक थे गिरह में अहमकों के पैसे।
सब कहते थे उन को आप ऐसे ऐसे॥
मुफलिस हुए तो फिर किसी ने अए जोक।
पूछा भी न वह कौन थे ऐसे तैसे॥

ऐ दिल तू जाके न अपनी जुबां हिला, मांग उस से जिस से तू पेट भर के खा, गैर अज़ खुदा यह किस में है कुदरत जो हाथ उठाये, मकदूर क्या किसी का वहीं दे वहीं दिलावै॥

शाल उढ़ाया तो उसी शाल में खुश है।
पूरे हैं वे हि मर्द जो हर हाल में खुश हैं॥
रंडी फकीर करदे दम में शहे जमन को।
बदफन करै पलकमें इन्साने नेक फनको॥

सवैया—विप्र जो वेद पढ़ै तो कहा, जब जानि परै नहिं वेदकी वानी।
गायक गान कियो तो कहा उन राग कला सुर तान न आनी॥
जोगी विभूत चढ़ाई कहा जब जोग कला न हिये अनुमानी।
सागर प्रीति करी तो कहा जबलों जिय प्रीति की रीत न जानी॥

कवित्त।

एरे द्रुम मेरो सब सेवन बृथा ही गयो तुमको न दोष मेरे प्राप्त भे प्रचंड को।
तू तो तेरे तुखमकी तासीर हू न छोड़ै नेक जैसो बीज तैसो फल देवत अखंडको॥
नाहक गमायो नीर सींचके हमीर कहै एक आस तेरी में पुरानो भयो पिंड को।
आमकी उमेद जान सींच्योमें अभेद आन निकस्यो निसिद्ध फल अवल अरंडको॥

अहमद लड़का पढ़न में कहु किमि झोका खाय।
तन घट अरु विद्या रतन भरत हिलाय हिलाय ॥

शेर—नशा दौलतका बद अतवार जिसे आन चढ़ा।
सिर पर शैतान के इक और भी शैतान चढ़ा ॥
न हंसो देख कर तदवीर को पलटे खाते।
देर लगती नहीं तकदीर को पलटे खाते ॥
इतना न अपने आपसे बाहर निकल के चल।
दुनियां है चल चलावका रस्ता संभलके चल ॥
लाई हयात आई कजा ले चली चले।
अपनी खुशी न आये न अपनी खुशी चले ॥
क्या २ दुनियां से साहब माल गए।
दौलत न गई साथ न इत्तफाल गए ॥

दोहा—दुःख सुख निसि दिन संग है मेट न सकै कोय।
जैसे छाया देह की न्यारी नेक न होय ॥
सत मत छोड़ै बावरे सत छोड़े पत जाय।
सत की बांधी लक्ष्मी बहुरि मिलैगी आय ॥
समा करै नर क्या करै समै २ की बात।
किसी समय के दिन बड़े किसी समय की रात ॥
स्वारथ के सबही बिन स्वारथ कोउ नांहि।
सेवें पंछी सरस तरु निरस भये उड़ जांहि ॥
जैसो बंधन प्रेम को तैसो बंधन और।
काठहि भेदै कमल को छेद न निकरै भौंर ॥

कुण्डलिया—मूरख सोई मानिये जाके अति अभिमान।
आपुन को जानै बड़ो और तुच्छ परवान ॥
औरन तुच्छ परवान करै निन्दा अरु हाँसी।
अस्तुति आप सोहाय लगै पर अस्तुति गांसी ॥
कहै अनन्य परवान नहीं जानै सत्पूरुख।
कहा पढ़ो अनपढ़ो बढ़ो अभिमान सो मूरख ॥

कवित्त—दानको प्रमाण जैसे बनज व्योपार नफा को यज्ञ प्रमाण जैसे खेती को जमायबो। तपको प्रमाण ज्यों हटीला हरबोला दानभिक्षुक समान

वहु तीरथ को धायवो । भक्ति को ममाण ज्यों मिहनत अरु सेवा योगी की युगत ज्यों रसायन वनायबो । अक्षर अनन्य अन्य आसन मसकत है ज्ञान योग भक्ति जैसे पारस को पायवो ॥

दोहा—मन काहु के वस नहीं सुर नर यक्ष मुनीश ।
मन को है मन गति कहा कहो कृपा कर ईश ॥

सवैया बादर सें न छुपै ज्युं विभाकर छोनि छुपै न तरुवर छाये ।
अंजन अंजित नैन छुपै नहिं मेन छुपै नहिं मौन रहाये ॥
निन्दकसें न छुपै परकीरति सांच छुपै नहिं झूंठ वताये ।
धूमहि से ज्युहि आग छुपै नहिं भाग्य छुपै न भभूत लगाये ॥

सोरठा—सोनो घड़ै सुनार कन्दोई खाजा करै ।
भोगै भोगण हार कर्म ममाणै किसनिया ॥
हाती हींडत देख लख कूकर लव २ मरै ।
वड़पणतणों विवेक क्रोध न आणै किसनिया ॥
गह वरियो गजराज मद छकियो चालै मतै ।
कूकरिया विन काज रोय मुसै क्यूं राजिया ॥
खोदा अन जल खाय खल तिणरी खोटी करै ।
जड़ा मूल सूं जाय राख न रखै राजिया ॥

कवित्त

रूठो क्यों न राजा तासों कछू नाहि काजा एक तोय सें महाराजा फेर कौन पास जाइये
रूठो क्यों न भाई तासों कछुना वलाई एक तूही है सहाई फेर कौन को सराहिये
रूठो क्यों न मित्र जासों रह्यो न कछू अंत्र एक सांवरो निरन्त्र फेर कौन,को रिझाइये
संसार है रूठा इकतूही है अनूठा तो सब चूमेंगे अंगूठा एक तू न रूठा चाहिये

दोहा—शीतल पातल मंदगति अल्प अहार अरोश ।
त्रिया ये ही सुलक्षणा तुरिया ये ही दोष ॥
चंचल चपल चिमकणी बहु भोजन बहु रोष ।
तुरिया ये ही सुलक्षणा अरु तिरिया ये ही दोष ॥

छप्पय—कवहुं भोंह को भंग कवहु लज्जायुत दरसत ।
कवहुक मुसकत शंक कबहु लीलारस बरसत ।

कबहुक मुख मृदुहास कबहु रस वचन उचारत ।
कबहुक चंचल चित्त चपल चहुं ओर निहारत ।
ये आभूषण त्रियन के सो अंग २ शोभा धरन ।
ये ही शस्त्र समान हैं सो युवजन मन मृग वध करन ।

दोहा—शशि कलंक बदल कुच कलंक मुख श्याम ।
नारी कलंक हँस खेलवो गुनी कलँक अभिमान ॥
दूध फाट घृत कहं गयो मन फट कहं गइ प्रीति ।
शाम दाम मन दूध की देखो याही रीति ॥
धन अरु गेंद के खेल को दोऊ एक स्वभाय ।
कर में आवत छिनक में छिनमें करतें जाय ॥
भले भलाई पै लहंहि लहहि निचाई नीच ।
सुधा सराहिय अमरता गरल सराहिय मीच ॥

चौ०—नीचा से ऊंचो कर लीजे, सत्य बात की आज्ञा दीजे ।
जो नहिं आवै अपणो वग्ग,तो कालो मूंडो रु लीला पग्ग ॥

दोहा—परस प्रतीत न ईश में ऐसिहु गति लखि सूध ।
मल पूरित तन बीच जो बिलगावत है दूध ॥
व्यसन मृत्यु दोउ सदृश हैं ता में व्यसन विशेश ।
व्यसनी भोगत दुख महा व्यसन हीन सुख शेश ॥
अघटितको सुघटित करै सुघटित को अटकाय ।
अट पट गति भगवंत की जो मन नाहिं समाय ॥
समय पाय नहिं हरिभज्यो कियो न कछु धन दान ।
विपति पड़े केहि काम की जो कछु रोदन ज्ञान ॥
जीभ न जाके वस रहै होत दुखी मति हीन ।
जिमि कटियां की मास लगि प्राण तजत है मीन ॥
विषय तुल्य सब जीव में मानुष में शुभ ज्ञान ।
नर व्है नहिं समझै सोई पशु बिन पुच्छ बखान ॥
जो नर आशा फांस से बंधे सहत दुख भार ।
ताको काटत है प्रबल विषय त्याग तलवार ॥

बरत दीप को भोग लखि जिमि गिरि जरैं पतंग ।
विषयी विनसत नारि में साधु करत नहिं संग ॥
चरणहु तें नहिं छूइये जो काठहु की नारि ।
गज पति बांधे जात हैं जाकी लखि अनुहारि ॥

छंद—या जग आयके साहवी पायके दीनन काहि दरोरि दरोरि ।
लायके भौन भर्‌यो वलभद्रजु द्रव्य अपार हरोरि हरोरि ।
खायो न खर्च्यो कपर्दिका एको रह्यो मुख मरोरि मरोरि ।
अंत समै न लगै कछु काम धरे धन धाम करोरि करोरि ॥

कवित्त

संगती स्वभाव ज्ञान गांव को विचार करु उद्यम सहाय सुन लेख उरु आनिये ।
लखि के कुलक्षण सुलक्षण सकल विधि नैनन में रूप देख वैन पुनि छानिये ।
मोल तोल माप विनु भारी है परिक्षा जाकी सरस कसोटी पर काजको प्रमानिये ।
कीमत अपार तेज बुद्धि के प्रताप तामें नरसे अमोल नग ऐसे पहिचानिये ।

दोहा—समय गयो फिर नहिं मिलत वहुत अशर्फिन मोल ।
अनगिन रत्न दुकूल गज रथ हय दिये अमोल ॥

सवैया—दांत न थे तव दूध दियो अव दांत दिये कहा अन्न न दै है ।
जो जल में थल में पंछि पशु कि सुधि लेत सो तेरी हू लै है ॥
काहे को सोच करै मन मूरख सोच करे कछु हाथ न ए है ।
जान को देत अजान को देत जहान को देत सो तोकूं हूं दै है ॥

दोहा—गणिका गणिक समान है निज पंचाङ्ग दिखाय ।
जन मन मोहन धन हरण विधि ने दिये वनाय ॥
सज्जन प्रीति वियोग तें कवहु न होत विनाश ।
चन्द्र ढक्यो घन से तदपि करत कुमोद प्रकाश ॥
धन दे जी को राखिये जी दे रखिये लाज ।
धन दे जी दे लाज दे एक प्रीति के काज ॥
रूप भयो यौवन भयो कुल हू में अनुकूल ।
विन विद्या के जानिये गंध हीन ज्यों फूल ॥
सुख चाहो विद्या पढ़ो विद्या है सुख हेतु ।
भव सागर के तरन को विद्या है दृढ़ सेतु ॥

मूरख का मुख विंब है निकसत बचन भुजंग।
ताकी औषधि मौन है विष नहिं व्यापत अंग॥

कवित्त—तोय लखि गच्छ छिप्यो मच्छर ज्यों मच्छ केतु कजं पै अलिपुंजजों मंज मुख मुच्छ है। प्रतिच्छन विलच्छन उच्छव उछाह छवि सुच्छ जस जोस जग लच्छ गुन गुच्छ है। लच्छ गुन लच्छि छगग यच्छप विलच्छ पदमों मेच्छ परतच्छ तो विपच्छ तृन तुच्छ है। कच्छ कुल पच्छ दुज रच्छ दान दच्छ महा लच्छ मन वच्छ कल्प वृच्छ हू न कूच्छ है॥

दोहा—पुरुष भाग्य धन संपदा स्त्री भाग्य स्वरूप।
घर की शोभा कामिनी नगरी शोभा भूप॥
कुल अरु रूप शरीर को विद्या शोभा देत।
बिन विद्या के जगत में नर है जीवित प्रेत॥
उत्तम कुल में जनम के है विद्या की हान।
वह नर इस संसार में दीखत पशू समान॥
तुलसी या जग आय के पांच रतन हैं सार।
संत मिलन अरु हरि भजन दया दीन उपकार॥
तुलसी पिछले पाप सों हरि चर्चा न सुहाय।
जैसे ज्वर के जोर में भोजन की रुचि जाय॥
तुलसी कहत पुकार के सुनो सकल दे कान।
हेम दान गज दान तें बढ़ो दान सन्मान॥

कवित्त

पानी बिन मोतीको जौहरी खरीदे नांहि पानी बिन सुघड़ सिरोही कौन कामकी।
पानी बिन सुरतां सब फीके लागैं पानी बिन दामिनी सुहावत नहिं श्याम की॥
पानी बिन घोड़ा को राजा अंगेजे नांहि पानी बिन क़दर नहीं हीरा के दामकी।
एरे मूरख या पानी को जतन राख पानी के गये तें जिन्दगानी कौन कामकी॥

दोहा—तुलसी कर पर कर करो करतल कर न करो।
जा दिन करतल कर करो तादिन मरन करो॥
रहिमन! वे नर मर चुके जे कहुं मांगन जांहि।
उनतें पहिले वे मुए जिन मुख निकसत नांहि॥

जो तू चाहै अधिक रस सीख ईख की लेइ।
जो तो कों अनरस करै ताहि अधिक सुख देइ॥
मन मोती अरु दूध को इन को यही स्वभाव।
फाटे पीछे ना मिलै कोटिन किये उपाव॥
पाग भाग वाणी प्रकृति सूरत चाल विवेक।
अक्षर मिलै न एकसा ढूंढ़ो शहर अनेक॥

परदेश के सुख दुःख

कवित्त

देशन की सैल धन हू की रेल पेल आवै चातुरी की गैलन में लगत कमैबे में। दारिद्की हानि धन मानी के मान गुण मानन सों जानि पहचानि होत ह्वैबे में। फिकिर न एक गुण गावत अनेक यों गुपालजू विशेष वस्तु आवति मुलैबे में। खैबे अरु दैबे यश लैबे को सवाद प्यारी एते सुख होत परदेशन कै जैबे में॥

ठौर २ वास मन रहत उदास चास वास को गुपाल पिय पर घर जायबो। आपनी खबर पहुंचायबो कठिन पुनि घर की खबर बड़े जतन सों पायबो॥ समझै न वाणी लगै देशन को पानी ठग चोर तनु हानी मिलै समय पै न खायबो। हाय विष लाय मरिजायबो सहज पर जाय के कठिन परदेश को कमायबो॥

कवित्त

सांच शूरताई शील साहस सहूर सुख शरम सहूय सरधा की सरसाति रही।
भनत गुपाल भाव भगति भलाई भर्म भायप भरोसो भोग भायप की पातिरही।
दान सनमान खान पान राग रंग ऐश काव्य चर्चा की चतुराई रीति भांतिरही।
मीत की मिताई शरणागत सुहाई आदि एती बातें अब कलिकाल मेंते जाती रही।

दोहा—बुरे लगत सिख के वचन हिये विचारो आप।
करुवी भेषज विन पिये मिटै न तन की ताप॥
संगति सुमति न पावहीं परे कुमति के धन्ध।
राखो मेल कपूर में हींग न होय सुगन्ध॥
दोष भरी न उचारियें यदपि यथारथ बात।
कहत अंध को आंधरो मान बुरो सतरात॥

धर्म

दोहा—तन धन धरती धाम सुत तात मात अरु मान ।
एक धर्म्म के सामने हैं सब तुच्छ समान ॥
धरम घट्यां धन घटै धन घटि मन घट जाय ।
मन घटियां महिमा घटै घटत घटत घटि जाय ॥

—o—

कवित

कंचन में यही दोष वासना न धरी,जामें कस्तूरी में यही दोष रंग हू न पाहियो ।
राम ही में यही दोष मृग को शिकार कीनो रावन में यही दोष सीता हर लहियो ॥
इन्द्र ही में यही दोष गोतम घर गमन कीनो अहल्या में यही दोष चंद्रमा बुलाहियो ।
कहत केशवदास बिना दोष काहू नहिं एकएक दोष प्रभु सब में लगाहियो ॥

दोहा—कहते सो करते नहीं मुंह के बड़े लबार ।
काला मुंह लेजांयगे साहिब के दर्बार ॥
मन को कह्यो न कीजिये मन जंह तंह लेजाय ।
मन को ऐसा मारिये टूक टूक होजाय ॥
मन गया तो जाने दे तू मत जाय शरीर ।
बिना चढ़ाये कामठी क्यों लागेगा तीर ॥
मिली न माया मरी न ममता मर मर गए शरीर ।
आशा तृष्णा ना मरी कह गए दास कबीर ।
तन रक्षा अरु भजन लगि भोजन करै सुजान ।
भोजन लगि जो तन लखैं वे नर बड़े अजान ।
जानत बहु नर यदपि नाथ त्रिभुवन के नायक ।
बिन मांगेहु सकल भक्त वांछित फल दायक ।
तदपि तो हि तज हाय मंद मति अधम पेट हित ।
सहि अनेक अपमान करत मानुष सेवा नित ॥

कवित्त

होय जो लजीलो ताहि मूरख बतावत हैं,धर्म धरै ताहि कहै दम्भ का वढ़ाव है ।
चलै जो पवित्रता सूं कपटी कहत तैसे,सूर को कहत या में दया को अभाव है ।

गिरधर दास साधुताई देखि कहै धूरत है उदर के हेत कियो भेख को बनाव है।
जे २ अहैं गुनी तिन्हैं औगुनी बखानै यह, जगत में पापिनको यह सहज सुभाव है॥

दोहा—नारी की झांई परत, अंधे होत भुजंग।
कबीर तिनकी कौन गति, नित नारीके संग॥
मूरखके समझावने, ज्ञान गांठि को जाय।
कोला हो नहिं ऊजला, सौ मन साबुन लाय॥
प्रेम छिपाया ना छिपै, जो घट परगट होय।
जो मुखपै बोलै नहीं, नयन देत हैं रोय॥
सुख पीछे दुख आत है, दुख पीछे सुख आत।
आवत जावत अनुक्रमें, ज्यों जग में दिन रात॥
सुख में करो हर्ष अति, दुखमें नहिं दिलगीर।
सुख दुख सबही झूंठ है, ज्यों मृगजल को नीर॥
मात तात अरु मित्र जन, करि हैं कहा सहाय।
दुख सुख दैवाधीन हैं, करिहो कहा उपाय॥
देह धरे का गुण यही, देय २ कछु देय।
ऐसी देह न पाइये, देय २ कछु देय॥

सवैया—जर जोरु ज़मीं यह ज़ोर की है जगमें कहनावत येहू सही।
यदि ज़ोर हु तो नहिं जाति ज़मीं पतिसाहनको तिय देते नहीं।
मथुरा अरु पट्टनसोमहुको अड़बावधि द्रव्य न जातो कहीं।
बिन जोरहि जोर घमंड करै कर जोरि कहूं कछु जोर नहीं॥

दोहा—चिन्ता रोग महान की, औषधि है कछु नांहि।
जो यातैं बचना चहै, ज्ञान लगाम दे ताहि॥
चिन्ता के जो बस रहै, डारै सर्वस खोय।
यातैं वाके पेच में, आन फंसो मत कोय॥
चिन्ता कारण जानिये, सकल दुःख को मूल।
वाको हिय में ठौर छिन, कबहु न दीजे भूल॥
चिन्ता चित को ही नहीं, भक्षक सकल शरीर।
प्रगट रूप नहिं लखि परै, घाव करै गंभीर॥

चिन्ताकी सुधि जा घड़ी, चमक जात हिय मांहि ।
अकुलानो मन होत है, पुनि काढ़ि करे जो खांहि ॥
तुलसी धीरज के धरें कुंजर मनभर खाय ।
टूक टूक के कारणें, स्वान सु घर घर जाय ॥

मद्य निन्दा

तन छीजै जोवन हटै, घटै सुजस धन धर्म ।
मद्यगति पशुगति एक सी, तामें हया न शर्म ।
सवैया—बकवाद हरामपनो तजि के हरि नाम घरी भर लैबो करो ।
घर स्वारथ जैसो परायो चहो परमारथ में नित बहबो करो ।
चिमनेश खुशी हंस बोलिवे में परपीठि बुरी मत कहबो करो ।
अपना निज सज्जन हो तिनको नित सीख नसीहत देबो करो ॥
दोहा—मद मतवारो बावरो, नहीं व्यथा कछु और ।
अब तो या गति होरही, फेर पितैगो ठौर ॥
बाट पड़ा धरती खिरैं, कूकर चाटै चाम ।
कहा व्यथा इब तन भई, छोड़ा घर बिश्राम ॥
सवैया—पूत कुपूत कुलच्छण नारि लराक परोस लजावन सारो ।
भाई अदेख हितू कच लंपट कपटी मीत अतीत धुतारो ।
साहब सूम किसान कठोर औ मालिक चोर दिवान नकारो ।
ब्रह्म भनै सुन साह अकब्बर बारहु बांधि समुद्र में डारो ॥
दोहा—नेम नहीं इस प्रेम के, नहीं जाति नहिं पांति ।
बे सुध व्है तहँ ही लगत, लोह कांनकी भांति ॥
कारज धीरे होत है, काहे होत अधीर ।
समय पाय तरवर फलैं, केतो सींचो नीर ॥
नैनां देत बताय सब, हियको हेत अहेत ।
जैसे निर्मल आरसी, भली बुरी कहि देत ॥
दुष्ट न छांड़ै दुष्टता, कैसे हूं सुख देत ।
धोये हूं सौ बेर के काजल हो नहिं सेत ॥
प्रीति प्रीति सब कोइ कहै, कठिन तासुकी रीति ।

आदि अन्त निबहै नहीं, बालू की सी भीति ॥
प्रेम सरोवर नीर है, यह मत कीज्यो ख्याल ।
परे रहैं प्यासे मरैं, उलटि यहां की चाल ॥
प्रेम सरोवर की लखी, उलटी गति जग मांहि ।
जे डूबे तेई तरे, तरे तरे ते नांहि ॥
प्रेम सकल श्रुतिसार है, प्रेम सकल स्मृतिमूल ।
प्रेम पुरान प्रमान है, कोउ न प्रेम के तूल ॥
जान्यो वेद पुरान में, सकल गुननकी खानि ।
जु पै प्रेम जान्यो नहीं, कहा कियो सब जानि ॥
परम चतुर पुनि रसिक वर, कैसो हू नर होय ।
बिना प्रेम रूखी लगै, बादि चतुरई सोय ॥
अरे वृथा क्यों पचिमरो, ज्ञान गरूर बढ़ाय ।
बिना प्रेम फीको सबै, लाखन करहु उपाय ॥
प्रेम पंथ अति कठिन है, सब कोउ जानत नाहिं ।
चढ़िबो मोम तुरंग पै, चलिबो पावक मांहि ॥
दोहा—दादू इस संसार में ये द्वै रत्न अमोल ।
इक सांई अरु संत जन इनका मोल न तोल ॥
जे मति पीछे ऊपजे सो मति पहिली होइ ।
कबहू न होवै जी दुखी दादू सुखिया सोइ ॥
जंह मन राखै जीवतां मरता तिस घर जाइ ।
दादू बासा प्राण का जहं पहिलो रह्या समाइ ॥
चाह घटी चिन्ता गई मनुवा बे परवाह ।
जिन को कछु न चाहिये वे शाहन्पति शाह ॥
मिटते सूं मत प्रीति करु रहते सूं कर नेह ।
झूठे को तजि दीजिये सांचे में करि गेह ॥
रांम विसार्यो आदि सूं लियो द्रव्य अरु नार ।
याही तें भरमत फिर्यौ तन धरि वारंवार ॥
पहिले पहिरे सब जगै दूजे भोगी मान ।
तीजे पहिरे चोरही चौथे योगी जान ॥

तामस अरु हिंसा करै वचन चलन विपरीत ।
आलस अरु निन्दा करै तामस गुण की रीत ॥
दम्भ कपट छल छिद्र बहु खोटे सब व्योहार ।
झूठे बचन एंठो रहै तामस के गुण धार ॥
मान बड़ाई नाम ना सिद्धि चहै भजि राम ।
भोजन नाना स्वाद के राजस गुण के काम ॥
खेल तमासे राजसी अरु सुगंध की वास ।
आपन को ऊंचो गने औरन की कर हास ॥
दया क्षमा आधीनता शीतल हिरदय धाम ।
सत्य बचन गुण सात्विकी भजन धर्म निस्काम ॥
दुखी न काहू को करै दुख सुख निकट न जाय ।
सम दृष्टी धीरज सदा गुण सात्विक को पाय ॥

चौपाई—ब्राह्मण सो जो ब्रह्म पिछानै । बाहर जाता भीतर आनै ॥
पाचों वश करि झूंठ न भाखै । दया जनेऊ हिरदै राखै ॥
आतम विद्या पढ़ै पढ़ावै । परमातम का ध्यान लगावै ॥
काम क्रोध मद लोभ न होई । चरण दास कहैं ब्राह्मण सोई ॥

सोरठा—हिकमत करो हजार गढ़ पतियां जाचो घणा ।
धीरज मिलसी धार कर्म प्रमाणे किसनिया ॥

दोहा—सुरत्रिय नर त्रिय नाग त्रिय कष्ट सहैं सब कोय ।
गर्भवन्ती हुलसी फिरै सुत तुलसी सा होय ॥

सवैया—निसि वासर प्रेमके पंथचलै हिय तें हरि नाम बिसारै नहीं ।
घटि वृद्धिय देखिके एको घरी धरका जिय में कछु धारै नहीं ॥
विधि को विसवास ओंकार कहै अपनो बल बुद्धि बिसारै नहीं ।
वहि मानस की बड़ी क़िम्मत है जो समै पर हिम्मत हारै नहीं ॥

दोहा—जग में ये सुख साज हैं विद्या धन सन्तान ।
अन्न वस्त्र गृह मित्र पुनि वनिता बुद्धि निधान ॥

क्षत्री लक्षण

दोहा—दान धीर रन धीर पुनि आस्तिकवर धर्म्मिष्ट ।

तेज सूरता जस सहित सो छत्रिन में सिंह ॥
रन कायर मिथ्या वचन मिथ्या हिंसक जोन ।
नीति पपटु छत्रीन में अधम जानिये तौन ॥

ब्राह्मण लक्षण

दोहा—सम दम त्याग विराग तप सीलवन्त श्रुतिवन्त ।
ज्ञान जुक्त से जुक्त जो द्विज द्विज कुल कंत ॥
दम्भ जुक्त पाखंड मय संध्या कर्म विहीन ।
विप्र अधम सो जानिये मारन आदि प्रवीन ॥

दीन वचन बदवक्त परेहु, मुखसों कबहु न कहिये ।
हो मजबूत दुर्नामें जो कुछ, आफत पड़े सो सहिये ॥
कौन किसीका दर्द निवारै, ईश शरण गह रहिये ।
और कछु चाहो सो बिगरो बुद्धि न बिगरी चहिये ॥

जीभ जोग भोग जीभ ले रोग बढ़ावै ।
जीभ कैद करदेत जीभ गजराज चढ़ावै ॥
जीभ नर्क लेजाय जीभ बैकुण्ठ पठावै ।
जीभ तराजू बाट है गुन अवगुन तोलिये ॥
बेताल कहत विक्रम सुनहु, जीभ संभारहि बोलिये ।

शशि बिन सूनी रैन ज्ञान बिन हिरदै सूनो ।
कुल सूनो बिन पुत्र पात बिन तरवर सूनो ॥
गज सूनो बिन दंत [हंस]नीर बिन सरवर सूनो ।
घटा जो सूनी बिन दामिनी, बेताल कहत-
विक्रम सुनहु पति सूनो बिन कामिनी ॥

दोहा— कबहूं प्रीति न जोरिये जोरि तोरिये नांहि ।
जो तोरै जोरै बहुरि गांठ परै गुन मांहि ॥

छप्पय—जिहि मुच्छन धरि हाथ कछू जग सुजस न लीनो ।
जिहि मुच्छन धरि हाथ कछू परकाज न कीनो ॥
जिहि मुच्छन धरि हाथ कछू पर पीर न जानी ।
जिहि मुच्छन धरि हाथ दीन लखि दया न आनी ॥
वह मुच्छ नाहिं है पुच्छ अज, कवि भरमी उर आनिये ।
नहिं वचन लाज नहिं दान रति, तिहि मुख मुच्छ न जानिये ॥

सवैया–जिन के मन में चुगली उचरी सु तो पाप को बीज बयो न बयो ।
जिन के मन में इक लोभ बस्यो तिन औगुन और लयो न लयो ॥
जिहि की अपकीरति छायरही जन सो यम लोक गयो न गयो ।
मधुसूदन में चित लीन भयो तिन तीरथ नीर पयो न पयो ॥

दोहा—दया हीन विन काज रिपु, तस्करता परि पुष्ट ।
सहि न सकत सुख और को, ये स्वभाव तैं दुष्ट ॥
कैसे हू छूटै नहीं, जामें परी कुबानि ।
काग न कोइल हो सकै, जो विधि सिखवै आनि ॥
सज्जन मन वस करन को, रचैं विधाता मौन ।
कूरन हू को आभरन, मौन महा सुख भौन ॥
गिरितैं गिरि परवो भलो, भलो पकरिवो नाग ।
अग्नि मांहि जरिवो भलो, बुरो सीलको त्याग ॥

कवित्त

गुन हू को नीर सोतो भरयो चिहुं तीरन में, धीरज गहीर मध्य ध्यान की उझार बार । संकलप विकलप के उठत तरंग जहां मन अभिमानिन के डूबे हे गिरि अपार ॥ मक्र मक्रध्वज सुरत जहाज रोके, बाड़वा विरह भेद चिन्ता भ्रामरी विचार । सूर नर नाग जहां तरिर हारे मुनि, प्रेम पारावार हू को किनहू न पायो पार ॥

सवैया

भेद कुरान पुरान न भाषित, वेद कितेब बदंत वृथा ।
प्रौढ़ लहै सुग्रहे मनके मन , मूढ़ अबूझत गूढ़ कथा ॥
जानत हार प्रमानन जानत जानत जाय बितीत जथा ।
मंत्र न जंत्र न तंत्र न मंडित सागर प्रेमकी न्यारी कथा ॥
नेहा सब कोई करै कहा करे में जात ।
करबो और निबाहिवो बड़ी कठिन यह बात ॥

सोरठा–विद्या अरु बर नार संपत गेह शरीर सुख ।
मांग्या मिलै न च्यार पुराय पुरबले पाइये ॥

दोहा–मोती फाट्यो बेधतां मन फाट्यो इक बोल ।
मोती फेर मंगायलो मन नहिं आवै मोल ॥

दोहा—श्रम हीं सों सब मिलत है बिन श्रम मिलै न काहि ।
सीधी अंगुरी घी जम्यो क्यों हू निकसे नांहि ॥
उद्यम घर लक्ष्मी बसे ज्यों पंखे में पौन ।
चलै फिरै तो कुछ मिलै बैठे दाता कौन ॥
श्रम कीने धन होत है धन ही सुख को मूल ।
व्यवसाई अरु चतुर नर उद्यम को मत भूल ॥
आलस बैरी बसत तन सब सुख को हर लेत ।
त्यों ही उद्यम बंधु सों किये सकल सुख देत ॥
विद्या धन उद्यम बिना कहो जु पावै कौन ।
बिना डुलाये ना मिलै ज्यों पंखा की पौन ॥
प्रश्न—चलो कबीरा उद्यम करैं उद्यम बिन दे कौन ।
उद्यम के शिर लक्ष्मी पंखे के सिर पौन ॥
उत्तर—देने वाला ईश है और देवैगा कौन ।
धर्‌या रहैगा बीजणा आय चलैगी पौन ॥

दोहा— उद्यम कीजे जगत में मिलै भाग्य अनुसार ।
मोती मिलै कि शंख कर सागर गोता मार ॥
बिन उद्यम नहिं पाइये कर्म लिखेहू जौन ।
बिन जल पान न जाय है प्यास गंग तट कौन ॥
मन न हटकि भटकि मत मूरख घणों भटकियां होवे न घणो ।
सत कर राख भरोसो सांचो तीन लोकरे नाथ तणो ॥
धीरज राखि मतै करि धोको सो धो करि गर्ज न सरै ।
लख चौरासी जात ज़ियां लग करुणा कर प्रतिपाल करै ॥
काला जीव मतै कर का लैप क्यों कलाप कीजे वे काम ।
देणा हार आपही देसी राजी होसी जिकण रे दिन राम ॥
मोटो ईश जगतरो मोदी गोदी लियां मनशारी गून ।
परभा निशि दिन भज परमेश्वर चांच दई सों देसी चून ॥
साईं तोसों वीनती ये दो भेला रक्ख ।
जीव रखै तो लाज रख लज बिन जीव न रक्ख ॥

करना हो सो करलेओ कालां केसां काम ।
धोला धीरज दे रहो मुखां विचारो राम ॥

सवैया—अंग उमंग तरंग न भो अरु, रंग न भो पर जंकन को ।
बैनन को रस रैन न भो अरु, चैन न भो कर कंकन को ॥
जावक नागन दागन भो, जु सुहागन भो हरि लंकनको ।
मित्र मबीन मिलाप न भो, तब बंक सबै विधि अंकनको ॥
सूर विना चक बाग विना पिक बार विना इकहैं झख जैसें ।
हंस विना सर पंख विना पर पत्र विना तरु राजत तैसें ॥
मोर विना घन भोंर बिना बन बुंद विना तन चातक तैसें ।
प्रेम विना मित बाम विना पत सागर जीवत हैं मृत जैसें ॥

सज्जन प्रशंसा ।

दोहा—सज्जन एहां चाहिये जेहा तरवर ताल ।
फल मच्छत पानी पियत नाहिं न करत जमाल ॥
तरवर सर वर संत जन चौथे वरसे मेह ।
परमारथ के कारणे चारों धारैं देह ॥
तरबर कभी न फल भखैं नदी न पीवै नीर ।
परमारथ के कारणै साधू धरत सरीर ॥

कुंडलिया—पानी पय सों मिलत ही जान्यो अपनो मित्त ।
आप भयो फीको वहै जल को कियो सुचित्त ॥
जल को कियो सुचित्त तप्त पय को जब पानी ।
तब अपने तन वारि २ मन मीतहि पानी ॥
उफन चल्यो मधि अग्नि शान्ति जल छिरकत पानी ।
सत्पुरुषन की प्रीति रीति ज्यों पय अरु पानी ॥

दोहा—काछ दृढ़ा कर वरसणा मन चंगा मुख मिष्ठ ।
रण सूरा जग वल्लभा सो हम विरला दिष्ठ ॥

शेर—धीर पुरुषों का यही है नियम धीरज धारना ।
धर्म अपने मन में रखना और न हिम्मत हारना ॥
सब्र करना और दशा बिगड़ी को सुधारना ।
सत्य मारग से कभी मनको न अपने टारना ॥

दोहा—बिना कहे ही सतपुरुष परकी पूरैं आस।
कौन कहत है सूर को घर घर करत प्रकास ॥
ससि कुमुदनि प्रफुलित करत कमल विकासत भान।
बिन मागें जल देत घन त्यौंहीं संत सुजान ॥
आवत अति हित आदरत, बोलत बचन बिनीत।
जिय पर उपकारहिं चहत, सज्जन की यह रीति ॥

कवित्त मनहर

पेंटको निपट शुद्ध आंखन लजीलो वीर उरको गंभीर होय मीठो महा मुखको।
बांह को पगार पुनि पायको अडिग्ग होय, बोलन को सांचो देवीदास सूधी रुखको ॥
मनको उदार ढीलो हाथको अकेलो एक, काळहीको काठोहै सहैया सुख दुखको।
पचिकै पितामह ने ऐसो ज्यो संवारचो तब, यातें कछु औरहू शृंगार है पुरुख को ॥

घनाक्षरी

काम नहीं क्रोध नहीं लोभ अहंकार नहीं, माया नहीं मोह नहीं मिथ्या नहीं वादहै।
आशा नहीं तृष्णा नहीं वासना न भोग नहीं, निन्दा नहीं झूठनहीं इन्द्रीको न स्वादहै॥
कपटऔ कठोर नहीं ईर्षा न दम्भ कछू, हिंस मदमान नहीं पाप ना प्रमाद है।
साधु २ सबही हैं ऐसी हरिदास कहै, एते गुण जामें होत ताको नाम साध है॥
मारुत से न्यारे औ अकाश से असंग सदा, पावक से तेजवान चद्र से सुधारेजू।
धीर महा गिर से गंभीर हू समुद्र जैसे, हरिसे पवित्र और पृथ्वी से भारेजू ॥
शिष्यसे अमानी अरु ज्ञानी बड़े गुरु जैसे, प्रभुसे दयाल प्रेम भक्ति जैसे प्यारेजू।
ऐसे गुण जामें होन ताको नाम महा पुरुष, और हरिदास कहै पुरुष तो बिचारेजू ॥

दोहा—लोक हेत धारत धरा, निर्झर वृक्ष पहार।
चहिये सोइ विधि साधु को, करै सदा उपकार॥
जल जिमि निर्मल मधुर मृदु, करै ग्लानिको अंत।
पान किये देखें छुयें, देत हर्ष तिमि संत ॥

सोरठा—जिमि सागर गंभीर, हानिलाभ को सोच नहिं।
तिमि स्वभाव मुनि धीर, अति अगाह ईश्वर निरत॥

दोहा—अति कृपाल नहि द्रोह कहुं, सहज सीलता सार।
शम दम दान अकाम मति, मृदुल सर्व उपकार ॥
तन मति गति आनंद मय, गुणातीत निस्नेह।
विगत कलेस स्वच्छन्द मति, संता भूषण येह ॥

दया आदि दे धर्म सब, जप तप संयम दान।
जो प्रापति इन सबन की, सो सतसंग बखान॥
भगवंत रटत गत आन मत, प्रेम युक्त नित चित्त।
गुण गावत पुलकत हृदो, दिन२ सरस सुहित्त॥

द्रव्य प्रशंसा।

कवित्त

पैसे बिन बाप कहै पूत तो कपूत मेरो पैसे बिन भाई कहै बड़ो दुखदाईहै।
पैसे बिन काका कहै कौन को भतीजाहै तू पैसे बिन भैन कहै किसका तूभाईहै॥
पैसे बिन जोरू संग छोड़ चली जाय पैसे बिन सास कहै किसका जमाई है।
पैसे बिन पड़ोसी कहै बड़ा गंवार है तू आज के जमाने में पैसे की बड़ाई है॥
जामें दोअधेली चार पावली दुअन्नीआठ तामें पुनिआना सखीसोलतोसमान है।
बत्तीस अधन्नी जामें चौंसठ तो पैसा होत एकसौ अट्ठाइस अधेला गुनमान है॥
युगशत छप्पन छदाम तामें देखियत दमड़ी सु पांचशत बारह लखात है।
कठिन समय कलिकालको कुटिल दैया सलग रुपया भैया कापै दियोजातहै॥

कल्दार महिमा

(भज कल्दारं) २ कल्दारं भज मूढ़ मते।

बिन कल्दार खरनसे बदतर बात यही जानै नारी नर। लाख तरह के ऐबन हू पर सब कहते हैं इज्ज़तदारं॥१॥ भज कल्दारम्॥ बिन कल्दार रूप सब फीको खूब सुरत लागै नहिं नीको यार दोस्त मुख से नहिं बोलै नाक सिकोड़ै लख बेकारम् ॥२॥ भज०। बिन कल्दार झूंठ सब नाता क्रूर दृष्टिसे देखै भ्राता मेल मिलापी की क्या गिनती छोड़ जांय सब सुत पित दारं ॥३॥ भज०। बिन कल्दार जचै नर टुच्चा नेक मर्द भी दीखै लुच्चा संकट ही में घर बाहर के निर्धन की नहिं सुनत पुकारं ॥४॥ भज०। बिन कल्दार बोलना मीठा रूखा फीका लागै सीठा झुक २ दास कहै अपने को दूजे को बोले सरकारं ॥५॥ भज०। बिन कल्दार ज्ञान सब भद्दी चाहै जैसा होय मुसद्दी उसकी राय गिनै सब रद्दी चुप होकर बैठे लाचारं ॥६॥ भज०। बिन कल्दार सांच हू बोलै सब कोई कुछ छिद्र टटोलै ताके औगुन सब कोइ खोलै बुद्धिमान को कहत गंवारं ॥७॥ भज०। बिन कल्दार मर्द है नारी घुसड़ जाय सबही सरदारी नारी झिड़कै देदे गारी काढ़ै दिल के खूब बुखारं ॥८॥ भज०। बिन कल्दार आंख

सब फेरैं आधा नाम बोल कर टेरैं खिदमत के कामों में घेरैं खुर्द कलां का त्याग विचारं ॥९॥ भज० । विन कल्दार भ्रष्ट सो दीखै कहैं सभी झगड़ा मत झींकै चलती वार दुष्ट क्यों छींकै हम बैठे दफ्तर को त्यारम् ॥१०॥ भज० । विन कल्दार करैं सब हांसी सब्ज़ कदम है सत्यानाशी चाहै वस मथुरा अरु काशी बगुला भगत कहैं सब यारं ॥११॥ भज० । विन कल्दार मिटै नहिं घाटा नारि उठै लैर के भाटा कियो तेंने चोर चपाटा कटुक वचन सुन लेय हजारं ॥ ॥१२॥ भज० । विन कल्दार गमी है शादी दिन२ होवे वे मरजादी छोटे बड़े बनैं सब हादी लाचारी से लेय सहारं ॥१३॥ भज० । विन कल्दार न आदर होता सुख की नींद कभी नहिं सोता करता हूं किस्सा अब कोता निर्धन का जीवन धक्कारं ॥१४॥ भज० । विन कल्दार न हो व्यवहारा मतलब यही शब्द का सारा विन कल्दार ज्ञान आतम् से निर्भय होता है भव पारं ।१५॥ भज०।

प्रारब्ध, भावी ।

दोहा—सुनहु भरत भावी प्रबल, बिलखि कहैं रघुनाथ ।
हानि लाभ जीवन मरन, जस अपजस विधि हाथ ॥

कुण्डलिया—कौड़ी मिलै न भाग्य विन, हुन्नर करो हजार ।
को नर पावै साहबी, बिना लेख करतार ॥
बिना लेख करतार सात सागर फिरि आवै ।
भटक मरै वेकाज गांठकी लाज गुमावै ॥
कहै दीन दरवेश दसों दिस देखो दौड़ी ।
हुन्नर करो हजार भाग्य विन मिलै न कौड़ी ॥

दोहा—(दादू) होणा था सो व्है रह्या, जे कुछ किया पीव ।
ना पल वधै न छिन घटै, ऐसी जाणी जीव ॥
ज्यूं रचिया त्यूं होइगा, काहे को सिरि लेह ।
साहिब ऊपर राखिये, देखि तमासा येह ॥
दादू सहजै होइगा, जे कछु रचिया राम ।
काहे कों कलपै मरै, दुखी होत वेकाम ॥
सांई किया सो व्है रह्या, जे कुछ करै सो होय ॥
कर्ता करै सु होत है, काहे कलपै कोय ॥

(दादू) पूरण हारा पूरसी, जो चित रहसी ठाम ।
अंतर तें हरि उमँगसी, सकल निरंतर राम ॥
(दादू)चिन्ता किये तें कुछ नहीं,चिन्ता जीवहिं खाइ ।
होणा था सो व्है रह्या, जाणा है सो जाइ ॥
(दादू)जिन पहुंचाया प्राण को, उदर ऊर्ध मुख खीर ।
जठर अगनि में राखिया, कोमल काय सरीर ॥

कवित्त

बड़े २ बली भूप भू पै विख्यात भए, अरिकुल कांपे नैक भौंहके विकारसों ।
लांघे गिरि सागर दिवाकरके तेज तपे,सूर हू घायल किये जिन लाखन हुँकारसों ।
ऐसे अभिमानी मौत आएं न हारमानी, कबहू ना उतरे अभिमान के पहारसों ।
देवसों न हारे पुनि दानवसों न हारे जो, काहूसों न हारे वे हु हारे होनहारसों ॥

दोहा—अनहोनी होनी नहीं, होनी हो सो होय ।
लाख जतन अरु कोटि बुधि करिदेखो सब कोय ॥
कहा होय उद्यम किये, जो प्रभु ही प्रतिकूल ।
जैसे उपजे खेत को, करत सलभ निर्मूल ॥

लोभ

दोहा—लोभ महा रिपु देह में सब दुःखों की खान ।
पाप मूल अरु प्राण हर तजै ताहि मति मान ॥
यशी पुरुष के विपुल यश गुनियों के गुन नेह ।
तनक लोभ में नसत सब फूल परे जिमि देह ॥
देह धर्म कुल धर्म अरु तजैं तुरत पितु मात ।
लोभ विवश नर करत हैं मित्र विप्र गुरु घात ॥
क्रोध काम हंकारतें लोभ महा बलवान ।
जाके वश है तजतु हैं दुर्लभ प्रिय नर मान ॥
जैसी मन में विषय की होत वासना आय ।
तैसी उपजत कामना ता भोगन को धाय ॥
होत कामना तें प्रबल लोभ पाप को मूल ।
प्रगट होत फिर ताहि तें क्रोध प्रदायक शूल ॥

क्रोध करत फिर मोह को मोह चित्त भ्रम तास ।
चित्त भ्रमतें बुद्धि नसत बुद्धि नास तें नास ॥

छंद–कोऊ चहै धन धान्य निधाने, जो न मिलै तो महा दुख माने ।
कोऊ दुखी दंपति बिछुरे से , कोऊ दुखी बिन सन्तति ऐसे ॥
को दुखिया पाई अपमाना , कोउ दुखी तृष्णातुर जाना ।
कोऊ दुखी पर वैभव देखी , उन से न्यून पनो निज लेखी ॥
स्वजनमरणसेंकोऊ दुखियारा, कोऊ दुखी मिलि दुष्टहि दारा ।
कोऊ दुखी शिर वैरि विशेशा, कोऊ दुखी शिर कुपित नरेशा ॥
कोऊ दुखी दुख आवन शंका, बिन दुख दुखी गिनी ग्रह वंका ।
मन कल्पित अस दुःख अनेका, व्यर्थ दुखी जिन नांहि विवेका ।
गंभिरताई धरै जन ज्ञानी, कल्पित दुख न लहै दुख मानी ॥
तन अरोग्य अरु उद्यम पावै, तो दुख थल तजि दूरहि जावै ।

दोहा—दमयन्ती सीता सती द्रोपदी भै दुख पात्र ॥
तिनके दुख को तोल कर तव दुख कुन मात्र ।
सुख के दिन वहिजात हैं दुख के दिन वहिजात ॥
गये दिवस सो स्वप्न गत भासत हैं इहि भांत ।
ऐसो पापी पेट यह पेचदार गुण हीन ।
विन या भीतर कछु परे वनो रहत है दीन ॥
यद्यपि धन सोई मिलै ज्यो विधि लिखा लिलार ।
धन अर्चन आलस करन गनो न जोग विचार ॥
राम नाम की डगर पर चालत हैं कोउ वीर ।
पग २ पर वरछी लगै पैंड पैंड पै तीर ॥
तूतो याही कहत है मेरी माया माल मुलक ।
तेरे ही राखे रहै तो काया ही राख पलक ॥
जननी जणै न वारवार थिर रहै न काया ।
सत्पुरुषां का जीवणा थोड़ा फुरमाया ॥

दोहा—मन निश्चिल मन चंचला मन सुजान मन कूर ।
मन वैरी मन सज्जना मन कायर मन सूर ॥

दादू दीवा है भला दीवा करो सब कोय।
घर में धरया न पाइये जे कर दिया न होय॥
जो कोइ काहू जीव की करै आत्मा घात।
सांच कहूं संसा नहीं सो प्राणी दोजक जात॥
शेर—बे महर गुमराह गाफिल गोश्त खुरदनी।
बे दिल बदकार आलम हयात मुरदनी॥
चौपाई—अन्न पचावणा जग में चार। पन्था निद्रा मैथुन भार।
आंख्यां हर्डे दांतां लूण तीजी खाली राखै कूण।
तातै न्हावै छाया सोवै जीं कै वैद कूणा में रोवै॥
शेर—आशकारां शष निशानी ऐ पिसर।
आह सर्दो रंग ज़र्दो चश्मे तर॥
गर तरा पुरशद से दीगर कुदाम।
कम खुरो कम गुफ्तनो खुफ्तन हराम॥
जुदा किसी से किसी का गर्जे हवीब न हो।
ये वह दाग है कि दुश्मन को भी नसीब न हो॥
कुण्डलिया—वेश्या बनिया एक है अन्तर कछुहु न जान।
ये दोनों ललरात हैं धन हारे तें आन।
धन हारे तें आन बहुत नीके अभिलाखें।
निर्धन से प्रीति पलक एको नहिं राखें॥
कहै गिरधर कविराय अरे पंचो सुनियो।
ये मतलब के यार दोऊ वेश्या औ बनियो॥

कवित्त

कंटक गुलाब क्यों मगरूरी करै अपने मन, हमें कुंज केतकी सुहागन के बहुत डेरे हैं। आदर से एक दिन आकहू पै अनन्द करैं, आदर बिन कल्प बृच्छ के न जात नेरे हैं। मुरली मलिन्दन के कुल की मर्याद यही, लपट हीन पुष्पन पर फिरत न फेरे हैं। तोसी तुच्छ बारी की न कुछ परवा हमें भव बीच भंवरन को बाग बहुतेरे हैं।

सवैया—बंधु बिरोध करें सगरे झगरे नित होत सुधारस चाटत।
मित्र करैं करनी रिपुकी धरनी धर होय न न्याय निपाटत॥

राम कहँ हित होत सुधा घर नारि सती पति सों चित फाटत ।
वा विधिना प्रतिकूल भये तब ऊंट चढ़े पर कुक्कुर काटत ॥

दोहा—अनहोनी प्रभु कर सकें, होनहार मिट जाय ।
अति विचित्र भगवंत गति, कही सो कासों जाय ॥
काहेको कलपत फिरें, दुखी होत बेकाम ।
सहजां सहजां होयसी, जो कुछ लिखी कलाम॥
बुद्धि विलक्षणा दे नहीं, वैभव अरु बड़ भाग ।
जो जगदीश सहाय नहिं, कहा करें बुधि राग ॥

सवैया—सीत हरी दिन एक निसाचर लंक लई दिन ऐसोहि आयो ।
एक दिना दमयन्ति तजी नल एक दिना फिर ही सुख पायो ॥
एक दिना वन पाण्डव गे अरु एक दिना छिति छत्र धरायो ।
सोच प्रवीन कछू न करो करतार यहै विधि खेल बनायो ॥
राम गये बनवास इतै पर भाग गती से सती संग लागें ।
संकट भाग भयो नलराय इतै पर भ्रांति दमंतिय लागें ॥
पाण्डव भाग बेहाल कियो जु इतै पर कौरनकी गति जागें ।
मित्र प्रवीन जु देश विदेशउ भाग चलै दुहू डग आगें ॥

दोहा—मित्र नहीं जो सुख समय बहु बढ़ नेह जताय ।
विपत काल में कर गहै सोही मित्र कहाय ॥
नर निहचौ रख विपत में होउ न निपट निरास ।
धीरज तरु करवो तऊ फल है मधुर सुबास ॥
जग में इक अधिकार युत इक श्रम थकित निरास ।
दिवस पाय वा दुहुन की खाक दबैगी लास ॥

चौपाई—सुख लहिजे दरिद्र होइ जांहीं । ते जीवत मृत सरिस लखाहीं ।

दोहा—बंधे को बंधा मिला छूटै कौन उपाय ।
सेवा कर निर्बन्ध की पल में देय छुड़ाय ॥

प्रश्न—कौन सरवर बिन पाज है कौन सूत बिन जाल ।
कौन सदा प्यासो रहै कौन मौत बिन काल ॥

उत्तर—मन सरवर बिन पाज है नेह सूत बिन जाल ।
तृष्णा सदा प्यासी रहै नींद मौत बिन काल ॥

कामदार कामी कृपण कन्या मांगन लोय ।
पे पर पीर न पेखई, होनी हो सो होय ॥
सोरठा–गिरितें गिरिये जाय मान सरोवर डूबिये ।
मरजइये विष खाय मूरख मित्र न कीजिये ॥

मेरो तनु ज्यों धूरि ह्वै उड़ि जैहै चहुं ओर ।
त्यों प्रचार सब जगत् में लहै ग्रन्थ यह मोर ॥
ईश्वर में मन जोरिये जग में तें उचटाय ।
यही अर्थ सब ग्रन्थ को इन समझो चित लाय ॥